मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 61 | अंक : 09 | मार्च, 2021 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

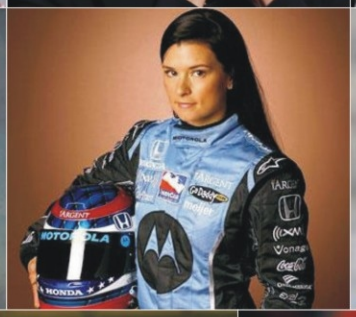
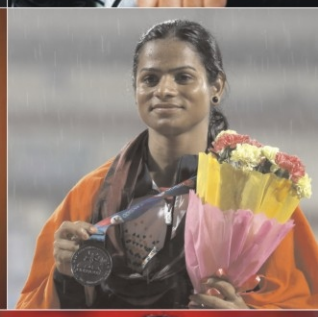

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

अनुशासन एवं जवाबदेही

अनुशासन एक बहुत ही मूल्यवान शब्द है। अनुशासन में रहो.. अनुशासन में रहें...जैसे शब्द हम सुनते/कहते हैं। अनुशासन में जब आत्म शब्द को जोड़ देते हैं तो वह आत्मानुशासन बन जाता है यानि एक ऐसा अनुशासन जो हमारे भीतर से निकलता है। हमारे अपने हृदय का संदेश जब व्यवहार में ढल जाता है तो वह आत्मानुशासन अथवा स्व-अनुशासन कहलाता है।

प्रशासनिक व्यवस्था में एक और शब्द है जो हर समय मेरे मानस पटल पर छाया रहता है। वह मूल्यवान शब्द है-जवाबदेही। भारत की सत्य सनातन परम्परा के अनुसार हम ईश्वर की सन्तान हैं। उसके प्रतिनिधि हैं। अतः उसके प्रति जवाबदेह हैं। यह मान्यता हमें बुराई से बचते हुए अच्छा कार्य करने की प्रेरणा देती है। इसी बात को अपने रोजगार के संदर्भ में समझने का प्रयास करते हैं। रोजगार (निजी एवं सरकारी) व्यवस्था में प्रत्येक कार्मिक के लिए निर्धारित जोब चार्ट एवं टारगेट होता है, जिन्हें ध्यान में रखकर उसे अपने कर्त्तव्य का पालन करना होता है। उसके कार्य एवं व्यवहार की निगरानी सम्बन्धित रोजगार व्यवस्था में निहित निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण अधिकारियों के द्वारा की जाती है। यहाँ अनुशासन एवं जवाबदेही दोनों शब्दों एवं उनके पीछे निहित अवधारणा को जानना बहुत जरूरी है।

जब हम कोई भी काम करते हैं, तो उसे ठीक से करने यानि निष्ठावान, कर्त्तव्यपरायण, संवेदनशील होकर अपनी सम्पूर्ण क्षमता व योग्यता के साथ ईमानदारी पूर्वक करने की प्रेरणा हमें हमारा मन देता है। यह प्रकृति का नियम है। परमात्मा के द्वारा बनाए मन को सांसारिक प्रलोभनों एवं स्वार्थों के वशीभूत होकर हम खराब करते हैं। सहज सच्चे रूप में तो वह निर्मल और पवित्र होता है। यह स्थिति आत्म अनुशासन की अनुभूति कराने वाली होती है। ऐसे कार्मिक अथवा कार्यकर्ता किसी सीनियर निरीक्षक/ पर्यवेक्षक के आने की बात से कभी नहीं घबराते बल्कि इस इंतजार में रहते हैं कि कोई उनका काम देखने, उन्हें सम्भालने के लिए आए। यह है 'जवाबदेही' को समझने और उसके लिए सदैव तत्पर रहने की स्थिति। याद रखें, आत्म अनुशासन (अपने से अपना अनुशासन) के धरातल पर आदर्श जवाबदेही की उन्नत फसल तैयार होती है। अनुशासित व्यक्ति सदैव जागरूक एवं कर्त्तव्यपरायण रहकर अपनी जवाबदेही का फर्ज अदा करता है। मेरी शिक्षकों की योग्यता एवं कर्त्तव्यपालन भावना में कोई शंका नहीं है। मैं उनके प्रति बहुत उत्तम भाव मेरे हृदय में रखता हूँ। समय-समय पर उनसे संवाद होता रहता है। शिक्षकों से हुई बातचीत एवं प्राप्त फीडबैक के आधार पर मैं अनुरोध करना चाहूँगा कि-

i. शिक्षक अपनी सम्पूर्ण क्षमता एवं योग्यता के साथ शिक्षण एवं अन्य पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ विभागीय नियमानुसार सम्पन्न करें। इस जवाबदेही को पारदर्शी एवं अन्य के लिए अनुकरणीय बनाने के लिए समुचित पाठ योजना अपनी शिक्षक डायरी में विस्तार से तैयार करें।

ii. शिक्षक डायरी एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सरकारी दस्तावेज है। वह शिक्षकों के कार्यों की दर्पण है, उनकी रक्षा कवच है। शिक्षक के द्वारा सम्पन्न प्रत्येक गतिविधि का लेखा-जोखा इसमें विधिवत इन्द्राज होना चाहिए। इस महत्त्वपूर्ण अभिलेख का समुचित संधारण विद्यालय प्रशासन के द्वारा किया जाना अनिवार्य है। संस्थाप्रधान का यह दायित्व है कि वह समय पर डायरी शिक्षकों को उपलब्ध करवाए, पाठ योजना बनाने में उनका मार्गदर्शन करे, नियमित रूप से उसका निरीक्षण कर प्रमाणित करे तथा सत्र के अन्त में वापिस जमा करके समुचित रसीद दिलवाए।

iii. शिक्षा अधिकारी अधिक से अधिक विद्यालयों का सकारात्मक निरीक्षण करें। कार्यालय में अपने चेम्बर का मोह छोड़कर सर्दी-गर्मी/अनुकूलता-प्रतिकूलता की परवाह नहीं करते हुए विद्यालयों की परिक्रमा कर शिक्षकों, छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों से संवाद करने वाले अधिकारियों की महिमा निराली होती है। यह अनुशासन एवं जवाबदेही की बात है।

इस माह में महाशिवरात्रि और होली के पावन एवं आनंददायी त्योहार हैं। त्रिदेव में शिव की महिमा अद्भुत है। वे देवों के देव, महादेव हैं। होली प्रेम और भाईचारे का त्योहार है। इन दोनों महान पर्वों के लिए मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। मौजूदा सत्र की शुरूआत कोरोना महामारी के अप्रिय दिनों में हुई, लेकिन सत्र का अवसान अच्छे दिनों से हो रहा है। **'अन्त भला तो सब भला' 'बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय'** सिद्धांत को ग्रहण करना चाहिए। आगामी सत्र 2021-22 के शुभ एवं सुखमय होने की आशा एवं विश्वास के साथ।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"आत्म अनुशासन (अपने से अपना अनुशासन) के धरातल पर आदर्श जवाबदेही की उन्नत फसल तैयार होती है। अनुशासित व्यक्ति सदैव जागरूक एवं कर्त्तव्यपरायण रहकर अपनी जवाबदेही का फर्ज अदा करता है।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 61 | अंक : 9 | फाल्गुन-चैत्र, २०७७ | मार्च, 2021

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर-334 011

दूरभाष : 0151-2528875

E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- चुनौतियां और हम 5
  आलेख
- शैक्षिक विकास के संवाहक बनें 6
  अपर्णा अरोरा
- शिक्षा के उन्नयन हेतु संकल्प 8
  डॉ. रणवीर सिंह
- मूल्य परक शिक्षा 10
  भूपेन्द्र कुमार शर्मा
- ई-लर्निंग से ऑनलाइन पढ़ाई की राहें आसान 12
  करण सिंह
- सार्वजनिक जीवन और सदाचार 13
  कैलाश चन्द पुरोहित
- भारत की प्रथम महिला प्रक्षेपास्त्रांगना 15
  भूरमल सोनी
- लोकसेवक का एक महत्त्वपूर्ण अभिलेख 16
  मनीष कुमार गहलोत
- जल है तो कल है 18
  रामकिशन गोठवाल
- पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन में विद्यालयों की भूमिका 19
  राजकुमार तोलंबिया
- वर्तमान संदर्भ में सांख्यिकी का महत्त्व 20
  राजेश कुमार
- अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता का समय 22
  निरंजन द्विवेदी
- शिक्षा संस्कृति की संवाहिका 32
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- बाल साहित्य और बच्चों का पढ़ना-लिखना 34
  विजय प्रकाश जैन
- चुस्त-दुरुस्त रहने के लिए व्यायाम कीजिए 35
  जयन्ती लाल सोलंकी
- आत्मविश्वास ही सफलता की कुँजी 36
  स्नेहलता शर्मा
- वर्तमान विद्यालयी शिक्षा पद्धति : एक दृष्टि 37
  विनोद कुमार भार्गव
- सावधानी हटी-दुर्घटना घटी 38
  डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

कविता

- जीवन को वरदान समझ 17
  मधु उपाध्याय
- तुम हो... 33
  सुनीता पंचारिया

रपट

- राज्य स्तरीय बालिका पुरस्कार समारोह 23
  मोहन गुप्ता मितवा
- जीवन में शिक्षा का दान ही सबसे अनमोल 24
  रामेश्वर लाल चौधरी

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : मार्च, 2021 25-28
- शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम 29-30
- राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टर द्वारा वर्ष 2021 के घोषित अवकाश 31
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 39-42

- सुशासन की व्यथा
  लेखक : बद्रीलाल स्वर्णकार
  समीक्षक : **रमेश कुमार हर्ष**
- राजस्थानी साहित्य का समकाल
  लेखक : डॉ. नीरज दइया
  समीक्षक : **डॉ. सत्यनारायण सोनी**
- सरहिंद रो साको
  लेखक : मनोज कुमार स्वामी
  समीक्षक : **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**
- नाक का सवाल
  लेखक : बसंती पंवार
  समीक्षक : **पूर्णिमा मित्रा**

मुख्य आवरण :

नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

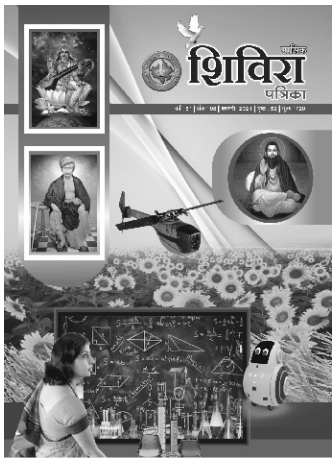

▼ चिन्तन

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला
भाग्यक्षये चाश्रयो।
धेनुः कामदुधा रतिश्च
विरहे नेत्रं तृतीयं च सा।।
सत्कारायतनं कुलस्य महिमा
रत्नैर्विना भूषणम्।
तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं
विद्याधिकारं कुरु।।

विद्या मनुष्य की अनुपम कीर्ति है, भाग्य का नाश होने पर वह आश्रय देती है, विद्या कामधेनु है, विरह में रति समान है, विद्या ही तीसरा नेत्र है, सत्कार का मंदिर है, कुल की महिमा है, बिना रत्न का आभूषण है; इस लिए अन्य सब विषयों को छोड़कर विद्या का अधिकारी बन!

पाठकों की बात

● माह फरवरी-2021 की शिविरा प्राप्त हुई। बड़ी उत्सुकता रहती है शिविरा की। मैं वर्षों से इसका पाठक हूँ। मिलते ही एक बैठक में सम्पूर्ण पढ़ता हूँ। फिर कुछ लिखता हूँ। मुख पृष्ठ पर माँ सरस्वती, संत रैदास जी, स्वामी दयानंद के चित्र सुसज्जित थे। 'अपनों से अपनी बात' आदरणीय श्री गोविन्द सिंह डोटासरा शिक्षामंत्री का उद्बोधन, आइंस्टीन के शब्दों में बीते कल से सीखो, वर्तमान में जियो और आने वाले कल से अच्छे की आशा करो। जीवन आस और विश्वास का दूसरा नाम है। सर्वतोभावेन सद्भावी और सदैव गतिमान रहकर आशावादी बने रहिए। नेशनल सर्वे में राजस्थान का तीसरा स्थान देखकर हमारा सिर गर्व से ऊँचा उठ जाता है। प्रयत्न यह करें कि हमारा स्थान सर्वोच्च रहे। निदेशक महोदय का उद्बोधन रात कितनी लम्बी और स्याह क्यों नहीं हो। पर उजाला पाने की चाह न केवल नई राह बनाती है बल्कि स्याह रात की भयावहता से भी मुक्त करती है एवं एक नई व प्रेरक दिशा देती है। माह फरवरी में जन्मे स्वामी दयानंद सरस्वती के दोनों आलेख, संत रविदास के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता, बसन्त पंचमी, माँ सरस्वती से सम्बद्ध दोनों आलेख, स्वास्थ्य पर दोनों आलेख पठनीय, संग्रहणीय, जीवनोपयोगी है। भारत के महान प्राचीन वैज्ञानिकों के जीवन प्रसंग प्रेरक हैं। कविता आओ नई शुरूआत करें सामयिक व मार्मिक है। चिंतन स्तंभ का श्लोक तो गजब का है। सज्जन बुद्धिमान व मूर्खों की दिनचर्या का बेबाक चित्रण कर रहा है। बाल शिविरा स्थायी रूप ले चुका है। यह शिविरा का प्रशंसनीय कदम है। सरोजनी नायडू का जीवन प्रसंग प्रेरणा का स्रोत है। पाठकों, लेखकों, शिक्षकों व छात्रों को प्रोत्साहित करने की भावना जाग्रत करने में शिविरा सतत् रूपेण संलग्न है। मैं तो सतत् रूप से इसका पठन करता हूँ। शिविरा मेरा संबल है। पाठ्य सामग्री चयन के लिए सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत हार्दिक बधाई व धन्यवाद।

-टेकचन्द शर्मा, झुंझुनूं

● विविधता को समेटे माह फरवरी का अंक प्राप्त हुआ तो बसंत के आगमन की आहट का अहसास हुआ। रंगीले आवरण से झाकते माँ सरस्वती के आशीर्वाद, विचारक, शिक्षा, तकनीक और प्रयोगशाला की छवियों ने एक नए दौर के पुनः प्रारम्भ होने के संकेत दिए। जिसका उल्लेख मंत्री महोदय ने भी अपने उद्बोधन में किया है। स्वामी दयानंद सरस्वती, संत रविदास, सरोजनी नायडू पर लेखकों के विचार प्रेरणादायी थे। चन्द्रभूषण शर्मा का भारत की अंतरिक्ष यात्रा पर लिखा गया आलेख ज्ञानवर्द्धक एवं संग्रहणीय है। भूपेन्द्र जैन का संख्याओं से वर्ग ज्ञात करने एवं बृजेश कुमार सिंह का आलेख ''भारत के महान वैज्ञानिक'' पाठकों एवं विशेष रूप से छात्रों के लिए उपयोगी बन पड़ा है। हर अंक की तरह ही आदेश-परिपत्र एवं अन्य स्थाई कॉलम जैसे पुस्तक समीक्षा शाला प्रांगण, चतुर्दिक समाचार आदि भी विशेष बन पड़े हैं। संपादक मण्डल का धन्यवाद।

-विकास चन्द्र भारू, झुंझुनूं

● माह फरवरी का अंक सुन्दर आवरण में 'प्रासंगिक' चित्रों के साथ समय पर प्राप्त हुआ। विज्ञान दिवस की प्रासंगिकता में कक्षा-कक्ष के बोर्ड पर सूत्र लेखन, बोर्ड व ड्रान के साथ बेकग्राऊण्ड में सूर्यमुखी के फूलों बसंत के आगमन का अहसास दिलाता है। इस अंक में माननीय मंत्री जी ने आस और विश्वास की महिमा के बारे सहज ढंग से बताया वहीं निदेशक महोदय ने वर्तमान परिस्थिति में चुनौती को चुनौती देने के लिए समायानुकूल मार्गदर्शन किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती, संत रविदास और बसंत पंचमी पर संकलित/प्रकाशित आलेखों के साथ विज्ञान वरदान, धर्म विज्ञान, भारत में आन्तरिक अनुसंधान आदि महत्त्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही बाल अधिकार, पृथ्वी रक्षा बोध, शीघ्रता से संख्याओं का वर्ग ज्ञात करना भी प्रासंगिक है। स्थाई स्तम्भों के साथ सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल टीम के हाथों सुसज्जित शिविरा के लिए बहुत-बहुत बधाइयां।

-सोहन लाल डागा, बीकानेर

सत्यमेव जयते

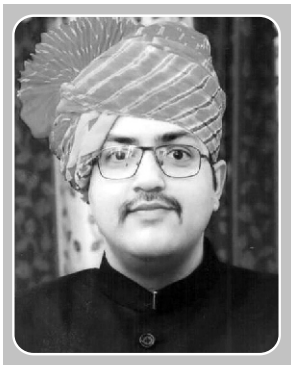

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

चुनौतियां और हम

शिक्षा न केवल शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण निर्माण कर श्रेष्ठ नागरिक तैयार करती है बल्कि चुनौतियों से संघर्ष कर लक्ष्य तक पहुँचना भी सिखाती है। विगत एक वर्ष में यही सब हमने देखा है, पाया है, सीखा है और कर दिखाया है। दरअसल कोविड-19 की विश्वव्यापी चुनौती ने स्कूल शिक्षा विभाग को एक ऐसे इम्तिहान के दौर से गुजरने को विवश किया, जिसमें पग-पग पर जोखिम, आशंकाएँ और संघर्ष था। राज्य की सबसे बड़ी नफरी वाले महकमे के रूप में स्कूल शिक्षा विभाग ने हर मुश्किल राह पर चलते हुए चुनौतियों का सामना किया है और कामयाबी भी हासिल की है। विभिन्न स्तरीय हजारों राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत लाखों विद्यार्थियों के लिए कई लाख शिक्षकों व अन्य संवर्ग के कार्मिकों द्वारा जिस तरह से प्रतिकूल परिस्थितियों में दिन रात काम करते हुए कोरोना वॉरियर्स के रूप में काम की शुरूआत की, उसे वातावरण निर्माण, पीड़ित मानवता की मदद और ऑनलाइन टीचिंग के माध्यम से असली मुकाम तक पहुँचाया भी। कड़ी मेहनत, अनुशासन, प्रतिबद्धता और संघर्ष की इस मुहिम ने विभाग के लिए कोविड वैक्सीनेशन के प्रथम दौर में बड़ा लक्ष्य हासिल कर, विभाग को शौहरत दिलवायी है। प्रारम्भिक शिक्षा के ग्राम्यांचल में कार्यरत इन समस्त शिक्षक बन्धुओं और बहिनों को, जिन्होंने उत्साह के साथ कोविड वैक्सीनेशन में भाग लिया, मैं दिल से उन सभी को मुबारकबाद देता हूँ। हमें इस उपलब्धि पर गर्व है।

मार्च का महीना सदा की भाँति भौतिक, वित्तीय एवं शैक्षिक उपलब्धियों के समाहार का महीना है। पलटकर देखें कि हमने क्या पाया और क्या खोया, तो लगता है कि बहुत कम खोया और बहुत ज्यादा पाया। स्माईल-1 एवं 2, विभाग का सूचना प्रौद्योगिकीकरण, विभागीय जाँच के प्रकरणों का त्वरित निस्तारण, प्री.डी.एल.एड. परीक्षा-2020 का सफल आयोजन, ऑनलाइन काउन्सलिंग से पदस्थापन, ए.सी.पी. प्रक्रिया के सरलीकरण, शिक्षकों के डाटाबेस अपडेशन एवं शिक्षण अधिगम में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के उपयोग सहित अनेक ऐसे मानदण्ड रहे, जहाँ स्कूल शिक्षा विभाग को गर्व की अनुभूति का अवसर मिला। इन सब में विभाग के शिक्षा अधिकारियों, अन्य संवर्ग के अधिकारियों, शिक्षकों एवं मन्त्रालयिक संवर्ग सहित समस्त कार्मिकों को मैं बधाई देता हूँ। उम्मीद है कि आगे भी दोगुने उत्साह के साथ हम मिलकर काम करेंगे तथा बचे हुए लक्ष्यों की पूर्ति शिद्दत के साथ करेंगे। इस माह में 8 मार्च को 'विश्व महिला दिवस' हमें बालिका शिक्षा के क्षेत्र में अपने बहुआयामी दायित्व का बोध कराता है। अच्छा हो कि हम जिस जगह और जिस हैसियत से काम कर रहे हैं, बालिकाओं के लिए और अधिक उत्साह के साथ कल्याणकारी योजनाओं की सार्थक क्रियान्विति के हिस्सेदार बनें। साथ ही माह के समापन पर 30 मार्च को राजस्थान राज्य की स्थापना का दिवस भी हम उत्साह के साथ मनायेंगे।

आने वाले समय में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की परीक्षाएँ भी होंगी। ये परीक्षाएँ विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि हम सब के लिए भी अहम होंगी। हमारा भी मूल्यांकन होगा कि प्रतिकूल परिस्थितियों में हम सब एकजुट होकर कितनी कामयाबी हासिल कर पाते हैं। इन परीक्षाओं के लिए भी हमें अधिक परिश्रम कर नए कीर्तिमान स्थापित करने हैं। इम्तिहान आखिर इम्तिहान होता है, फिर भले ही विद्यार्थियों का हो या व्यवस्थाओं का। मुझे पूरा विश्वास है कि अब तक स्कूल शिक्षा विभाग के शिक्षक जिस मनोयोग से कार्य करते आए हैं, उससे भी दोगुने उत्साह के साथ कम समय में अधिक उपलब्धियां हासिल कर विभाग का नाम रोशन करेंगे।

इन्हीं अपेक्षाओं एवं सद्भावनाओं के साथ....

(सौरभ स्वामी)

"शिक्षा न केवल शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण निर्माण कर श्रेष्ठ नागरिक तैयार करती है बल्कि चुनौतियों से संघर्ष कर लक्ष्य तक पहुँचना भी सिखाती है। विगत एक वर्ष में यही सब हमने देखा है, पाया है, सीखा है और कर दिखाया है।"

श्रीमती अपर्णा अरोरा
आइ.ए.एस.

परिचय

संवेदनशील प्रशासक, अनुशासनप्रिय, सतत् अध्ययनशील स्वध्यायी श्रीमती अपर्णा अरोरा भारतीय प्रशासनिक सेवा (1993) की वरिष्ठ अधिकारी हैं। आपका जन्म 01 अक्टूबर, 1968 के दिन देश में शिक्षा एवं दर्शन के विख्यात नगर पटना (बिहार) में हुआ। आप राजनीति विज्ञान में अधिस्नातक उपाधि प्राप्त हैं। शिक्षा एवं साक्षरता को आप विकास की कुंजी मानती हैं। प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक के रूप में कार्यरत रहते हुए शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं शिक्षा का अधिकार व मिड-डे-मील जैसे महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रमों की प्रभावी क्रियान्विति में आपका अनमोल योगदान सर्वविदित है। जिला कलक्टर, बाँसवाड़ा एवं संभागीय आयुक्त, उदयपुर पदस्थापन के समय आदिवासी पिछड़े तबको के उत्थान के लिए आप अहर्निश संलग्न रहीं। कला संस्कृति, ऊर्जा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, सूचना एवं संचार, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज, प्रदूषण नियंत्रण, खान एवं पैट्रोलियम तथा अल्पसंख्यक मामलात जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण विभागों में आपकी सेवाएँ माइल स्टोन की तरह देदीप्यमान हैं। आपने निर्मल भारत अभियान का प्रशिक्षण थाईलैण्ड से पीपीपी पर चैन्नई एवं हैदराबाद से प्रशिक्षण प्राप्ति के दौरान भी अपने मौलिक चिन्तन से प्रशिक्षकों व प्रशिक्षणार्थियों को प्रभावित किया। वर्तमान में आप प्रमुख शासन सचिव, स्कूल शिक्षा भाषा एवं पुस्तकालय विभाग तथा पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग के पद पर कार्यरत हैं।

शैक्षिक विकास के संवाहक बनें

❒ अपर्णा अरोरा

कोविड-19 महामारी के प्रकोप के चलते दस माह विद्यालयों में औपचारिक शिक्षण-अधिगम स्थगित रहने के पश्चात पुनः शैक्षणिक गतिविधियों का शुरू होना किसी अंधेरी रात्रि के पश्चात खुशनुमा सुबह होने जैसे अहसास करा रही है। यद्यपि इस दौर में ऑनलाइन टीचिंग-लर्निंग एवं शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों के घर जाकर व्यक्तिगत मार्गदर्शन करने, पढ़ाने-लिखाने, गृह कार्य देने तथा उसकी जाँच करने जैसे कार्य कर शिक्षा की दीप स्तंभ (Lamp Post of Education) को जलाए रखा तथापि विद्यालय परिसर में बच्चों की आवाजाही तथा कक्षा-कक्षों में शिक्षण अधिगम के आनन्द का तो अभाव ही रहा है।

किसी सुविधा का महत्त्व तब तक समझ में नहीं आता, जब तक वह साधन सुविधा निर्बाध हमें मयस्सर होती रहती है। अनायास वह सुविधा हम से हटा ली जाए और लम्बे समय तक उससे महरूम रहें तब समझ में आता है उसका मूल्य! विद्यालयों में बजने वाली घंटी की ध्वनि (Bell Sound) और बच्चों की कदम ताल की आवाज किसी मोहक संगीत से कम नहीं होती। विद्यालय प्रांगण में दौड़ते-भागते बच्चे दरअसल विद्यालय की शोभा होते हैं।

प्राण तो हैं बालक- भौतिक रूप से ईंट-पत्थर, चूना-सीमेंट से बने भवन को विद्यालय भवन कह सकते हैं मगर उसमें प्राण तत्व तो बालक हैं। यदि बालक नहीं आ रहे हैं तो उस भवन को विद्यालय कहने में संकोच होगा। एक समय था जब पक्के और उपयुक्त कक्षा-कक्षों से युक्त विद्यालय भवन नहीं थे। कहीं-कहीं तो पेड़ों के नीचे गोबर का लेप कर बने चबूतरे/चौकी पर गुरुजी बैठकर पढ़ाते थे, बच्चे पढ़ते थे। वह विद्यालय ही कहलाता था। वस्तुतः विद्यालय कहलाने के लिए शिक्षक और विद्यार्थियों का होना पहली शर्त है। शिक्षक और शिक्षार्थी को भी प्राथमिकता अनुसार देखें तो शिक्षार्थी नम्बर वन पर आते हैं। विद्यालय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के प्राण बालक हैं। हम सब उसी बालक के लिए ही तो काम करते हैं। विद्यालय यदि एक मन्दिर है तो बालक उसके भगवान तथा शिक्षक पुजारी है। बालक ही हमारा इष्ट है। बालक का हृदय सर्वथा शुद्ध विकारमुक्त होता है। वास्तविक जीवन का अर्थ हमें बालक ही सिखाते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कहते थे कि सत्य और अहिंसा का पाठ उन्होंने बालक से ही सीखा है।

चमकते हुए सितारे हैं बालक- चक्रवती राजगोपालाचारी 'राजाजी' भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल थे। वे उच्च कोटि के लेखक एवं साहित्यकार भी थे। बालक का महत्त्व समझाते हुए राजाजी ने कहा है, 'बालक वे चमकते हुए सितारे हैं जो भगवान के हाथ से छूटकर धरती पर गिर पड़े हैं।' यदि बालक न हो तो फिर कुछ करने के लिए रह ही न जाए। वे हमारे अभीष्ट हैं। बालकों को अच्छी शिक्षा देने के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन की स्थापना की थी। टैगोर कहा करते थे कि जीवन की महत्त्वाकांक्षाएँ बालकों के रूप में आती हैं। यदि बालक न हो तो हमारा जीवन शुष्क और रसहीन हो जाएगा। बालक शुद्ध और ब्रह्मरूप हैं। वे निर्धन के धन हैं। स्वतंत्रता सेनानी हरिभाऊ उपाध्याय ने बालक की महिमा बताते हुए कहा है, 'बालक भगवान के जीते जागते खिलौने हैं। बालकों में भगवान के दर्शन जितने जल्दी हो सकते हैं, उतने जल्दी शायद ही किसी अन्य में हो।' शिक्षकों एवं शिक्षा विभाग में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले हम सभी अधिकारियों-कर्मचारियों को इसका मूल्य समझना चाहिए। कोविड-19 के कारण लम्बे ठहराव के पश्चात औपचारिक रूप से कक्षागत शिक्षण का पुनः अवसर मिलना बहुत हर्ष एवं आनन्द का अवसर है। हमें अतिरिक्त परिश्रम करते हुए विगत 10 महीनों में रही कमी की भरपाई करने का पूर्ण प्रयास कर अपनी साधना को प्रमाणित करना है।

निरीक्षण में मार्गदर्शनात्मक – अब शिक्षा व्यवस्था से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को विशेष प्रयास करने हैं। शिक्षक कक्षाकक्षों में शिक्षण अनुष्ठान में जुटें, विद्यालय परिसर का कोना-कोना शिक्षण-अधिगम की महक से सुवासित

हो। शिक्षक, शिक्षा की समग्र व्यवस्था के हरावल दूत हैं। उनकी पीठ थपथपाने, अच्छे प्रयासों (Best Practices) को स्कूल-स्कूल तक पहुँचाने का काम निरीक्षण अधिकारियों को करना है। हमारी वर्तमान व्यवस्था के अनुसार ग्राम पंचायत स्तरीय पदेन प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO) से शुरू होकर ब्लॉक, जिला, मंडल एवं राज्यस्तरीय कई चरणों में मॉनिटरिंग एवं कंट्रोलिंग व्यवस्था है। इन कार्यालयों में कार्यालयाध्यक्ष के अलावा कई जूनियर अधिकारी भी कार्यरत हैं। यदि ये सभी अधिकारी ठान लें तो प्रत्येक स्कूल एवं प्रत्येक शिक्षक तक अपनी पहुँच सुनिश्चित कर सकते हैं। मुझे यह बताते यह प्रसन्नता है कि इन शिक्षा अधिकारियों को वर्षों से विभिन्न स्कूलों एवं अलग-अलग बुद्धिलब्धि (आई.क्यू.) वाले विद्यार्थियों के साथ कार्य करने का व्यापक अनुभव है। उन्होंने जीवन की पाठशाला एवं अभावों के बीच रहकर सफलता प्राप्त करने जैसे अद्भुत काम किए होते हैं। इसका लाभ वर्तमान पीढ़ी को मिलना जरूरी है और इसके लिए उन्हें समय प्रबंधन (Time Management) कर निरीक्षण के लिए निकलना पड़ेगा। निरीक्षण अधिकारियों से मेरा आग्रह है कि वे Freind, Philosopher & Guide बनकर निरीक्षण करें। कमियों को न केवल उजागर ही करें अपितु उनसे उबरने के लिए उचित भी सुझाएं।

सेतु बनें अधिकारी– राज्य के शिक्षा निदेशक एवं जिलों/संभाग में विभिन्न पोजीशन में कार्य करते हुए मैंने पाया कि बहुत से शिक्षक बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। संस्थाप्रधान तो कहीं-कहीं अवर्णनीय रूप से उत्तम कार्य कर रहे हैं। शिक्षा के संख्यात्मक एवं गुणात्मक विकास के लिए टारगेट शत प्रतिशत (100%) एवं मिशन मेरिट सरीखे अनूठे कार्य विभाग में हुए हैं। इन अच्छे कार्यों को निरीक्षण अधिकारी एक स्कूल से दूसरे स्कूल तक ले जाते हुए सम्पूर्ण ब्लॉक जिले, मण्डल एवं प्रान्त तक पहुँचा सकते हैं। एक सिरे से दूसरे सिरे के लिए योजना बनाने वाले को सेतु कहते हैं। एक स्कूल से दूसरी स्कूल और एक शिक्षक से दूसरे शिक्षक तक Best Practices का अन्तरण करने में निरीक्षण अधिकारियों को सेतु बनना चाहिए। PEEO से लेकर संयुक्त निदेशक तक के सभी शिक्षा अधिकारियों को चाहिए के वे प्रतिदिन सुविधा एवं उपलब्ध समयानुसार विद्यालयों में जाकर यह पवित्र कार्य करें। इन कार्यालयों में आने वाले शिक्षकों से भी शैक्षिक चर्चाएँ करनी चाहिए।

सतत अनुश्रवण (Follow Up) है आवश्यक– लगभग दस महीने के पश्चात 18 जनवरी से विद्यालयों को औपचारिक रूप से पुनः शुरू किया गया। फिर से शाला की घंटी बजने एवं बच्चों को कदम ताल की ध्वनि सुनाई दी। इस मौके पर सचिवालय से लेकर निदेशालय तक में शिक्षा विभाग के अन्तर्गत कार्यरत प्रशासनिक एवं शिक्षा अधिकारियों ने स्कूलों में विजिट की। बहुत अच्छा अनुभव रहा इस प्रेक्टिस का मगर यह तार सतत जुड़े रहने आवश्यक हैं। एक बार एक-दो दिन के लिए गए और इतिश्री, यह नहीं होना चाहिए। निरीक्षण पर जाने वाले अधिकारियों को उनके द्वारा निरीक्षण किए गए विद्यालय को सतत अपना विद्यालय मानकर लगातार अनुश्रवण (Follow Up) करते रहना चाहिए। विजिट के दौरान आपने क्या कहा, उन्होंने आपसे क्या कहा, जो आश्वासन देकर आए, उनकी कहाँ तक पूर्ति हो पाई जैसी छोटी-छोटी बातों से प्रगाढ़ता बनती है तथा लोग अच्छा कार्य (Better) करने के लिए प्रेरित होते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी (IT) का करें उपयोग– अब तो मोबाइल एवं इंटरनेट (व्हाट्सअप एवं फेसबुक) का चमत्कारी जमाना है। आप कहीं भी बैठे हुए हैं अथवा यात्रा करते हुए तुरन्त मनचाही जगह, मन चाहे व्यक्ति से बात कर सकते हैं। मैं एक उदाहरण से इसके प्रभावीपन को समझाना चाहूँगी। माना कि आप संयुक्त निदेशक हैं यानी सम्पूर्ण संभाग (3-5 जिले) के सर्वोच्च अधिकारी हैं। आपने पिछले अथवा उससे भी पिछले महीने किसी विद्यालय के निरीक्षण के समय किसी परिश्रमी शिक्षक का सराहनीय कार्य देखकर उसकी प्रशंसा की और उसका नाम, नम्बर अपनी डायरी में नोट किया। अब यदि आप महीने दो-महीने पश्चात सीधे उससे बात करके निरीक्षण के समय की बातें दोहराते हैं, उसके हाल चाल पूछते हैं तो वह व्यक्ति कैसा अनुभव करेगा। फौरन बात सारी स्कूल में फैल जाएगी। न केवल उसे अपितु अन्य को भी अच्छा काम करने की प्रेरणा मिलेगी। इसका विपरीत एक अन्य उदाहरण और लेते हैं। माना कि आपके निरीक्षण के समय किसी व्यक्ति का कार्य ठीक नहीं मिला। लिहाजा आपने उसे डांटा और सुधार लाने की चेतावनी दी। अब यदि महीने-दो महीने बाद आप संस्थाप्रधान से बात कर उस व्यक्ति की याद दिलाते हुए केवल इतना सा पूछ लेते हैं कि कैसा चल रहा है वह बंदा अब? फिर देखिए इसका असर। सब जगह यह धारणा स्थापित हो जाएगी कि काम नहीं करेंगे तो नहीं चलेंगे। व्यवस्था को प्रभावी एवं परिणाममूलक (Result Oriented) बनाने के लिए ऐसा करना बहुत जरूरी है। अतः अनुश्रवण करते रहना चाहिए।

संस्थाप्रधान पर है दारोमदार– विद्यालय की नियति उसके प्रधानाध्यापक पर निर्भर करती है। जैसा प्रधानाध्यापक वैसा विद्यालय, इस मान्यता में मेरा दृढ़ विश्वास है। प्रधानाध्यापक को अतिरिक्त मेहनत, अतिरिक्त साधना और अतिरिक्त त्याग करना पड़ता है। प्रधानाध्यापक आराम करने के लिए नहीं बल्कि अहर्निश काम करने वाले तपस्वी का काम है। इसके लिए समय की पाबंदी, ईमानदारी, स्वाध्याय, विनम्रता, संवेदनशीलता, मेहनत जैसे उच्च गुणों की उपस्थित उनमें आवश्यक है। महान राजनयिक एवं अमेरिका के राष्ट्रपति रहे अब्राहम लिंकन के द्वारा प्रधानाध्यापक के नाम लिखे पत्र को आपने जरूर पढ़ा होगा। नहीं पढ़ा है तो अब जरूर पढ़िएगा। प्रधानाध्यापक की महिमा आपको तब समझ में आएगी। ब्रिटेन के विख्यात प्रधानमंत्री रहे विंस्टन चर्चिल ने कहा है, 'प्रधानाध्यापकों के हाथों में वे शक्तियाँ हैं जो अभी तक प्रधानमंत्रियों को भी नहीं मिल पाई हैं। Headmasters have powers at their disposal with which Prime Ministers have never yet been invested. (My Early Life, Chapter-2)

संस्था प्रधानों से मैं चाहूँगी कि वे दृढ़ता के साथ विनम्रतापूर्वक (Politeness with firmness) सभी कार्य करें। उन्हें शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों, दानदाताओं, जन प्रतिनिधियों सभी के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए। आपका उच्च चरित्र एवं कार्य व्यवहार ही आपको प्रतिष्ठा एवं पहचान दिलाएगा। मुझे महात्मा गाँधी का कहा याद आ रहा है। बापू ने कहा था, ''जैसे सूर्य सबको एक सा प्रकाश देता है, उसी तरह विद्या दृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए।' सबके साथ समदृष्टि रखते हुए समान व्यवहार करने वाले संस्थाप्रधानों को कभी किसी

प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। सबको साथ लेकर चलने का रामबाण सूत्र यही है कि सबको समान समझकर सबके साथ एक जैसा बर्ताव करो। कबीर ने भी कहा है–

कबीर खड़ा बाजार में सबकी माँगे खेर।
ना काहू से दोस्ती ना काहू से बेर।।

संस्थाप्रधान को महात्मा गाँधी कबीर की इस सीख का मानकर चलना चाहिए। पक्षपात अथवा किसी को कम किसी को ज्यादा वेटेज देने पर परस्पर द्वेष भाव बढ़ता है, जिससे वातावरण बिगड़ता है और अप्रिय परिणाम देखने को मिलते हैं। इनसे बचाव बहुत जरूरी है। अतः संस्थाप्रधान को सावधान रहकर कार्य करना चाहिए।

जानकारियों का ढेर नहीं शिक्षा– स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि शिक्षा महज विभिन्न जानकारियों का ढेर नहीं है बल्कि मनुष्य में जो संपूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है, उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का काम है। कोरोना महामारी की त्रासदी से उबर कर शिक्षा का काम फिर से पटरी पर आने लगा है। अभी आवश्यक सावधानियों को ध्यान में रखना है। मास्क लगाना, साबुन से हाथ धोना, सेनेटाइजर का प्रयोग, अनावश्यक भीड़ नहीं करना, परस्पर दो गज की दूरी बनाए रखना, विद्यालय परिसर की साफ-सफाई, स्वच्छ पेयजल की सुनिश्चितता आवश्यक है। कोरोना से बचाव के समय जो अच्छी आदतें हमने सीखी हैं, उन्हें छोड़ना नहीं है। समाज में भी नागरिक चेतना लाने का कार्य शिक्षक-शिक्षार्थियों की टीम को ही करना है। वार्षिक परीक्षाएँ शीघ्र ही होने को हैं। छात्र-छात्राओं को एक क्षण भी व्यर्थ में नहीं खराब करते हुए मनोयोगपूर्वक अध्ययन करना है ताकि परीक्षा में वे उत्तम उपलब्धि हासिल कर सकें। विद्यार्थियों, शिक्षकों, संस्थाप्रधानों, शिक्षा अधिकारियों के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले दिन राजस्थान प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को गुणात्मक व कारगर बनाने की दिशा में निर्णायक सिद्ध होंगे।

इतिशुभम!

प्रमुख शासन सचिव
स्कूल शिक्षा भाषा एवं पुस्तकालय विभाग तथा
पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा) विभाग
शासन सचिवालय, राजस्थान सरकार
जयपुर

शैक्षिक बजट वर्ष 2021-22

शिक्षा के उन्नयन हेतु संकल्प

❒ डॉ. रणवीर सिंह

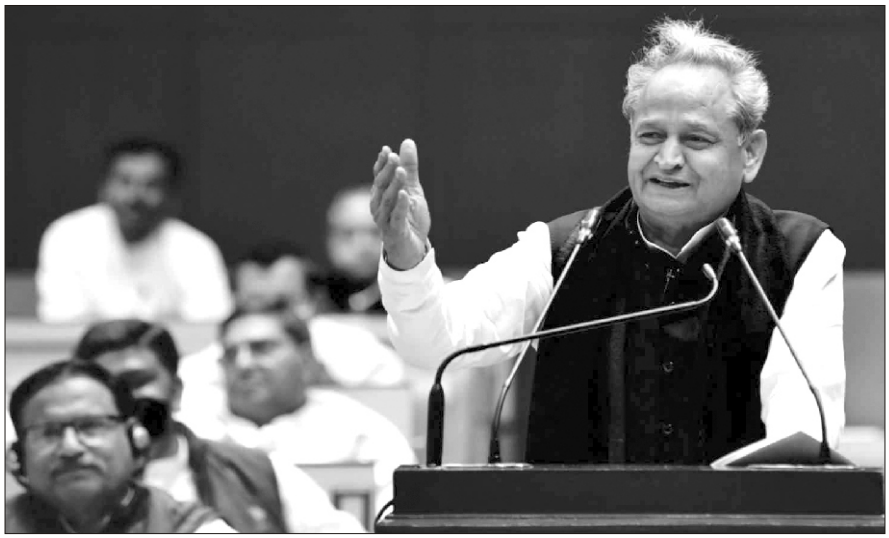

बजट शब्द अर्थशास्त्र का बहुत लोकप्रिय शब्द है। आय और व्यय का अनुमान लगाकर आर्थिक नियोजन (Economic Planning) करना बजट है। एक साधारण व्यक्ति से लेकर देश-प्रदेश की सरकारें, संस्थाएँ सभी अपना बजट बनाती हैं और उसके अनुसार कार्य करती हैं। राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से देश का सबसे बड़ा प्रदेश है। गाँव-ढाणियों, अमीरों-गरीबों, सुविधाओं-असुविधाओं वाला अद्भुत प्रदेश है हमारा राजस्थान! मगर हौसलों एवं जिजीविषा की कोई कमी नहीं है हम राजस्थानियों में।

राजस्थान में माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, जिनके पास वित्त मंत्री का भी प्रभार है, ने दिनांक 24 फरवरी, 2021 वार बुधवार तदनुसार माघ शुक्ल द्वादशी तिथि संवत 2077 (प्रदोष) के दिन आगामी वर्ष 2021-22 का विस्तृत बजट विधानसभा में प्रस्तुत किया। यह उल्लेखनीय है कि यह राजस्थान का पहला पेपरलेस बजट था। माननीय मुख्यमंत्री का बजट भाषण 2 घण्टे 46 मिनट के नए कीर्तिमान समय का था जिसमें उन्होंने 295 घोषणाएँ कीं।

राजस्थान का आगामी वित्तीय वर्ष (2021-22) का बजट 2,50,747 करोड़ रुपये का है। गत वित्तीय वर्ष (2021-22) के बजट 2,25,731 करोड़ रुपये के मुकाबले यह बजट 25,016 करोड़ रुपये अधिक है अर्थात गत वर्ष के 100 प्रतिशत के मुकाबले 111.08 प्रतिशत रहा। यह सरकार की राज्य की जनता के प्रति लोक कल्याण भावना का परिचायक है। माननीय मुख्यमंत्री एवं माननीय शिक्षामंत्री जी अक्सर शिक्षा के लिए अपनी प्राथमिकता की बात कहते रहते हैं और वह सरकार की मौजूदा बजट घोषणाओं में स्पष्ट दिखाई देता है।

कोरोना महामारी से राज्य की जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करने में सरकार ने कोई कसर नहीं रखी थी और अब बजट में सभी प्रदेशवासियों के लिए स्वास्थ्य बीमा का तोहफा देकर अपनी लोक कल्याण भावना को एक बार फिर सिद्ध किया है।

वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अंग्रेजी भाषा एवं भिन्न-भिन्न विषय और फैकल्टी में अध्ययन की सुविधा, नए विद्यालय खोलने, विद्यमान विद्यालयों को क्रमोन्नत करने, नए पद, विद्यालयों के भौतिक विकास जैसे सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों की तरफ ध्यान देकर समुचित प्रावधान इस बजट में किए गए हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होने के लिए रोडवेज बस में निःशुल्क यात्रा की सुविधा, कॉमन प्रतियोगी परीक्षा जैसी घोषणाएँ भी शिक्षार्थियों के हित की

घोषणाएँ हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग के सम्बन्ध में बजट 2021-22 में की गई महत्त्वपूर्ण घोषणाओं का बिम्ब (At a glance) इस प्रकार है-

- कोविड महामारी के कारण Learning Standards एवं Gap को पूर्ण करने के लिए Back to School कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाएगा।
- कक्षा 1 से 8 तक के राजकीय विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों का निःशुल्क School Uniform उपलब्ध करवाई जाएगी।
- इस अन्तराल को पूर्ण करने एवं शैक्षिक उन्नयन हेतु कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों को संक्षिप्त पाठ्यक्रमानुसार पूरक पाठ्य पुस्तकें निःशुल्क दी जाएंगी।
- 5 हजार से अधिक आबादी वाले समस्त गाँवों एवं कस्बों में अगले 2 वर्षों में English Medium के लगभग 1 हजार 200 महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय प्रारम्भ किए जाएँगे।
- जिला मुख्यालयों पर स्थित 33 अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन किया जाएगा।
- समस्त राजकीय माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों में स्मार्ट टी.वी. एवं सैट टॉप बॉक्स उपलब्ध कराए जाएँगे। इस पर 82 करोड़ रुपये व्यय संभावित है।
- विभिन्न विभागों द्वारा संचालित छात्रावासों एवं आवासीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को बेहतर Internet Connection Facility उपलब्ध करवाई जाएगी।
- विज्ञान संकाय वाले 600 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कृषि संकाय खोले जाएँगे।
- राजकीय विद्यालयों में 450 करोड़ रुपये की लागत से चरणबद्ध रूप से बुनियादी सुविधा विकसित करने हेतु 3500 से अधिक Class Rooms, Laboratories, पुस्तकालय, आर्ट एवं क्रॉफ्ट, कम्प्यूटर रूम आदि का निर्माण, 15 नवीन भवनों का निर्माण एवं 70 विद्यालयों में वृहद् मरम्मत आदि कार्य करवाए जाएँगे।
- 37,400 आँगनबाड़ी केन्द्रों व अंग्रेजी माध्यम के 134 राजकीय स्वामी विवेकानन्द मॉडल विद्यालयों में Pre-Primary के बच्चों के लिए 225 करोड़ रुपये की लागत से Child Freindly Furniture उपलब्ध करवाए जाएँगे।
- 50 राजकीय विद्यालय खोले जाएँगे एवं 100 विद्यालयों को क्रमोन्नत किया जाएगा।
- शाँति एवं अहिंसा प्रकोष्ठ को अपग्रेड कर शाँति एवं अहिंसा निदेशालय की स्थापना की जाएगी जिसके अंतर्गत-

1. वर्तमान में संचालित 8 हजार 870 पुस्तकालयों को बढ़ाकर 14,970 किया जाएगा।
2. विद्यार्थियों में गाँधी जी के विचारों एवं मूल्यों के प्रसार हेतु सर्वोदय विचार परीक्षा का आयोजन NGO से समन्वय कर किया जाएगा।

- 6 शैक्षिक संभागों-कोटा, अजमेर, जोधपुर, पाली, चूरू एवं भरतपुर में विशेष योग्यजन वाले आवासीय विद्यालयों की स्थापना की जाएगी।
- राजा रामदेव पोद्दार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर को अंग्रेजी माध्यम में रूपांतरित कर शिक्षा के क्षेत्र में Centre of Excellence के रूप में स्थापित किया जाएगा।
- विद्यार्थियों में उद्यमिता कौशल विकसित करने के लिए राज्य में 9 शैक्षिक संभाग स्तर पर Incubation Cell स्थापित किए जाएँगे। इस प्रकार School Startup कार्यक्रम प्रारम्भ करते हुए इन Startups को Hub & Spoke Model के माध्यम से Techno Hub से जोड़ा जाएगा।
- विभिन्न विभागों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं, विद्यालयों, आवासीय विद्यालयों एवं छात्रावासों में विषय विशेषज्ञ अनुभवी व्यक्तियों को Guest Faculty के रूप में लेने के लिए विद्या संबल योजना लागू की जाएगी।
- लगभग 1 हजार 500 राजकीय विद्यालयों के कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक गतिविधियों के प्रोत्साहन के लिए Science & Space club खोले जाएँगे। इनमें NASA (National and Space Administration, USA) के सहयोग से Asteroid खोज अभियान चलाया जाएगा।
- प्रदेश के युवाओं एवं बच्चों के शारीरिक विकास हेतु मेजर ध्यानचंद स्टेडियम योजना के तहत राज्य के सभी ब्लॉकों में स्टेडियमों का निर्माण करवाया जाएगा।
- मोरोली, भरतपुर में खेल स्टेडियम एवं काछवा, सीकर में भी खेल सुविधाएँ विकसित की जाएगी।
- आगामी 2 वर्षों में 50 हजार से अधिक पदों पर भर्तियाँ की जाएंगी जिनमें से शिक्षा विभाग में 19 हजार नई भर्तियाँ की जाएंगी।
- कक्षा 1 से 4 तक तथा कक्षा 5 से 8 तक के विशेष योग्यजन विद्यार्थियों की वर्तमान छात्रवृत्ति को क्रमशः 40 से बढ़ाकर 500 एवं 50 से बढ़ाकर 600 प्रतिमाह किया जाएगा।
- देवनारायण योजना के अन्तर्गत 200 करोड़ रुपये का पैकेज, एमबीसी के लिए 3 छात्रावासों का निर्माण किया जाएगा।
- मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना के तहत कक्षा 11 व 12 में एकेडमिक कोर्स हेतु प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाएगी।
- संविदाकर्मियों की समस्याओं के समाधान व हितों की रक्षा करने के लिए अलग से सेवा नियम बनाकर विभागवार कैडर बनाया जाएगा।

राज्य सरकार बजट व संसाधन दे सकती है। काम तो हमें ही करना है। कोई रास्ता दिखा सकता है, आखिर चलना तो हमें ही है। बजट 2021-22 अर्थ का एक बड़ा उपहार होने के साथ ही सरकार की भावना का गुलदस्ता है। सरकार ने एक बार पुनः प्रमाणित कर दिया है कि शिक्षा उनके लिए प्राथमिकता पर है। शिक्षकों की आखर सेना इसमें कोई कमी नहीं छोड़ेगी। हम पूर्ण मनोयोग एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य न कर केवल अपेक्षित कार्य ही करेंगे अपितु कोरोना महामारी के कारण रही कमी की भरपाई भी इस वर्ष में कर अपने शिक्षकत्व को प्रमाणित करेंगे, यही आशा एवं अपेक्षा है।

विशेषाधिकारी (शिक्षा)
शासन सचिवालय, राजस्थान, जयपुर-302001
मो: 9414180951

नैतिक शिक्षा

मूल्य परक शिक्षा

❐ भूपेन्द्र कुमार शर्मा

मूल्य परक शिक्षा–शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं। शिक्षा संस्कृति का परमोत्कृष्ट तत्व है, जिसनें मानव को मननशील बनाया है और आत्मोद्धार के लिए प्रेरित किया। शिक्षा एक ऐसा मार्ग है जो व्यक्ति को ज्ञानी बनाकर उसके अन्तःकरण को निर्मल, निष्पाप, पवित्र और शुद्ध करता है।

मनुर्भुव की अवधारणा तभी संभव है जबकि शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्य संयुक्त हों। मनुर्भुव का गुरूमंत्र शैक्षिक उन्नति और चरित्र निर्माण का सर्वोपरि साधन है। गुरूकुल आधारित शिक्षण प्रणाली में सर्वत्र शिक्षा में नैतिकता और मूल्यों के विकास पर सर्वाधिक बल दिया जाता है। उसी शिक्षा पद्धति की संकल्पना ने हमारे देश को विश्व गुरु के पद पर प्रतिष्ठित किया।

मूल्य क्या है– प्रसिद्ध दार्शनिक जॉर्ज टॉमस के अनुसार व्यवस्था एवं व्यवहार में तीन प्रकार की बुराइयाँ व्याप्त हैं जो प्राकृतिक शारीरिक एवं मानसिक हैं। नैतिकता, से संबंध रखने वाली अन्याय, क्रूरता, लालच, घृणा, अपराध, तनाव, मद्यपान, जुआ, वेश्यावृत्ति, तृष्णा, अपव्यय, ओछापन, निर्लज्जता आदि बुराइयां हैं जो मनुष्य को पशुता की ओर अग्रसर करते हुए उसका नैतिक पतन करती हैं। नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए उक्त बुराइयों से ऊपर उठकर जीवन में नीति शास्त्र का पालन करते हुए मूल्यों का अपने में सृजन करना होगा। यह ही शिक्षा का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है। संत थामस के अनुसार नैतिकता निः संदेह अंहिसा या प्रेम पर आधारित होती है। नैतिक नियमों के पालन से उदारता, जन कल्याण की भावना, दया, अनुकम्पा, समदृष्टि कर्त्तव्यपरायणता आदि सद्गुणो का विकास होता है तथा वह समाज का अभिन्न अंग बनता है।

मूल्यों के ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि– मूल्यों के संबंध में निम्न विचारधाराएँ अस्तित्व में हैं–

1. आदिकालीन विचारधारा
2. मध्यकालीन नैतिक विचारधारा
3. आधुनिक विचारधारा

उक्त विचारधाराओं के आधार पर मूल्यों के निम्न सिद्धांत प्रचलित हैं–

1. सुखवादी सिद्धान्त
2. अन्तदृष्ट्यात्मक सिद्धांत
3. विकासवादी सिद्धांत
4. पूर्णवादी सिद्धांत
5. नैतिक सिद्धांत

वर्तमान में हमारे देश में अरविन्द, रविन्द्रनाथ, गाँधी, राधाकृष्ण आदि की दार्शनिक विचारधाराएँ सक्रिय हैं, जिनमें मूल्य सर्वोपरि हैं, जो व्यक्ति को जीवन पथ पर अधिक दृढ़ता और विश्वास के साथ अग्रसर होने में सहायक सिद्ध होते हैं। उक्त विचारधारा के आधार राष्ट्र के शिक्षाविदों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में सामाजिक, भौतिक व नैतिक मूल्यों के विकास के लिए पाठ्यक्रम में मूल्य परक शिक्षा को सम्मलित करने पर बल दिया तथा वर्तमान में मूल्य परक शिक्षा सामाजिक व नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए समय की आवश्यकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही विभिन्न आयोगों व समितियों ने अपने-अपने प्रतिवेदनों में यह प्रमुखता के साथ स्पष्ट किया है कि हमारे नैतिक व सामाजिक जीवन के मानव मूल्यों के स्तर में गिरावट आई है तथा उन्हें प्रौन्नत करने के लिए शिक्षा की अहम् भूमिका पर बल दिया है।

मूल्य एवं शिक्षा– मूल्यों से तात्पर्य उन वस्तुओं से है जिन्हें मानव प्राप्त करने की इच्छा रखता है या धारित करना चाहता है। वे भौतिक वस्तुएँ जैसे- मकान, भोजन, वस्त्र आदि या भावात्मक गुण तथा सत्य, प्रसन्नता, शांति जैसे आदर्श हो सकते हैं। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों की सोच अनुभूति एवं क्रियाकलापों में अच्छा जीवन व्यतित करने हेतु व्यवहारिक परिवर्तन लाया जा सकता है। शिक्षा बालकों के वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में ज्ञान, कौशल, अभिरुचि, मूल्यों एवं सद्व्यवहार को विकसित करने की एक प्रक्रिया है। शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों, मानवीय संसाधनों का विकास, रचनात्मकता का विकास, मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक न्याय की प्रतिबद्धता, राष्ट्रीय भावना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मन व मस्तिष्क की स्वतंत्रता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, प्रजातांत्रिक गुणों का विकास आदि बेहतर जीवन हेतु है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हम पाठ्यचर्या का प्रारूप तैयार करते हैं तथा नियोजित एवं सुव्यवस्थित रूप से उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं। यह पाठ्यचर्या हमारी सांस्कृतिक विरासत से संबद्ध होती है।

मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता क्यों– शिक्षा मानवीय व्यक्तित्व के सर्वांगीण बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास की एक सतत् प्रक्रिया है किन्तु विभिन्न कारणों से शिक्षा में व्यक्तित्व विकास के प्रभावकारी कारकों की अवहेलना की जा रही है। वर्तमान में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मात्र परीक्षा उत्तीर्ण करना तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान करना रह गया है। मूल्य परक शिक्षा का आशय सामाजिक, नैतिक, भावात्मक, आध्यात्मिक जैसे उद्देश्यों की पूर्ति करना है। अभी हम सामाजिक व राजनीति के ऐसे दौरे से गुजर रहे हैं जहाँ हमारे मूल्यों को आघात पहुँचाया जा रहा है। धर्म निरपेक्षता, समाजवाद, प्रजातंत्र एवं व्यावसायिक दायित्व आदि मूल्यों पर प्रहार हो रहा है। राष्ट्रीय एवं सामाजिक भावना को विघटित करने वाली ताकतें सक्रिय हो रही हैं। जनसंख्या वृद्धि ने हमारे जीवन को प्रभावित किया है। हिंसा व अपराध का वातावरण पनप रहा है। भौतिक पर्यावरण नष्ट हो रहा है, प्रदूषण का खतरा सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है तथा जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद, क्षैत्रवाद लोगों में अलगाव पैदा कर रहे हैं। इन खतरों से मुकाबला करने हेतु हमें मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता है, जो मानवीय दृष्टिकोण में परिवर्तन कर जीवन मूल्यों के माध्यम से सोहार्द्र पूर्ण वातावरण तैयार कर सकें।

मूल्य परक शिक्षा की संभावनाएँ– मूल्य परक शिक्षा से तात्पर्य एक अतिरिक्त

विषय के अध्ययन से नहीं है अपितु उचित मूल्यों के विकास से है–

विद्यालय शिक्षा में निम्न संभावनाएँ हो सकती हैं–

1. विद्यार्थियों को आदर्श मूल्यों के प्रति सचेत करना तथा भावनात्मक रूप से उचित अनुभूति कर विचार व कर्म में सकारात्मक दृष्टिकोण तैयार करना।
2. सत्यवादिता, समय की पांबदी तथा स्वच्छता जैसी अच्छी आदतों का विकास कर मूल्यों की स्थापना करना। मूल्य परक शिक्षा बालकों की मनोवैज्ञानिक तत्परता और अनुभवों से संबंधित हो।
3. प्रारंभिक स्तर पर मूल्य परक शिक्षा गतिविधि आधारित एवं जीवन स्थितियों के अनुकूल हो। अग्रिम स्तर पर बालकों में मूल्यों की समझ पैदा हो तथा उन्हें अभ्यास हेतु उपयुक्त अवसर उपलब्ध करवाए जाए। जिसे बालक भावी जीवन में मूल्य परक शिक्षा का उपयोग कर स्वस्थ नैतिक समाज के निर्माण में योगदान कर सके ।

मूल्य परक शिक्षा के स्रोत : मूल्य परक शिक्षा के विभिन्न स्रोत हैं, अध्यापकों द्वारा उनके न्यायपूर्ण उपयोग की आवश्यकता है जिनमें प्रमुख हैं–

1. पाठ्यचर्या में वर्णित विषयों में विभिन्न मूल्य अर्न्तनिहित होते हैं। उदाहरणार्थ– विज्ञान में सत्य, गणित में तार्किक चिन्तन, साहित्य में भावात्मकता, इतिहास में प्रामाणिकता आदि मूल्य निहित होते हैं। विषयाध्यापन के माध्यम से आधारभूत मूल्यों का विकास संभव है।
2. पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियाँ महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। ये गतिविधियाँ बालकों में विभिन्न आदर्शों और उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निकट आने के अवसर प्रदान करती है। इनमें भागीदारी के माध्यम से उनमें रचनात्मकता, सामाजिकता, सांस्कृतिक समरसता, प्रजातांत्रिकता, सहयोग, सहनशीलता, धर्मनिरपेक्षता एवं उत्तरदायित्व निर्वहन जैसे गुणों का विकास होता है।
3. विद्यालयी वातावरण मूल्यों की दृष्टि से उपयुक्त स्रोत है। अध्यापक, छात्र, अभिभावक आदि के आचरण के माध्यम से बालक, आदर्श, आदर, प्रेमभाव, सम्प्रदायिक सद्भाव, कर्म के प्रति निष्ठा, परिश्रम आदि कई गुणों को जीवन में अपनाता है और आगे बढ़ता है।

मूल्य परक शिक्षा की प्रक्रिया– मूल्यों की संस्थापना शिक्षा की न तो कोई जादूई तकनीकी है और न ही कोई निश्चित सूत्र या व्यूह रचना है। मूल्य परक शिक्षा की प्रक्रिया वंशानुगत एवं वातावरण के कारकों से प्रभावित होती है।

1. जीवन के उच्चतम आदर्शों में से उचित मूल्यों का चयन कर उनकी अनुभूति करवा कर तदनुसार जीवन यापन करना।
2. घर, समूह, समुदाय, मीडिया और समुदाय का प्रभाव वातावरण को प्रभावित करता है। ऐसे में सही विद्यालय का चयन अहम हो जाता है, जहाँ बालकों को जीवन मूल्यों का सही प्रशिक्षण प्राप्त होता है।
3. मूल्य परक शिक्षा के अन्तर्गत सभी मानवीय गतिविधियाँ आती हैं, जिन्हें जानना, अनुभव करना तथा तदनुसार सम्पन्न करना मुख्य है अर्थात बालक न केवल सही को जाने या पहचाने अपितु उसके भावानुसार उचित संक्रिया सम्पन्न कर सके। मूल्य परक शिक्षा में ऐसे अवसर उपलब्ध कराने की व्यवस्था हो।

मूल्य परक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका: शिक्षा का महत्त्वपूर्ण कार्य नैतिक, आध्यात्मिक एवं भावात्मक मूल्यों का विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में शिक्षकों को भी अपनी महत्ती भूमिका का निर्वाह करने से पूर्व मानसिक रूप से तैयार होना होगा कि क्या करना है?, क्यों करना है? कैसे करना है? शिक्षकों को यह ज्ञात हो कि मूल्य परक शिक्षा उनकी व्यावसायिक गतिविधियों से भिन्न गतिविधि नहीं है। विद्यालय में या विद्यालय से बाहर निर्देश, विद्यार्थियों से सह सम्बन्ध, पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियाँ आदि विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मूल्यार्जन की सतत प्रक्रिया जारी रहती है। विद्यालय में आम परिवेश और अदृश्य पाठ्यचर्चा के द्वारा भी मूल्यों की शिक्षा होती है।

शिक्षक के रूप में हमारी भूमिका के संदर्भ में निम्न सामान्य सिद्धांतों का स्मरण रखना होगा–

1. विद्यालय में प्रेम, विश्वास एवं सुरक्षा का वातावरण बनाने में सहायता करना (बालक भय व असुरक्षा के कारण झूठ बोलता है)
2. बालक और उनके विकासात्मक लक्षणों को समझना तथा उन्हें विकसित करना।
3. मूल्य परक शिक्षा हेतु वास्तविक स्थितियों का आयोजन करें।
4. पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों के माध्यम से मूल्य परक शिक्षा का आयोजन करें तथा बालक को करने की सीखने दें।
5. शिक्षक द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषय के माध्यम से मूल्यों की शिक्षा देने हेतु शैक्षिक मूल्यों के संसाधन के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया जाए।
6. स्व व्यक्तित्व का विकास करें जिससे बालक अपने व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मूल्यों की शिक्षा प्राप्त कर सकें।
7. अपने कार्य एवं व्यवहार में पूर्ण ईमानदार बनें। (समय का पाबंद हो, विषय को गंभीरता से ले, उत्तरदायित्व को समझें।)
8. शिक्षक अपना आदर्श स्वरूप प्रस्तुत करें।

शिक्षक के दो रूप हैं, वह अतीत का पूत।
वर्तमान निर्मित करे, बन भविष्य का दूत।।

भारतीय मनीषियों ने शिक्षा के साथ–साथ चरित्र और मूल्य विकास का सूत्र विकसित किया है।

'न ही मनुषाच् श्रेष्ठतरं किंचित हि।'

अर्थात मनुष्य से बढ़कर कुछ नहीं है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों की प्रभावशीलता और उनकी प्रासंगिकता पर विमर्श के दौरान कुछ वर्षो पूर्व समाजोत्थान हेतु एक विचार समाज में जाना कि यदि विद्यार्थियों को प्रारंभिक स्तर पर ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया जाए तो उनमें नैतिक मूल्यों का विकास प्रभावी ढंग से हो सकेगा।

व्याख्याता (भूगोल)
महारानी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
बूँदी, (राज.)
मो: 9887339744

दीक्षा पोर्टल

ई-लर्निंग से ऑनलाइन पढ़ाई की राहें आसान

❒ करण सिंह

यह पोर्टल डिजिटल लर्निंग के डोमेन में एक महत्त्वपूर्ण टूल है इसमें विद्यालयी शिक्षा के लिए अध्यापकों व छात्रों को ऑनलाइन लर्निंग के लिए रिसोर्स मैटेरियल्स उपलब्ध करवाया जाता है। यह एक कस्टमाइज्ड लर्निंग पोर्टल है जिसे कि यूजर्स की जरूरत के आधार पर समय-समय पर मॉडिफाई किया जाता है। दीक्षा ई-लर्निंग पोर्टल एक अध्यापक के लिए ज्ञान कौशल को लगातार बढ़ाता रहता है ताकि कक्षा-कक्ष में प्रतिभाशाली बच्चों का निर्माण हो सके, इस पोर्टल द्वारा राजस्थान के लिए होम पेज RISE (Rajasthan interface for School education) दिया गया है।

क्या है दीक्षा पोर्टलः– मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा नेशनल टीचर्स प्लेटफार्म के रूप में कार्य करने वाले दीक्षा पोर्टल का पूरा नाम Digital Infrastructure For Knowledge Sharing है। इसका उद्देश्य भारत में वर्तमान में कार्यरत एक करोड़ शिक्षकों के लिए उनकी शिक्षण क्षमता व गुणवत्ता को बढ़ाने के साथ-साथ विद्यार्थियों तक उच्च गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाना है। इसके द्वारा कक्षाओं में उपयोग किए जाने वाले संसाधनों का निर्माण किया जाता है तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए कंटेट भी तैयार किए जाते हैं। शिक्षक प्रशिक्षणों के लिए यह पोर्टल एक महत्त्वपूर्ण टूल बन गया है।

ई-लर्निंग में दीक्षा पोर्टल कैसे बना उपयोगी– कोरोना महामारी से देश-प्रदेश में बदली परिस्थितियों में स्टूडेंट्स अपने स्कूल, टीचर्स और क्लास से अलग-थलग पड़ गए हैं ऐसी विकट परिस्थितियों में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को ई-कक्षा, ई-स्टूडियो, ई-पाठशाला जैसे कार्यक्रमों के जरिए अध्ययन जारी रखने के लिए ये पोर्टल अति महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म से शिक्षकों व छात्रों के साथ-साथ उनके अभिभावक भी लाभान्वित होते हैं। यह पोर्टल पाठ योजनाएँ कांसेप्ट विडियोज, वर्कशीट्स के रूप में टीचिंग रिसोर्सज प्रदान करता है, इसमें सेल्फ प्रोग्रेस और सेल्फ असेसमेंट के लिए डाई डैश बोर्ड की फैसिलिटी अवेलेबल होती है। टीचर्स खुद की क्षमताएँ, उपलब्धि और सुधार के क्षेत्रों में निरन्तर पता लगा, ये टीचर्स के लिए स्किल, एटीट्यूड और नॉलेज के विकास के लिए प्लेटफार्म प्रदान करता है। टीचर्स इन सभी मैटिरियल को ऑफलाइन अपने स्मार्टफोन, टेबलेट्स और अन्य डिवाइसेज पर कहीं भी और कभी भी प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षक, छात्र, अभिभावक एवं संस्थाएँ इस पोर्टल के सदस्य के रूप में एनरोल हो सकते हैं तथा एनरोलमेंट के साथ-साथ दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं और उनमें अपना योगदान भी दे सकते हैं।

दीक्षा पोर्टल की कार्यप्रणालीः– यह पोर्टल एक ऐसा एडवांस्ड प्लेटफार्म है जो मोबाइल एप्प के रूप में कार्य करता है, इस पोर्टल को एक्ससे करना बहुत ही आसान है इसके लिए इच्छुक टीचर्स और छात्र NCERT/RBSE की पाठ्यपुस्तकों में QR कोड (6 अंकों के एल्फा न्यूमेरिक यूनिक कोड) को QR कोड के स्कैनर या मोबाइल के गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध दीक्षा पोर्टल के QR कोड स्कैनर से स्कैन करना होता है। QR कोड के स्कैनिंग के बाद दीक्षा पोर्टल खुल जाता है फिर लोकेशन, लैंग्वेज, राज्य और बोर्ड की पसंद पूछी जाती है इसमें यूजर्स को उस क्लास के ऑप्शन को चूज करना होता है जिसके स्टडी मैटेरियल को वो एक्सेस करना चाहते हैं, सबमिट बटन के बाद स्क्रीन पर स्टडी मैटेरियल सामने आ जाता है। यूजर्स के फायदे के लिए अंग्रेजी और हिन्दी के साथ-साथ यह ई-कंटेट क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध है।

अध्यापकों के लिए कैसे उपयोगी– टीचर दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध मैटेरियल के यूज से स्वयं को एक प्रभावशाली एवं रुचिपूर्ण कक्षा के लिए तैयार कर सकता है, वह दूसरे टीचर्स के साथ भी अपने अनुभव शेयर करके स्वयं की टीचिंग व जीवन कौशल को समृद्ध बना सकता है। सेल्फ ग्रोथ के साथ स्टूडेंट के टैलेंट और स्किल को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने में यह पोर्टल टीचर्स के लिए काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। टीचर्स अपने गुणवत्तापूर्ण कंटेंट को पोर्टल पर अपलोड करके देश-प्रदेश के छात्रों को लाभान्वित कर सकते हैं।

छात्रों के लिए कैसे उपयोगी– छात्र अपने पाठ्यक्रम के कठिन बिन्दुओं को आसानी से समझ सकते हैं। पढ़े हुए पाठों को फिर से अपनी सुविधानुसार दोहरा सकते हैं इसके अतिरिक्त इस एप में वैसे फीचर्स भी हैं जिनकी सहायता से स्टूडेंटस सेल्फ असेसमेंट प्रैक्टिस पाठों के द्वारा स्वयं के द्वारा सीखें गए टॉपिक का मूल्यांकन कर सकते हैं और उन्हें पुनः सीख सकते हैं। इस पोर्टल के माध्यम से छात्रों द्वारा एक ही कठिन बिन्दु को भिन्न-भिन्न शिक्षकों की भिन्न-भिन्न शिक्षण विधाओं से पढ़ाए गए ई-कंटेंट का अध्ययन कर सकते हैं।

अभिभावकों के लिए कैसे उपयोगी– इस पोर्टल से अभिभावक अपने बच्चों की कक्षाओं में चल रही गतिविधियों को फॉलो कर सकते हैं। वे अपने बच्चों की क्लास रूम में डिलीवर किए जा रहे पाठ से सम्बन्धित किसी कन्फ्यूजन को दूर कर सकते हैं और कठिन बिन्दुओं को आसान तरीकों से समझ सकते हैं, समझे गये कठिन बिन्दुओं को अभिभावक बच्चों को आसानी से डिलीवर कर सकते हैं। वे अपने बच्चों की प्रोफाइल को देख सकते हैं और उसे अपडेट भी कर सकते हैं।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रामसर की ढाणी,
बांसा, पं.स. मौलासर, नागौर (राज.)
मोः 8769741274

नैतिक शिक्षा

सार्वजनिक जीवन और सदाचार

❒ कैलाश चन्द पुरोहित

विभु अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि, व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और यह प्रक्रिया उसे सुसभ्य, सुसंस्कृत एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में योग्य बनने का अवसर प्रदान करती है। मनुष्य क्षण-प्रतिक्षण नए-नए अनुभव और तद्जनित ज्ञान प्राप्त करता है, जिससे उसका दिन-प्रतिदन का व्यवहार प्रभावित होता है। अनौपचारिक रूप में व्यक्ति के सीखने की प्रक्रिया उसकी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में जीवन पर्यन्त अनवरत रहती है, तथापि औपचारिक शिक्षण विभिन्न श्रेणी और स्तर के शैक्षणिक संस्थानों में होता है।

सार्वजनिक जीवन से आशय व्यक्ति के उस कार्य क्षेत्र से है जिसमें सम्पाद्य कृत्यों का प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। मनुष्य के वे सभी कार्य जो परोक्ष या अपरोक्ष रूप से दूसरों को प्रभावित करते हैं या प्रभावित करने का प्रयास करते हैं, सार्वजनिक जीवन की श्रेणी में आते हैं। यहाँ तक कि मनुष्य के वे वैचारिक कार्य जो समाज पर प्रभाव डालते हैं, वे सभी सार्वजनिक जीवन की श्रेणी में आते हैं। शासन के प्रजातांत्रिक मॉडल में संवैधानिक उपबंधों और उसके अधीन निर्मित विभिन्न कानूनों के अंतर्गत कुछ चुनिंदा लोगों को पूरे देशवासियों के सर्वांगीण विकास के निमित्त नीति निर्माण और उसके क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। इस व्यवस्था में देश और समाज के हित में निर्मित सभी नीतियों के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व कार्यपालिका पर होता है। मंत्रिपरिषद् और नौकरशाह के रूप में कार्यपालिका पर देश और राज्यों के शासन को चलाने की व्यवहारिक जिम्मेदारी होती है तथा इनके द्वारा किए जाने वाले कार्य पूरे देश के सार्वजनिक जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करते है। जब हम सार्वजनिक जीवन में सदाचरण की बात करते हैं तो यह प्रमुखतः कार्यपालिका के स्तर पर कार्यों के निष्पादन से संबंध रखती है।

शासन के प्रजातांत्रिक रूप की सफलता शासन के सभी स्तंभों में सदाचरण के उत्कृष्ट स्तर पर निर्भर होती है। सार्वजनिक जीवन में सदाचार के किसी भी रूप में क्षरण जन सामान्य के उन्नयन को संदिग्ध कर देता है। शासन की नीतियों के क्रियान्वयन में शुचिता की उपस्थिति शासन व्यवस्था की सबसे बड़ी अच्छाई मानी गई है। प्रत्येक नीति के केन्द्र में सामान्य रूप से आम व्यक्ति के उत्थान का मंतव्य निहित होता है, किंतु इसे लागू करने में कमी रह जाए तो सिद्धांततः सर्वोत्कृष्ट रही नीतियाँ भी अपना प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सकती और संसाधनों के अपरिमित उपयोग तथा सालों साल गुजरने के बाद भी आम व्यक्ति की दशा यथावत रह सकती है।

किसी भी देश में अवाम का बड़ा हिस्सा शैक्षिक और भौतिक विकास से वंचित हो, तो 'सब के विकास' के संप्रत्यय को लागू करने के लिए कार्यपालिका के सदाचरण का महत्त्व बढ़ जाता है। नीतिगत लक्ष्यों की उपलब्धि और सामाजिक दशाओं में परिवर्तन नीतियों के क्रियान्वयन में बरती जा रही शुचिता के सापेक्ष होता है। क्रियान्वयन में विद्यमान कदाचार लोकहित के विरुद्ध प्रत्यक्ष और आनुषंगिक दुष्प्रभाव उत्पन्न करता है। दुर्भाग्यवश यह कहना पड़ता है कि देश की राजनीति और नौकरशाह के रूप में कार्यरत रही कार्यपालिका आचरण की दृष्टि से पूर्णतः निर्दोष प्रमाणित नहीं हो सकी है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि दोनों प्रकार की कार्यपालिकाओं में बहुसंख्य सदस्य अपने कर्त्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन करते होंगे, किंतु यह भी समझने योग्य है कि भ्रष्ट सदस्यों की संख्या उजागर संख्या से अधिक हो सकती है। जब भ्रष्टाचार के प्रकरण अनवरत रूप से स्थापित होते हों तब यह धारणा करना कठिन नहीं है कि तंत्र में भ्रष्ट लोगों की निरंतर विद्यमानता है। कदाचारी के पकड़ में आने या नहीं आने के विविध पहलू हो सकते हैं। इसमें विधि और तंत्रात्मक निगरानी के प्रश्न निहित हो सकते हैं, जिन पर चर्चा आलेख का प्रमुख मंतव्य नहीं है। चूंकि सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को देश और अवाम की सेहत लंबे समय तक बर्दाश्त नहीं कर सकती, तो क्या कोई वैकल्पिक या सहकारी उपाय हो सकते हैं, जो भ्रष्टाचार को जितना जल्दी अधिक गति से लोकजीवन में बेअसर कर सके? आलेख का मंतव्य सिर्फ इस बात पर विमर्श और ध्यानाकर्षण है।

शासन के प्रत्येक स्तंभ में सदाचार को सुनिश्चित करने के लिए आचरण नियम पहले से विद्यमान हैं। सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को रोकने, निवारित रखने और आरोपियों का परीक्षण कर दोष निर्धारण तथा दंडित करने के लिए विभिन्न निकाय और विश्वस्त न्यायपालिका का विकसित तथा सुदृढ़ ढांचा है। सभी निकाय, न्यायिक और अर्धन्यायिक अधिकारों से संपन्न सभी संस्थाएँ सम्यक रूप से कार्य करती हैं। कदाचारी/दुराचारी लोकसेवकों को समुचित रूप से दंडित किया जाता है। यद्यपि विधि की अनुकूलता और प्राकृतिक न्याय को दृष्टि में रखकर दंड व्यवस्था को यथांसभव कठोर बनाया गया है, इसमें यदि कोई गुंजाइश हो तो इसे और कठोर बनाया जा सकता है। सभ्य समाज में सदाचार को मूर्त करने के लिए दंड व्यवस्था का महत्त्व कभी भी निराकृत नहीं हो सकता, किन्तु मौजूदा व्यवस्था में किसी सीमा तक लोकजीवन के अपराधियों को पकड़ना और दंडित करना तो संभव हो रहा है परन्तु भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना अभी कठिन कार्य है और यह केवल दाण्डिक उपबंधन से सम्भव होता नजर नहीं आ रही है। निगरानी, अन्वेषण तथा निरोधक गतिविधियों के प्रभावी संचालन और सुदृढ़ न्याय एवं दण्ड व्यवस्था की मौजूदगी के बाद भी यदि सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हो सके तो सहकारी विकल्पों पर विचार करना तथा उन्हें मजबूत किया जाना आवश्यक हो जाता है।

व्यक्ति के आचरण पर आधारित समस्याओं के कई पक्ष हो सकते हैं। इसका सर्वाधिक माननीय पहलू विधिक है। यदि व्यक्ति प्रवर्तित विधियों के विरुद्ध जाकर कृत्य करता है तो उसका कृत्य दंडनीय अपराध की श्रेणी में आता है, किंतु केवल समस्या का विधिक दृष्टि से विश्लेषण करें तो कोई आचरण विधि विरुद्ध स्थापित होने पर ही उसके कर्त्ता को दंडित किया जा सकता है। कोई कृत्य जो विधिक दृष्टि से प्रथम दृष्टया अपराध होना चाहिए, किंतु वह अपराध के रूप में स्थापित हो, यह आवश्यक नहीं है। दंड विधि केवल प्रकट और साक्ष्यतः साबित अपराध के विरुद्ध दंड का प्रावधान करती है। अपराध कारित करने अथवा होने की परिस्थितियाँ न्यायपालिकाओं के समक्ष निर्णय की जटिलता उत्पन्न कर सकती है। परिस्थिति के प्रभाव के अधीन न्यायपालिकाओं को अपने पूर्व निर्णय को बदलना पड़ सकता है। यह स्थिति न्यायिक पदसोपान में अपील में भी प्रकट होती दिखती है। व्यवहार में यह भी हो सकता है कि सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार इस रूप में हो कि वह प्रकट ही ना हो पाए। ऐसे मामलों में दंड और अन्य विधियाँ निष्प्रभावी रहती हैं तथा अपराधों का समाज पर गहन दुष्प्रभाव होता रहता है।

भ्रष्ट आचरण के विरुद्ध सहित दंड विधियाँ प्रायः लोगों को अपराध कार्य करने से दूर रखने में असमर्थ रही हैं। व्यवहार में भ्रष्टाचारी के पकड़े जाने और दंडित होने के बाद भी उसमें अपराध का दोहराव देखा जा सकता है। दंडविधि कठोरतम दंड आरोपित करने के बाद भी उस कृत्य का अपने आप में गलत होना व्यक्ति के मानस में स्थापित कर दे, यह आवश्यक नहीं है। अतः भ्रष्टाचार मुक्त तंत्र की स्थापना करने के लिए अपराध का विधिक विश्लेषण पर्याप्त नहीं हो सकता। समस्या से प्रभावी ढंग से उबरने के लिए विधियों का प्रभावी रूप में लागू करने के साथ-साथ अपराध का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना समुचित है।

अपराध के विधिक और भौतिक परिणामों की जानकारी होना और अपराध के स्वतः निषिद्ध होने के ज्ञान होने में भेद है। इस भेद को ग्रहण किए बिना मनुष्य में आपराधिक प्रवृत्ति का उन्मूलन संभव नहीं है। प्रथम जानकारी बाह्य जगत का विषय है और द्वितीय तथ्य व्यक्ति का आभ्यान्तरिक प्रकाश है। सभ्यता के सतत विकास के बावजूद मनुष्य का इतिहास गवाह है कि व्यक्ति ने आपराधिक कृत्यों के बाह्य परिणाम की अधिक परवाह नहीं की है। मनुष्य की इस प्रवृत्ति के विश्लेषण का निष्कर्ष है कि बाह्य परिणाम व्यक्ति को दुराचरण के विरुद्ध शिक्षित करने में समर्थ नहीं हो सके हैं। शिक्षा की अवधारणा तद्नुरूप आचरण से पूर्ण होती है। यदि विधिक प्रावधान इसके समुचित प्रचार-प्रसार तथा इस आधार पर अपराधियों को दंडित किए जाने के बाद भी अपराधों के खिलाफ वातावरण नहीं बना सके, तो मात्र इस बाह्य प्रक्रिया में शिक्षण तत्व की उपस्थिति और तदाधृत सुधार को ढूँढ़ना उचित नहीं होगा। यह स्थापित तथ्य है कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में अपराध के विरुद्ध बोध का विकास संभव है।

शिक्षा को औपचारिक रूप से भले ही किन्हीं विभागों, प्रभागों में विभक्त कर दिया जावे, किंतु स्वरूपतः यह एक विशद् और अखंड प्रत्यय है तथा नैतिकता इसका समवाय कारण है। समवाय कारण किसी अवयवी का नित्य धर्म होता है, इसके बिना उस अवयवी की अवधारणा पूर्ण नहीं हो सकती। कोई अवयवी कभी अपने समवाय कारण से रहित नहीं रह सकता है। अतः नैतिक मूल्यों के लिए स्थान की उपस्थिति के अभाव में शिक्षा का कोई रूप ही नहीं हो सकता और यदि ऐसी किसी शिक्षा विधि की कल्पना की जावे जिसमें नैतिक मूल्यों के स्थापन का अवसर नहीं हो तो वह तथाकथित विधि शिक्षा स्वरूप में मूर्त नहीं हो सकती।

ज्ञान आत्मा का स्वरूप लक्षण है और सद्गुण ज्ञान का व्यावहारिक गुण है। सद्गुण व्यक्ति के आचरण में आत्मा का आलोक है। व्यक्ति को ज्ञान होने की पुष्टि उसके आचरण में सद्गुणों के दर्शन से होती है। ज्ञान की साधना श्रवण, मनन और निदिध्यासन का विषय है। श्रवण मुख्यतः शिक्षण का बोधक है। गुरुमुख से और वर्तमान परिपेक्ष में किसी भी सुलभ स्रोत से विषयवस्तु की मौलिकता के आख्यान की उपलब्धि श्रवण है और उस पर चिंतन की संज्ञा मनन है। विषय वस्तु की मौलिकता का बोध व्यक्ति को सदाचार से युक्त बनाए रखता है। ज्ञान युक्त आचरण अर्थात सदाचरण के सतत् अभ्यास की प्रक्रिया को निदिध्यासन कहा गया है। अपने आचरण को शीलयुक्त बनाने के लिए व्यक्ति को निरंतर प्रयासरत रहना पड़ता है। चूंकि ज्ञान शिक्षणीय है ज्ञान का सद्गुण से पूर्ण तादात्म्य है, अतः सद्गुण भी शिक्षणीय है। सदाचरण की परिपक्वता और इसे स्थाई रूप में धारण रखने के लिए जीवनपर्यन्त सद्गुणों के शिक्षण की अपेक्षा है। मनुष्य के जीवन और वय का कोई ऐसा खंड नहीं हो सकता जिसे शिक्षा से मुक्त रखने की कल्पना की जा सके। सम्प्रति व्यक्ति के जीवन का प्रधान समय मुख्यतः जागतिक विषयों से सम्बन्धित कला, विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक शिक्षा में प्रयुक्त होता है, अतः भौतिक दृष्टि से वर्गीकृत शिक्षा के विभिन्न संकायों में भी आरंभ से आखिर तक सद्गुण आधृत पाठ्यक्रम और उत्साहवर्द्धक दृष्टांतों को संयुक्त रखा जाना अपरिहार्य है।

समाज में सदाचार के सामान्यीकरण और स्थाईकरण में शिक्षा की सर्वोच्च और अप्रतिम भूमिका है। सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार के अपराध का मानसिक विश्लेषण और अपराधी की मनोदशा परिवर्तन का कार्य भी शिक्षा के द्वारा ही संभव है। भ्रष्टाचार में संयुक्त लोग, चाहे वे पकड़े जाते हैं अथवा नहीं, उनकी यह संज्ञान होना आवश्यक है कि उनका कृत्य अपने आप में गलत क्यों है और उस कृत्य से व्यक्ति और समाज पर क्या दुष्प्रभाव होते हैं, तो ही उनके आचरण में परिष्कार संभव है।

नैतिक मूल्य नित्य है और दंड विधियों का संहिताकरण पश्चातवर्ती है। दण्ड विधि का सूक्ष्म विश्लेषण करें तो ज्ञात होता है कि प्रायः उन्हीं कृत्यों का दंडनीय अपराध के रूप में संहिताकरण होता रहा है जो नैतिक दृष्टि से अवांछनीय हैं। नैतिक मूल्य स्वभाव से नैसर्गिक है। ये बाह्य जगत में व्यक्ति के स्वरूप को प्रतिबिंबित करते हैं। ये व्यक्ति का आभ्यान्तरिक बल हैं, जो उसे स्वतः सन्मार्ग पर चलने के लिए अभिप्रेरित रखता है। जब व्यक्ति के आचरण में नैतिक मूल्य व्यवहृत होते हैं तो बाह्य जगत में स्वतः स्फूर्त सदाचार की स्थापना होती है।

आत्मा के स्वरूप लक्षण अर्थात सत्य, ज्ञान और पूर्णता का आलोक होने के कारण नैतिक मूल्य बीजतः सभी में विद्यमान हैं। व्यक्ति के आचरण में इनका प्राकट्य सुनिश्चित हो, यह शिक्षा का कार्य क्षेत्र है। न्यासधारिता, सत्य,

अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय जैसे सनातन नैतिक मूल्यों की सार्वजनिक जीवन में पुनः प्रतिष्ठा/सुदृढ़ीकरण शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। व्यक्ति को यह ज्ञात होना आवश्यक है कि किसी वस्तु का महत्त्व उसके उपयोग तक सीमित है। उपयोग की आवश्यकता से अधिक किसी वस्तु का संग्रहण अनैतिक है क्योंकि यह अन्य व्यक्तियों को उस वस्तु के उपयोग के नैसर्गिक अधिकार से वंचित कर देता है। किसी वस्तु या संसाधन की सार्थकता उसके संभव अधिकतम उपयोग की तुलना में होती है। अपरिग्रह का सिद्धांत 'सर्वे भवंतु सुखिनः की अवधारणा को पूर्ण कर सकता है, अतः देश के संसाधनों का सर्वाधिक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए अपरिग्रह के सिद्धांत की प्रतिष्ठा आवश्यक है।

अपरिग्रह भाव की प्रतिष्ठा व्यक्ति को अस्तेय अर्थात चोरी में प्रवृत्त नहीं होने पर दृढ़ कर सकती है। न्यासधारिता का सिद्धांत अपरिग्रह की अवधारणा को मूर्त करता है। व्यक्ति अपने कर्म-कौशल से सन्मार्ग पर चलते हुए देश और समाज के भौतिक तथा मानव संसाधनों का सदुपयोग करके धन और संपदा का अर्जन करता है। अतः अपने उपयोग हेतु आवश्यकता से अधिक संपदा के लिए वह पूरे जनसमुदाय का न्यासी है। नैतिक दृष्टि से उस अधिक संपदा का उपयोग उसे लोक कल्याण के निमित्त करना चाहिए। सनातन संस्कृति में विहित उपर्युक्त एवं अन्यान्य नैतिक मूल्य महज आदर्श सिद्धांत नहीं है, वरन् ये सदियों से व्यक्ति के आचरण में प्रयुक्त होते आए हैं। वर्तमान में भी सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि नैतिक मूल्यों और न्यासधारिता जैसे सिद्धांतों पर आधारित आचरण के दृष्टांत उपलब्ध हैं। शिक्षा के माध्यम से सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्याधृत सदाचरण का सर्वव्यापीकरण और सुदृढ़ीकरण संभव है।

'सत्ता से युक्त व्यक्तियों को अपने चरित्र को उज्ज्वल साबित करने की महत्त्वपूर्ण चुनौती स्वीकार करनी ही होगी।'

वरिष्ठ लेखाधिकारी
निदेशालय प्रा. शिक्षा विभाग राजस्थान,
बीकानेर (राज.)
मो. 9785022827

अग्नि पुत्री : टेस्सी थामस

भारत की प्रथम महिला प्रक्षेपास्त्रांगना

❒ भूरमल सोनी

किसी ने ठीक ही कहा है महिलाएँ-समाज के निर्माण की आधार होती हैं। आज पूरा विश्व इस बात की गवाही दे रहा है कि महिलाएँ आज किसी से कम नहीं हैं। यह नारी शक्ति है जो बाधाओं को चुनौती देते हुए दुनिया जीत लेती है। एक औरत होना आसान नहीं है लेकिन कुछ महिलाओं ने चुनौतियों का सामना कर अपनी निष्ठा, मेहनत, महत्त्वाकांक्षाओं, हिम्मत से इनको आसान बना दिया। महिलाओं को मातृशक्ति मानकर पूजा जाता है। पुराणों में कहा गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात जहाँ नारियों की पूजा की जाती है, उन्हें इज्जत दी जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, धन, ऐश्वर्य, ज्ञान एवं शक्ति की स्वरूपा मानकर आदिकाल से महिलाओं को पूजा जाता है। आज महिलाएँ किसी भी विषय में पुरुषों से कमजोर आँकी नहीं जा सकती। महिलाओं ने पुरुषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर अपना लोहा मनवाया है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, आयरन लेडी इंदिरा गाँधी, सुनीता विलियम्स, किरण बेदी, चन्दा कोचर, माधुरी दीक्षित, मेधा पाटकर, अरूंधति रॉय, हिमादास, एकता कपूर, नीता अंबानी, रोशनी नादर मल्हौत्रा, जिया मोदी, डॉ. निर्मला सीतारमण, सोनिया गाँधी आदि अनगिनत महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी काबिलियत के दम पर सफलता के कई ऐसे मुकाम हासिल किए हैं जो आज युवाओं के लिए मिसाल हैं।

वैसे तो भारत में अनगिनत महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परचम लहराया है। ऐसी ही एक विलक्षण प्रतिभा की धनी महिला डॉ. टेस्सी थामस है जो रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की महिला वैज्ञानिक है। जिन्होंने अपना सारा जीवन भारत की अग्नि मिसाइल के निर्माण, परीक्षण में लगा दिया। भारत की पैंतीस किलो मीटर तक मार करने वाली अग्नि-4 मिसाइल के सफल परीक्षण के बाद रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की इस महिला वैज्ञानिक डॉ. टेस्सी थामस को अग्नि पुत्री नाम से जाना जाने लगा। भारत ही नहीं विश्व ने थामस को तब पहचाना और इनका लौहा माना जब 19 अप्रैल 2012 को भारत की सामरिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण और महत्त्वाकांक्षी मिसाइल परियोजना में अग्नि-5 की प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में टेस्सी ने पाँच हजार किलोमीटर की दूरी की मारक क्षमता वाली मिसाइल का सफल परीक्षण कर दिखाया। भारत के लिए यह केवल एकमात्र महिला की उपलब्धि ही नहीं थी बल्कि यह हमारे देश की सामरिक शक्ति और रक्षा कवच का पूरे विश्व में डंका बजने जैसा था। आज भारत इंटर कॉंटिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल प्रणाली की क्षमता से लैस ऐसा विश्व में पाँचवा देश है जो पाँच हजार किलोमीटर भीतर तक मारक क्षमता से दुश्मन को उसके घर में ही नेस्तनाबुद कर सकता है। यह मिसाइल देशवासियों को सुरक्षित रखने में सक्षम है। इसका सारा श्रेय देश की महिला वैज्ञानिक अग्नि पुत्री टेस्सी को दिया जाएगा। दक्षिण भारत के केरल राज्य में कैथोलिक परिवार में डॉ. टेस्सी थामस का जन्म हुआ। इनका नाम शान्ति दूत नोबेल पुरस्कार विजेता मदर टेरेसा के नाम पर रखा गया। टेस्सी बचपन से ही महत्त्वाकांक्षी थी नाशा का अपोलो अंतरिक्ष यान उनकी प्रेरणा बना और यह बात उनके दिलों दिमाग में घर की हुई थी। आज यह महिला वैज्ञानिक अग्नि पुत्री-टेस्सी थामस मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया के नाम से जानी जाती है।

डॉ. टेस्सी थामस रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO)-1988 में शामिल होकर मिसाइल मेन डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के सान्निध्य में उनके मार्गदर्शन से मिसाइल बनाने के कार्य को बखूबी किया। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने ही उन्हें इस कार्य के लिए चुना। डॉ. टेस्सी थामस भारत की एकमात्र प्रथम महिला प्रक्षेपास्त्रा वैज्ञानिक है। वे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में अग्नि चतुर्थ की परियोजना निदेशक एवं ऐरोनॉटिकल सिस्टम की महानिदेशक भी रही। हमारे देश की एकमात्र मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया पर हमें गर्व है जिन्होंने देश की रक्षा कवच में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

कला शिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पलाना,
बीकानेर (राज.)
मो: 9252176253

वार्षिक कार्य मूल्यांकन

लोकसेवक का एक महत्त्वपूर्ण अभिलेख

❒ मनीष कुमार गहलोत

राजकीय सेवा मे कार्यरत लोकसेवकों के लिए वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जो एक लोकसेवक के आगे के विकास के लिए बुनियादी और महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। प्रत्येक लोकसेवक का उसकी राजकीय सेवा में प्रदर्शन का मूल्यांकन उसके वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन के माध्यम से प्रतिवर्ष किया जाता है। लोकसेवक के कार्य, आचरण, चरित्र और क्षमताओं को वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन में दर्ज किया जाता है। अत: सूचना देने वाले लोकसेवक, प्रतिवेदक अधिकारी, समीक्षा अधिकारी और स्वीकार करने वाले अधिकारी को प्रतिवेदन तैयार करने का कार्य अत्यन्त जिम्मेदारी से करना चाहिए।

वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन को केवल आलोचनात्मक रूप में उपयोग करने के बजाय कॅरियर योजना और प्रशिक्षण के एक उपकरण के रूप में समझना चाहिए। प्रतिवेदक अधिकारी को इस समझ के साथ प्रतिवेदन तैयार करना चाहिए कि संबंधित लोकसेवक का विकास ही इसका मुख्य उद्देश्य है, जिससे वह अपनी स्वाभाविक क्षमता को समझ सके। यह एक छिद्रान्वेषण प्रक्रिया न होकर एक विकासात्मक उपकरण है। प्रतिवेदक अधिकारी को फॉर्म में आवश्यक रूप से और बुद्धिमानी से सूचित व्यक्ति के प्रदर्शन और क्षमताओं का आकलन करना चाहिए। इसे लोकसेवक द्वारा वर्ष भर संपादित विभिन्न कर्त्तव्यों के आधार पर भी अपनी टिप्पणी करनी चाहिए। रिपोर्ट करने वाले अधिकारी का मूल्यांकन भी शामिल होना चाहिए। सामान्य महत्त्व के कुछ गुण जैसे कि खुफिया, उत्सुकता, उद्योग, चातुर्य, वरिष्ठों के प्रति रवैया, पहल करने की योग्यता, नेतृत्व गुण, अधीनस्थों और आम जनता, रिपोर्ट में साथी-कर्मचारियों के साथ संबंध आदि। इसके अलावा, इसमें लोकसेवक के चरित्र, व्यक्तित्व, आचरण, योग्यता, कमियों और क्षमताओं की सामान्य प्रशंसा/टिप्पणी होनी चाहिए। प्रतिवेदक अधिकारी को न केवल अपने अधीनस्थ के कार्यों और गुणों का एक वस्तुपरक मूल्यांकन करना चाहिए, बल्कि कार्मिक के दोषों को ठीक करने के लिए आवश्यक सलाह, मार्गदर्शन और सहायता अधीनस्थों को हर समय देनी चाहिए।

APAR प्रणाली का एक अन्य उद्देश्य कर्मचारियों के गुणों, लक्षणों, शक्तियों और कमजोरियों के बारे में उच्चतर अधिकारियों को जानकारी प्रदान करना है ताकि उन्हें उन पदों पर रखा जा सके जहाँ उनकी सेवाओं का सबसे अधिक उपयोग किया जा सके। प्रतिवेदक अधिकारी, समीक्षा अधिकारी और स्वीकृत करने वाला प्राधिकारी को प्रतिवेदन तैयार किए गए लोकसेवक के कार्य निष्पादन उसकी अभिवृत्ति अथवा सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व की कमियों एवं सुधार के लिए मार्गदर्शन आदि का प्रतिवदेन में उल्लेख करना चाहिए। संदिग्ध चरित्र, उसकी अवैध संतुष्टि लेने के बारे में प्राप्त शिकायतें जैसे रिमार्कस् अनुमान्य नहीं हैं। प्रविष्टियाँ स्थापित तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए न कि केवल संदेह पर। विरोधाभासी तथ्य, मूल्यांकन, निष्कर्ष आदि को वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवदेन को तैयार करते समय समीक्षा स्वीकार करते समय टाला जाना चाहिए। इसके अलावा, वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवदेन में अंकित समय से पहले के तथ्यों, घटनाओं और परिस्थितियों का उल्लेख प्रतिवेदन में नहीं किया जाना चाहिए। प्रदत दिशा-निर्देशों को ध्यान देकर और पर्याप्त समय देकर समुचित सावधानी के साथ भरा जाना चाहिए। रिपोर्ट को लापरवाही अथवा सतही तौर से भरने का कोई भी प्रयास संबंधित अधिकारी की कार्य के प्रति लापरवाही का प्रदर्शन माना जाता है।

यद्यपि, वार्षिक कार्य मूल्यांकन दस्तावेज वास्तव में एक वर्ष के अंत पर होने वाला कार्य है जिसके लिए यह केवल निष्कर्षात्मक कार्यवाही न रहकर मानव संसाधन विकास, कॅरियर योजना और प्रशिक्षण का उपकरण बन सके, प्रतिवेदक अधिकारी और लोकसेवक को वर्ष के दौरान नियमित अंतराल में सम्पर्क में रहना चाहिए ताकि निष्पादन की समीक्षा की जा सके तथा आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाए जा सके।

APAR प्रणाली कर्मचारियों की योग्यता का आकलन करने के लिए डेटा भी प्रदान करती है जब पुष्टि, पदोन्नति, चयन ग्रेड, दक्षता बार पार करने और एक निश्चित आयु से परे सेवा में निरंतरता या कुछ वर्ष की सेवा पूरी होने पर इसकी आवश्यक महता हैं। इस प्रकार, वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवदेन विभिन्न प्रयोजनों के लिए बुनियादी और महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। इसलिए, सभी लोकसेवकों को जिम्मेदारी के साथ वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवदेन फॉर्म भरने का कार्य करना चाहिए।

लोकसेवक के लिए उपयोगिता : एक लोकसेवक को उसके उच्च अधिकारियों द्वारा सौपे गए कार्य/लक्ष्य की पूर्ति करना उसका प्रथम दायित्व है। वार्षिक कार्य मूल्यांकन के प्रथम पृष्ठ जिसमें लोकसेवक (शिक्षक वर्ग) को राज्य सरकार व उच्च अधिकारियों द्वारा सौपे गए कार्य के लिए यथा नामांकन, ठहराव, जनसहभागिता, विद्यालय विकास में योगदान, राजकीय योजनाओं में योगदान, परीक्षा परिणाम आदि तथा कार्यालयों में कार्यरत है लोकसेवक सौंपे गए कार्य के आधार पर यथा प्रमुख विभागीय कार्यों के भौतिक लक्ष्य, प्रमुख विभागीय कार्यों को लक्ष्य, निरीक्षण, रात्रि विश्राम आदि के माध्यम से स्वयं अपने कार्य का मूल्यांकन करता है एवं अपनी क्षमता का आंकलन स्वयं करता है। वर्ष पर्यन्त उसके द्वारा संपादित कार्य पर उससे वरिष्ठ तीन उच्च अधिकारियों की राय होती है। जिसमें उसके नियुक्ति अधिकारी भी शामिल है। यदि यह राय अच्छा, बहुत अच्छा या उत्कृष्ट के रूप में है तो एक लोकसेवक के अच्छे कार्य का लिखित

दस्तावेज होता है। जिसका महत्त्व लोकसेवक की आगे की सेवा मे बहुत उपयोगी हो सकता है।

संस्थाप्रधान/कार्यालयाध्यक्ष के लिए उपयोगिता : प्रतिवेदक एवं समीक्षा अधिकारी के रूप में वार्षिक कार्य मुल्यांकन प्रतिवेदन के माध्यम से अपने अधिनस्थ कार्मिकों के कार्य का मूल्यांकन लोकसवेक के स्वयं मूल्यांकन के साथ-साथ विभिन्न सूचकों यथा- कार्य परिणाम, बुद्धिमता, कार्य निष्पादन में तत्तपरता, पहल करने की योग्यता, नियमितता, कर्त्तव्य परायणता, के साथ-साथ लोकसेवक के सामान्य मूल्यांकन यथा- लोकसेवक के व्यक्तित्व, गुणों तथा दोषों, मानसिक गुणवत्ता, परिश्रम और निष्ठा आदि का मूल्यांकन के रूप समग्र मूल्यांकन करता है उसी के आधार पर आवश्यकता होने पर उसे लिखित सलाह/मार्गदर्शन देते है इसके माध्यम से वह अपने अधिनस्थ कार्मिकों को अपने दायित्व के प्रति प्रेरित एवं अनुशासित कर सकते है।

वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन तैयार करते समय ध्यान रखने योग्य बाते:

- APAR के प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर दाए तरफ लोकसेवक अपना नाम, पद, जन्मतिथि, विषय, एम्प्लॉय आईडी, मूल्यांकन वर्ष एवं लघु हस्ताक्षर अंकित करें।
- प्रतिवेदित (Reportee) से संबंधित सूचना (वा.का.मू. के भाग-I में क्र.सं. 01 से 07) पूर्ण होनी चाहिए।
- प्रतिवेदित अधिकारी/कार्मिक के हस्ताक्षर आवश्यक रूप से अंकित करें।
- प्रतिवेदक (Reporting Officer)/ समीक्षक अधिकारी (Reviewing Officer) के हस्ताक्षर मय नाम व मोहर आवश्यक रूप से अंकित करें।
- प्रतिवेदक व समीक्षक अधिकारी द्वारा समग्र मूल्यांकन मय लघु हस्ताक्षर आवश्यक रूप से अंकित करें।
- APAR वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन के भाग-II/III की पूर्ति आवश्यक रूप से करें।
- परीक्षा परिणाम आवश्यक रूप से संलग्न करें।
- वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन की मूल प्रति ही प्रेषित करें। छाया प्रति या मेल के द्वारा अस्वीकार्य है।
- वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन (APAR) में किसी भी प्रकार की काट-छांट नहीं करें।
- APAR संबंधित कैडर के लिए निर्धारित चैनल यथा प्रतिवेदक/समीक्षक/ स्वीकारकर्त्ता अधिकारी के अनुसार ही प्रेषित करें।
- कार्यालय स्तर APAR नियमान्तगर्त ही भरी जाए तथा APAR में प्रतिवेदक, समीक्षक अधिकारी के हस्ताक्षर मय मोहर आवश्यक रूप से अंकित करें।
- वार्षिक कार्य मूल्यांकन के भाग-II के बिन्दु सं. 01 से 02 तक में कि गई अभ्युक्तियो एवं बिन्दु सं. 05 में किए गए समग्र मूल्यांकन में आवश्यक रूप से एकरूपता होनी चाहिए।
- वार्षिक कार्य मूल्यांकन के भाग-II के बिन्दु सं. 01 से 02 तक यदि कोई प्रतिकूल अभ्युक्ति हैं, जबकि बिन्दु सं. 05 में समग्र मूल्यांकन संतोषप्रद/अच्छा/बहुत अच्छा दर्ज नहीं किया जाए।
- राज्य सरकार के पत्रांक No. F.13(51) DOP/A-1/ACR/08 दिनांक 05.06.2008 में प्रदत निर्देश बिन्दु सं. 08(03) के अनुसार प्रतिवेदित (Reportee) की सेवा प्रतिवेदक (Reporting Officer) के अधिन न्यूनतम तीन माह की सेवा आवश्यक है, की पालना की जाए।
- राज्य सरकार के आदेश क्रमांक F-14(29) कार्मिक/ACR/73 दिनांक 16.07.85 के अनुसार तीन वर्षो से पूर्व के प्रतिवेदन स्वीकार योग्य नहीं है। अत: तीन वर्ष से पूर्व के प्रतिवेदन प्रतिवेदक अधिकारी स्वयं द्वारा कार्यालय अभिलेख के आधार पर तैयार कर भिजवावे ऐसे प्रतिवेदन का समग्र मूल्यांकन संतोषप्रद से ऊपर की श्रेणी का नहीं भरा जाए।

सहायक निदेशक
गोपनीय प्रतिवेदन अनुभाग
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
मो. 9772461621

जीवन को वरदान समझ

❒ मधु उपाध्याय

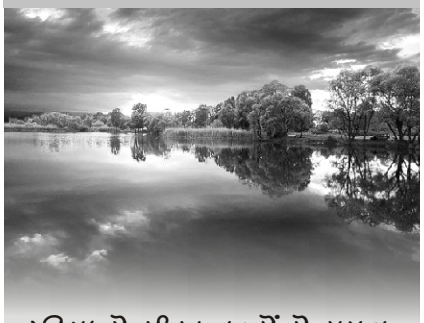

दरिया से क्षीरज लहरों से समझ,
सम्मान उसी को मिलता है।
जो दीपक बन इस धरिणी पर,
कर्त्तव्य ज्योति हित जलता है।।

नज़र रखो अपने पथ पर,
औरों की गलती मत खोजो।
इंसान कमी का पुतला है,
खुद को सर्वोत्तम मत सोचो।।

पहचान तेरी मेहनत से है,
मेहनत को ही भगवान समझ।
कर्मों से उसकी पूजा कर,
जीवन को वरदान समझ।।

तेरे कर्मों से मात-पिता का,
शीश हमेशा उन्नत हो।
आशीष मिले परमेश्वर का,
आदर्श युक्त घर जन्नत हो।।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. बिनऊआ, रूपवास, भरतपुर
मो. 9782562021

जल है तो कल है

❐ रामकिशन गोठवाल

ईश्वर ने हमें पाँच महत्त्वपूर्ण तत्त्व प्रदान किए हैं पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और आकाश। कभी आपने कल्पना की है कि इन पाँच तत्त्वों में से एक भी तत्त्व ना रहे तो क्या होगा? हर एक तत्त्व का अपना महत्त्व होता है और इनमें से जल का अलग ही महत्त्व है। प्राचीन काल से लेकर आज तक सभी ने जल का महत्त्व स्वीकार किया है। जीवों की उत्पत्ति और पालन का सम्पूर्ण चक्र जल के इर्द गिर्द घूमता है। यही कारण है कि विश्व की सभी सभ्यताएँ नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं। नदियाँ पवित्र मानी गई हैं। इसी कारण देश के समस्त तीर्थ स्थान नदियों के किनारे ही स्थित हैं। जल एक रंगहीन, गंधहीन, स्वादहीन, गतिशील, पारदर्शी द्रव है जो केवल पीने के लिए ही नहीं अपितु औषधीय और अलौकिक गुणों से युक्त है। यजुर्वेद में जल को समस्त रोगों की औषधि बताया गया है। जल एक औषधि के रूप में विभिन्न देशों के उपचारशास्त्र, आयुर्विज्ञान व चिकित्सा पद्धतियों में सर्वोच्च स्थान रखता है। चरक और सुश्रुत संहिता के साथ सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद और आयुर्वेदिक ग्रंथों में जल के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। अथर्ववेद में कहा गया है:-

हिरण्यवर्णा: शुचय: पावका
यासु जात: सविता यास्वग्नि:।
या अग्नि दधिरे सुवर्णास्ता न
आप: शं स्योना भवन्तु।।

अर्थात्-जो जल सोने के समान आलोकित होने वाले रंग से सम्पन्न, अत्यधिक मनोहर, शुद्धता प्रदान करने वाला है, जिससे सूर्यदेव और अग्निदेव उत्पन्न हुए हैं, जो श्रेष्ठ रंग वाला अग्निगर्भा है वह जल हमारी व्याधियों को दूर करके हम सबको सुख और शान्ति प्रदान करे।

शतपथ ब्राह्मण में तो आपो वै प्राण: कहते हुए जल को प्राण बताया गया है। सभी देवता जल में ही प्रतिष्ठित हैं। ब्रहस्पति स्मृति में कहा गया है:-

वापीकूप तड़ागानि उद्यानो उपवनानि च।
पुन: संस्कारकर्त्ता च लभते मौलिक फलम्।।

अर्थात्-बावड़ी, कुओं, तालाबों, वनों, उपवनों का पुन: जीर्णोद्धार करने वाला मूल रूप से इन्हे निर्मित करने वाले (ईश्वर) के फल को प्राप्त करता है। गोस्वामी तुलसीदास ने जल को पंच तत्त्वों में मान्यता देकर इस शरीर में जल की मात्रा तथा स्थिति का निर्देश देते हुए सहज, सरल भाषा में लिखा है:-

क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच तत्त्व यह अधम शरीरा।।

यह निर्विवाद सत्य है कि सभी जीवित प्राणियों की उत्पत्ति जल से हुई है। बिना जल जीवन संभव नहीं है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जहाँ जल उपलब्ध है और इसी कारण पृथ्वी पर जीवन मौजूद है। अत: कहा जाता है कि जल ही जीवन है।

जलेन जीवनं भूमौ जलं रक्षति रक्षितम्।
जले नष्टे जगत् नष्टं जलं रक्ष्यं च जीवितुम्।।

अर्थात-भूमि पर जल ही जीवन है। जो जल की रक्षा करता है, जल स्वयं उसकी रक्षा करता है। जल के नष्ट होने पर समस्त संसार नष्ट हो सकता है। अत: यदि हमें जीवित रहना है तो जल का संरक्षण करना चाहिए। इस तथ्य को उद्घाटित करती राजस्थानी भाषा की ये पंक्तियाँ:-

घी ढुळै तो मारो काईणी बिगड़े,
पाणी ढुळै तो मारो जियो झळ जाये।
पाणी सूं फसलां पकै, फल फूलां रो ढेर,
पाणी जद रूठै, तो धरती पर अंधेर।।

और कविवर रहीम के शब्दों में:-

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।

जल के भौतिक, रासायनिक और जैविक विशिष्टताओं में मानवीय क्रियाओं द्वारा होने वाला अवांछित परिवर्तन जिससे मानव और समस्त जीवों पर बुरा प्रभाव पड़ता है, जल प्रदूषण कहलाता है। आज के इस औद्योगीकरण युग में जल संरक्षण एवं संचयन की महती आवश्यकता है क्योंकि सम्पूर्ण पृथ्वी पर 71 प्रतिशत भाग जल एवं 29 प्रतिशत भाग स्थल है। दुनिया में 99 प्रतिशत जल महासागरों, नदियों, झीलों, झरनों आदि में है जो पीने योग्य नहीं है। महज 1 प्रतिशत या इससे भी कम पानी पीने योग्य है। इसलिए पानी की बचत आज की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। पानी की कमी इसके अनावश्यक उपयोग के कारण हो रही है। जनसंख्या वृद्धि के साथ ही औद्योगीकरण एवं असीमित विदोहन से उत्तरोत्तर पानी कम होता जा रहा है। इसीलिए संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं इसके सदस्य देशों द्वारा 22 मार्च को 'विश्व जल दिवस' मनाया जाता है।

वर्तमान में संसार के समक्ष ग्लोबल वॉर्मिंग सबसे बड़ी समस्या है और इसी कारण समुद्री जल स्तर में वृद्धि हो रही है। कहीं सूखा पड़ रहा है, कहीं अतिवृष्टि हो रही है तो कहीं अनावृष्टि। स्वच्छ और ताजा जल मानव के साथ ही अन्य जीवों एवं वनस्पतियों के लिए आवश्यक है लेकिन दुनिया के कई भागों में, विशेषकर विकासशील देशों में भयंकर जल संकट है और अनुमान है कि सन् 2030 तक विश्व की अधिकांश जनसंख्या जल संकट से दो-चार होगी। विश्व की अर्थव्यवस्था में भी जल का अहम स्थान है। क्योंकि यह रासायनिक पदार्थों की एक विस्तृत शृंखला के लिए विलायक के रूप में कार्य करता है और औद्योगिक प्रशीतन व परिवहन को सुगम और सस्ता बनाता है। औद्योगिक क्रियाओं के फलस्वरूप पैदा हुए प्रदूषकों को बिना उपचार के सीधे ही जल धाराओं में प्रवाहित कर दिया जाता है जिससे झीलों, नदियों, समुद्रों व सतही जल स्रोतों के साथ ही भूमिगत जल भी प्रदूषित हो जाता है। जिसका सीधा प्रभाव मानवों, वन्य जीवों व वनस्पतियों पर पड़ता है। जल प्रदूषण के कारण विश्व में अनेक बीमारियाँ पनप रही हैं जिससे लाखों लोग काल के गाल में समा रहे हैं। चीन जैसे विकसित देशों का 90 प्रतिशत जल प्रदूषित हो गया है। एक अनुमान के अनुसार चीन के 150 लाख लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं हो रहा है। चूँकि 85 प्रतिशत वर्षा समुद्र में होती है इसलिए नदियों व झीलों में जितना जल है वह पीने के लिए पर्याप्त नहीं है। एक शोध के मुताबिक प्रति 50 किलोग्राम समुद्री जल पर एक ग्राम शुद्ध जल उपलब्ध होता है। तीव्र औद्योगीकरण एवं असीमित विदोहन के कारण पानी की निरन्तर कमी होती जा रही है। अनुमान है कि एक किलोग्राम कागज उत्पादन के लिए 90 लीटर, एक टन इस्पात उत्पादन के लिए 2650 लीटर, एक टन सीमेंट उत्पादन के लिए

2850 लीटर जल की आवश्यकता होती है। एक बार काम आने के बाद जल प्रदूषित हो जाता है और व्यर्थ बह जाता है। प्रदूषित जल पीने से हैजा, पेचिस, क्षयरोग, पीलिया, उदर संबंधी रोग उत्पन्न हो जाते हैं, साथ ही प्रदूषित जल के साथ फीताकृमि, गोलकृमि आदि जीवाणु मानव शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। जल में उद्योगों से मिलने वाले अपशिष्ट पदार्थ जल स्रोतों के साथ-साथ वहाँ के वातावरण को भी गर्म व प्रदूषित करते हैं जिससे समुद्री वनस्पतियाँ व जीव नष्ट हो जाते हैं और जलीय पर्यावरण असन्तुलित होने का खतरा पैदा हो जाता है। समुद्र में परमाणु परीक्षण करने से जल में नाभिकीय तत्त्वों के मिलने से तथा हानिकारक विकिरणों से समुद्री जीव नष्ट हो रहे हैं। जल प्रदूषण को रोकने व जल को संरक्षित करने की दिशा में हमें व्यक्तिगत, सामूहिक, सामाजिक, सरकारी, गैर सरकारी तथा वैश्विक स्तर पर अभियान चलाने की महती आवश्यकता है। खासकर उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्टों को समुद्री जल या भूमिगत जल में मिलने से रोकना चाहिए। विकसित देशों द्वारा सर्वाधिक प्रदूषण फैलाया जाता है अत: उन देशों को भी इस दिशा में ठोस कदम उठाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समुद्रों में किए जा रहे परमाणु परीक्षणों पर रोक लगाकर पृथ्वी के साथ ही मानव जाति को नष्ट होने से रोका जा सकता है। वर्षा जल को संचित करके तथा व्यर्थ बहते पानी को भूमि में पुनर्भरण करके मानव संतति और पृथ्वी को बचाया जा सकता है। मेग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित राजेन्द्र सिंह, पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग जैसे अनेक पर्यावरणविद् एवं भूगोलवेत्ता पर्यावरण को बचाने में लगे हुए हैं, क्योंकि जल पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण घटक है। राजस्थान पत्रिका का अमृतं जलम् अभियान जल संरक्षण रूपी यज्ञ की आहूति है। पत्रिका का यह प्रयास अहम व प्रेरणादायी है। इस अभियान की शुरुआत 2004 में हुई और पिछले 16 वर्षों से अनवरत जारी है। इस अभियान में लगभग 10.5 लाख लोगों ने श्रमदान किया है जो अनुकरणीय एवं प्रेरणादायी है।

प्राध्यापक (भूगोल)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिलारपुर,
(नीमराना अलवर) (राज.)
मो: 9166060320

पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन में विद्यालयों की भूमिका

❐ **राजकुमार तोलंबिया**

हमारे चारों ओर विभिन्न अवयवों से बने आवरण को पर्यावरण कहते हैं। ये सभी अवयव पर्यावरण में एक निश्चित प्रतिशत के रूप में विद्यमान होते हैं। यदि इन अवयवों के प्रतिशत में परिवर्तन होता है तो यह पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए अधिकाधिक पौधारोपण के साथ-साथ जल वायु आदि को प्रदूषित करने वाले विभिन्न कारकों पर रोक लगानी होगी। यदि हम पर्यावरण संरक्षण की बात करें तो हमारे मन में सर्वप्रथम यह विचार आता है कि हम वृक्षों की कटाई रोककर एवं अधिक से अधिक पौधारोपण को प्रोत्साहित कर पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं। सघन पौधारोपण में विद्यालयों की सशक्त भूमिका होती है जिसमें विद्यालय में कार्यरत अध्यापक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।

विद्यालयों में संचालित होने वाले इको क्लब, स्काउट, एनसीसी, एनएसएस आदि के माध्यम से विद्यालय परिसर में या आसपास गाँव में सार्वजनिक स्थानों पर पौधारोपण कर उनकी सुरक्षा व देखभाल करके हम पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दे सकते हैं ।

अध्यापक रोल मॉडल होते हैं- अध्यापक छात्रों के रोल मॉडल होते हैं व वे उनके व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। यदि अध्यापक स्वयं गड्ढे खोदकर पौधारोपण करेंगे एवं पौधों की सुरक्षा करेंगे तो उनकी देखा देखी में उनके छात्र भी गड्ढे खोदकर के पौधे लगाएंगे व उनकी सुरक्षा करेंगे। अध्यापक छात्रों को प्रभावित करने में सबसे ज्यादा सक्षम होते हैं। यदि वे छात्रों के मानस पटल पर पौधारोपण करने व पर्यावरण की सुरक्षा करने का भाव पैदा करेंगे तो अवश्य ही छात्र उनका अनुसरण करेंगे व छात्र पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अग्रसर होंगे।

व्यावहारिक रूप में छात्रों को पिकनिक के तौर पर प्रकृति के सानिध्य में ले जाना, उनसे रूबरू कराना तथा प्रकृति से छात्रों के प्रेम को बढ़ाने में अध्यापकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। साथ ही छात्रों को गंदी बस्तियों व कल कारखानों से निकलने वाले दूषित पानी के नालों पर ले जाकर वास्तविक स्थिति से यदि रूबरू कराएंगे तो अवश्य ही छात्रों के मन में पर्यावरण के प्रति प्रेम उत्पन्न होगा। वे अधिकाधिक पौधरोपण के लिए प्रेरित होंगे।

शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में विभिन्न उत्सव पर्यावरण से संबंधित दिवस जैसे पर्यावरण दिवस, विश्व पृथ्वी दिवस, वन महोत्सव व वन सप्ताह आदि का आयोजन कर छात्रों को अधिक से अधिक पेड़ लगाकर उनकी सुरक्षा के लिए प्रेरित करेंगे। साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा का भी संकल्प लेंगे।

पर्यावरण संरक्षण पर विभिन्न प्रतियोगिता, चित्र प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, क्विज व वार्ता आदि का आयोजन कर अध्यापक छात्रों को उनमें भाग लेने व उनके मानस पटल पर पर्यावरण संरक्षण पर्यावरण के प्रति प्रेम भाव उत्पन्न करके वे छात्रों को पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति अत्यधिक जागरूक कर सकते हैं।

विभिन्न रैलियों का आयोजन करके एवं दीवारों पर नारा लेखन करवा कर पूरे गाँव एवं समाज में पर्यावरण के प्रति चेतना जाग्रत करने में अध्यापकों की सशक्त भूमिका होती है। जन जागरूकता- अध्यापक जन जागरूकता फैलाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे छात्रों को प्रतिदिन कहानियाँ सुनाकर, बाल सभा में, रैली, चौपाल एवं नुक्कड़ पर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करके समाज, छात्रों व अभिभावकों में जागरूकता ला सकते हैं। विद्यालयों के बच्चों को विभिन्न समूह जैसे-वृक्ष मित्र, रूख भायला आदि बनाकर उन्हे पौधों की देखभाल व सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती हैं।

विद्यालय में बच्चों के प्रवेश व स्थानांतरण के समय प्रत्येक विद्यार्थी से एक पौधा लगवाकर, उन्हें सुरक्षा का संकल्प दिलाकर भी विद्यालय पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

गाँव में व समाज में अध्यापकों की बात को तवज्जो दी जाती है यदि अध्यापक छात्रों अभिभावकों व समाज को विभिन्न अवसरों पर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन पर वार्ता व पर्यावरण प्रदूषण के खतरों से अवगत कराकर अधिकाधिक पौधारोपण के लिए प्रेरित करेंगे तो समाज में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव आएगा व पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बस्सी,
चित्तौड़गढ़ (राज.)-312022
मो : 9929254777

सांख्यिकी विशेष

वर्तमान संदर्भ में सांख्यिकी का महत्त्व

❒ राजेश कुमार

Statistics शब्द की उत्पत्ति जर्मन भाषा के शब्द Statistik, लैटिन भाषा के Status अथवा इटेलियन शब्द Statista से हुई मानी जाती है जिन सभी का शब्दिक अर्थ है राजनीतिक राज्य। आधुनिक सांख्यिकी के जन्मदाता (Father of Statistics)जर्मनी के सर गॉटफ्रायड एकेनवाल हैं तथा भारत में सांख्यिकी के जनक श्री प्रशान्त चन्द महालनोविस हैं। सांख्यिकी ज्ञान विज्ञान की वह शाखा हैं जिसके अंतर्गत तथ्यों को संख्यात्मक रूप में एकत्रित करने एवं प्रस्तुत करने, उनका वैज्ञानिक विश्लेषण करने, उनके तर्कपूर्ण एवं विवेकशील निर्णय निकालने की प्रविधियों, प्रक्रियाओं का सुव्यवस्थित अध्ययन किया जाता है- वर्तमान में सांख्यिकी के निम्न कार्य हैं-

1. जटिल तथ्यों को सरल बनाना।
2. तथ्यों को तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत करना।
3. नीति निर्धारण में सहायता करना।
4. अनुमान लगाना।
5. नियमों के निर्माण एवं जाँच में सहायक होना।
6. समस्या के महत्त्व पर प्रकाश डालना।
7. सामाजिक परिवर्तनों के माप में सहायता करना।

सांख्यिकी अनुसंधान के आयाम (Step of Stastistical investigation)- जो सांख्यिकीय विधियों से प्राप्त किया जा सकता है, संमक सांख्यिकी अनुसंधान की आधारशिला है समंकों को वैज्ञानिक ढंग से संकलित करना, उनका विश्लेषण करके किसी समस्या का निर्वचन करना।

सांख्यिकी अनुसंधान के निम्नलिखित सोपान हैं-

1. अनुसंधानों का आयोजन करना।
2. समंकों का संकलन।
3. संकलित समंकों का सम्पादन।
4. समंकों का वर्गीकरण एवं सारणीयन
5. समंकों का विश्लेषण।
6. निर्वचन एवं रिपोर्टिंग।

समंकों का संकलन- समंक ही वे ईंट हैं जिनसे सांख्यिकी का मकान बनाया जाता है, समंकों के संकलन में विवेक प्रमुख आवश्यकता है और अनुभव मुख्य शिक्षक, समंकों का संकलन दो प्रकार से किया जाता है।

1. प्राथमिक समंक 2. द्वितीयक संमक

प्राथमिक समंक- वे समंक जो किसी अनुसंधान के लिए किसी अनुसंधानकर्ता द्वारा मौलिक रूप से पहली बार एकत्र किए जाते हैं।

द्वितीयक समंक- वे समंक हैं जो पहले से ही उन्य व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा किसी विशेष उद्देश्य के लिए एकत्र किए जा चुके होते हैं और अनुसंधानकर्ता केवल उनका प्रयोग करता है। अतः ऐसे समंक नए एवं मौलिक नहीं होते हैं।

प्राथमिक समंक अनुसंधान के सर्वथा अनुकूल होते हैं और उनके छानबीन की विशेष आवश्कता नहीं होती जबकि द्वितीयक समंकों का प्रयोग करने से पूर्व उनकी शुद्धता की पूरी जाँच, पड़ताल और आवश्यकतानुसार उनमें समायोजन करने पड़ते हैं।

प्राथमिक संग्रहण की निम्न विधियाँ हैं-

1. प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान
2. अप्रत्यक्ष मौखिक अनुसंधान
3. स्थानीय स्रोतों से सूचना प्राप्ति।
4. प्रश्नावली के माध्यम से।
5. प्रगणकों द्वारा सूचना प्राप्ति

प्रतिदर्श (sample):- सांख्यिकी के अंतर्गत प्रतिदर्श का बड़ा महत्त्व है, लेकिन एक अच्छे प्रतिदर्श के चयन के लिए निम्नलिखित आवश्यक तत्व होने चाहिए।

प्रतिनिधित्व (representativeness)- जिसमें समंकों की सभी विशेषताएँ पाई जाए, ये तभी संभव है जब प्रत्येक इकाई को प्रतिदर्श में चुने जाने के समान अवसर प्राप्त हों।

एकरूपता(homogeneity)- समग्र में से दो प्रतिदर्श छांटे जाएँ तो उनमें समानता होनी चाहिए।

स्वतंत्रता (independence)- इससे अभिप्राय है कि किसी एक इकाई का न्यायदर्श में शामिल होना दूसरी पर निर्भर नहीं होना चाहिए।

प्रतिदर्श आंकडों की विश्वसनीयता (Relativity of sample data)- दो नियमों से प्रभावित होती है।

1. **सांख्यिकी नियमितता का नियम (law of statistical regularity)-** यह नियम गणित के संभावना सिद्धान्त पर निर्भर है। यह नियम बताता है कि अगर निर्देशन विधि द्वारा समग्र में से प्रतिदर्श का चयन किया जाए तो उस प्रतिदर्श में समग्र की सारी विशेषताएँ होती हैं यह नियम निर्देशन विधि द्वारा प्रतिदर्श चयन करने पर लागू होती है। यह नियम बीमा व्यवसाय, दुर्घटनाओं, अपराधों आदि पर आधारित है।
2. **महांक जटता का नियम (law of inertia of large number)** निर्देशन के सिद्धान्त में इस नियम का बहुत महत्त्व है, इस नियम के अनुसार अन्य बातें समान रहने पर प्रतिदर्श का आकार जितना बड़ा होगा उतनी शुद्धता की मात्रा अधिक होगी, आर्थिक आंकड़े एकत्रित करने में इस विधि का बहुत महत्त्व है।

- **प्रतिदर्श अनुसंधान (sample investigation) -** इसके द्वारा समस्या से संबंधित प्रत्येक इकाई के विषय में सूचनाएँ न प्राप्त करके केवल समग्र में से चयनित इकाइयों में से सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं तो इन सूचनाओं का विश्लेषण करके प्राप्त परिणामों को पूरे समग्र के विषय में लागू किया जाता है इस प्रकार प्रतिदर्श अनुसंधान में केवल चयनित इकाईयों में ही सम्पर्क स्थापित किया जाता है।

प्रतिदर्श की विधियां (method of sampling)–

1. **दैव प्रतिदर्श (random sampling)–**

i लॉटरी विधि
ii टिपेट विधि
iii इकाईयों को निश्चित क्रम में व्यवस्थित करना।

2. **सविचार प्रतिदर्श (deliberate sampling)**
3. **व्यस्थित प्रतिदर्श (systematic sampling)**
4. **स्तरित प्रतिदर्श (stratified sampling)**
5. **अभ्यश प्रतिदर्श (quota sampling)**
6. **विस्तृत प्रतिदर्श (extensire sampling)**
7. **बहुस्तरीय प्रतिदर्श (multistage sampling)**
8. **सुविधाजनक प्रतिदर्श (convenience sampling)**

गुण (Merits):–

- इस विधि में कम समय व कम धन खर्च होता है।
- इस विधि का अधिकतर प्रयोग बाजार के शोध अध्ययन में प्रयोग होता है।

दोष (Demerits)

- यह विधि अधिक लोकप्रिय नहीं है।
- परिणामों में अधिक शुद्धता नहीं होती।

संकलित समंकों का सम्पादन (Editing of data)– अनुसंधान के अंतर्गत संकलित सांख्यिकी सामग्री में अशुद्धियों व विभ्रमों की विधिवत् जाँच करने की प्रक्रिया को ही समंक सम्पादन कहते हैं।

समंकों का वर्गीकरण एवं सारणीयन

वर्गीकरण– समंकों के संकलन के बाद सम्पादन होता है और सम्पादन के बाद वर्गीकरण होता है। वर्गीकरण में समानता और असमानता के आधार पर आँकड़ों को विभिन्न वर्गों तथा उपवर्गों में विभाजित किया जाता है अतः संग्रहित सूचनाओं में विषम तत्वों में अजातियता उत्पन्न करने का संकेत वर्गीकरण द्वारा दिया जाता है।

कौनर के शब्दों में– वर्गीकरण एवं सारणीयन संकलित सामग्री के संक्षिप्तीकरण की एक प्रक्रिया है यह न केवल समंकों को उनकी विशेषताओं के आधार पर प्रकट करती है बल्कि सांख्यिकीय सामग्री के निर्वचन की आधारशिला है।

वर्गीकरण के उद्देश्य –

i समंकों को सरल व संक्षिप्त बनाना
ii तुलना में सहायक
iii स्पष्टता व निश्चितता आना
iv तर्कपूर्ण व्यवस्था प्रदान करना
v सारणीयन का आधार प्रस्तुत करना
vi वर्गीकरण की विशेषताएँ/नियम
vii वर्गीकरण में व्यापकता व स्पष्टता होनी चाहिए।
viii स्थिरता
ix अनुकूलता
x लोचशीलता
(xi) गणितीय शुद्धता

वर्गीकरण के प्रकार

1. **भौगोलिक वर्गीकरण:–** इसका आशय ऐसे वर्गीकरण से है जिसमें आंकड़ों का वर्गीकरण स्थान के आधार पर होता है। भारत की जनसंख्या को विभिन्न राज्यों के आधार पर प्रस्तुत करते हैं, गेंहूँ के उत्पादन को राज्यवार प्रस्तुत करें तो इसे भौगोलिक वर्गीकरण कहा जाएगा।
2. **कालानुक्रमी वर्गीकरण–** आंकड़ों का वर्गीकरण काल के आधार पर किया जाता है। इस प्रकार की श्रेणियां काल श्रेणी कहलाती हैं।
3. **गुणात्मक वर्गीकरण–** जब सांख्यिकीय तथ्यों का वर्गीकरण वर्णनात्मक विशेषताओं के आधार पर अथवा गुणों के आधार पर तथा लिंग (sex) साक्षरता, वैवाहिक स्थिति, बेरोजगारी तथा व्यवसाय आदि आधार पर किया जाता है तो इसे गुणात्मक वर्गीकरण कहते हैं।
4. **मात्रात्मक वर्गीकरण–** मात्रात्मक वर्गीकरण से आशय उस वर्गीकरण से है जो संख्याओं पर आधारित होते हैं। जो ऐसे लक्षणों पर आधारित होते हैं जिनकी प्रत्यक्ष मात्रात्मक या संख्यात्मक माप संभव है यथा–वजन, आय, उत्पादन किसी कक्षा में विद्यार्थियों के प्राप्तांक।

सारणीयन (Tabulation)– सांख्यिकीय अनुसंधान के समंकों के वर्गीकरण के बाद अगला सोपान सारणीयन का है सारणीयन किसी विचाराधीन समस्या को स्पष्ट करने के उद्देश्य से किया जाने वाला सांख्यिकीय तथ्यों का क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण है

सारणीयन के उद्देश्य

- समंकों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करना।
- समंकों को संक्षिप्त ढंग से प्रकट करना।
- समस्या/अनुसंधान को अधिक सरल व स्पष्ट बनाना।

सारणीयन का महत्त्व –

- सरलता
- स्थान समय की बचत
- तुलनात्मक अध्ययन में सुविधा
- आकर्षक प्रदर्शन
- सांख्यिकीय विवेचन में सहायक

सारणीयन के प्रमुख अंग :–

i शीर्षक
ii खाने व पंक्तियां
iii खानों की सलिंग
iv तुलनात्मक अध्ययन
v पदों की व्यवस्था
vi टिप्पणियां
vii स्रोत
viii इकाई एवं व्युत्पन्न समंक

सांख्यिकी के अंतर्गत समंकों के विश्लेषणों के लिए केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप, अपकिरण माप, विषमता एवं कुकुदत्ता, सहसंबंध विश्लेषण, प्रतीप गमन विश्लेषण, सूचकांक, कालश्रेणी, प्रायिकता, सैद्धांतिक आवृत्ति बंटन के अन्तर्गत द्विपद बंटन, प्वासन बंटन, प्रसामान्य बंटन आदि का प्रयोग किया जाता है।

वर्तमान समय में अपना देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व कोविड–19 वैश्विक महामारी से जूझ रहा है। इस महामारी से नए संक्रमित व्यक्तियों, मृतकों की संख्या, मृत्युदर, रिकवरी सम्बंधी तथ्यों का अंकगणितीय विश्लेषण ही सांख्यिकी महत्त्व को उजागर करता है, इस महामारी में सांख्यिकी विश्लेषण के माध्यम से ही भावी दुष्प्रभावों का आंकलन करके अपने स्वास्थ्य संरचनाओं में परिवर्तन करते हुए सरकार ने इस महामारी के नियंत्रण हेतु समुचित उपाय

अपनाए हैं।

वर्तमान में सरकारें जन कल्याण कार्य हेतु एक वार्षिक बजट का निर्माण करती हैं, जिसमें वह अपनी आय के स्रोतों एवं व्ययों का वर्णन करती हैं। इस बजट निर्माण में आंकड़ों की विशेष भूमिका होती है, क्योंकि आंकड़े ही विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय का विभिन्न मदों पर किये जाने वाले व्यय का आंकलन लगाने में मदद करते हैं, इसलिए आंकड़ों को प्रशासन या सरकार के नेत्र कहा जाता है।

भारत की जनगणना विश्व की सबसे बड़ी प्रशासनिक एवं सांख्यिकीय प्रक्रिया है जिसमें प्राथमिक समंकों के आधार पर आमजन से सम्बंधित सूचनाएँ एकत्र की जाती हैं। इन्हीं सूचना/समंकों के आधार पर वर्तमान सरकारें, संस्थाएँ, संगठन आदि अपने-अपने क्षेत्रों से सम्बंधित नीति/योजनाएँ तैयार करते हैं।

वर्तमान समय में बाजार कीमतों में हो रहे उतार-चढ़ावों का अध्ययन एवं विश्लेषण सांख्यिकी विधियों व सूचकांक के माध्यम से किया जाता है।

जनकल्याणकारी सरकारें लोगों के जीवन स्तर एवं जीवन निर्वाह स्तर में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन कर बाजार कीमतों पर नियंत्रण एवं नियमन करती हैं जिसके आधार पर कार्मिकों के वेतन एवं भत्तों का समय-समय पर निर्धारण किया जाता है।

निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर से प्रकाशित पुस्तक 'शिक्षा की प्रगति' सरकारी गैरसरकारी विद्यालयों के विद्यालयवार, संकायवार, कक्षावार, वर्गवार एवं शिक्षक-विद्यार्थियों अनुपात आदि के रूप में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सांख्यिकीय क्रियाओं का उपयोग करते हुए राज्य में शैक्षिक उन्नयन एवं शैक्षिक संसाधनों में प्रगति करने हेतु नियोजकों को एक दृष्टि/दर्पण प्रस्तुत किया है। सांख्यिकी ही विभिन्न विज्ञानों से किए गए प्रयोगों एवं परीक्षणों के अधूरेपन को पूर्ण करती है, सांख्यिकी इन मापों का अधिक सटीक वर्णन प्रस्तुत करते हुए विस्तार, अनुमान एवं संभाव्यताओं का वर्णन करती है।

सांख्यिकी अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा
भरतपुर, संभाग भरतपुर, **मो: 8003441330**

अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता का समय

❒ निरंजन द्विवेदी

15 मार्च विश्व उपभोक्ता दिवस, देश में नया उपभोक्ता कानून लागू होने के बाद से मनाया जा रहा है। नए कानून की क्रमशः क्रियान्विति के बाद बाजार व्यवस्थाओं में आम उपभोक्ता के हित संरक्षण की बात और अधिक सशक्त हो रही है क्योंकि उत्पादक व विक्रेता से लेकर विज्ञापन देने व विज्ञापन करने वाले तब जवाबदेही के दायरे में आ रहे हैं। अब उपभोक्ता नयाय के लिए विभिन्न स्तरों पर कार्यवाही कर सकता है और न्यायिक प्रक्रिया के भी सरलीकरण का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। आम उपभोक्ता की जागरूकता के इस दौर में मिलावट, स्वच्छता और अपने कर्त्तव्यों के प्रति जिम्मेदारी को लेकर भी ध्यान देने की जरूरत है। वैश्विक संकट कोरोना ने सारी व्यवस्थाओं के प्रभावित किया है और स्वच्छता व सावधानी के प्रति गंभीरता बरतने प्रेरित किया है।

उपभोक्ता को स्वास्थ्य एवं सुरक्षित गुणवत्ता युक्त सामग्री व सेवाओं को लेकर विभिन्न स्तरों पर नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। नए कानून में उपभोक्ताओं से यह अपेक्षा की गई है कि वो अपने उपभोक्ता अधिकारों के साथ एक नागरिक होने के नाते कर्त्तव्यों पर भी ध्यान दें। उपभोक्ता स्वच्छता व स्वास्थ्य संरक्षण में सभी की भागीदारी, प्रदूषण नियंत्रण में मदद, प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के अभियान में सहयोग, कचरे के निस्तारण में सहयोग, सस्ती के स्थान पर गुणवत्तायुक्त वस्तुओं/सेवाओं पर ध्यान देना, विभिन्न उत्पादों की गुणवत्ता के मूल्यांकन, पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम को गति आदि विषयों के प्रति सजग रहकर देश, राष्ट्र व समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करें। देश में अब तक बनाए गए उपभोक्ता हित सम्बन्धित कानूनों के सकारात्मक पक्ष पर ध्यान दें तो इनसे उपभोक्तओं के लिए कई हितकारी प्रावधान कायम हुए हैं जिनमें विभिन्न वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादकों द्वारा कस्टमर केयर और उपभोक्ता राहत के नाम पर की जा रही व्यवस्थाएँ इस बात का संकेत है कि उत्पादक वर्ग उपभोक्ताओं में बढ़ती जागरूकता को समझकर अपनी व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने व उपभोक्ताओं के बारे में सोचने के लिए मजबूर हुआ है।

बाजार व्यवस्था का विस्तार उपभोक्ताओं को चयन की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है तो विभिन्न वस्तुओं व सेवाओं को लेकर सुरक्षा पर दिया जा रहा ध्यान उपभोक्ताओं के जीवन व सम्पत्ति के लिए सुरक्षा को कायम करने के प्रयासों को बल प्रदान कर रहा है। बाजार व्यवस्था में सूचनाएँ प्राप्त करने की व्यवस्था विभिन्न माध्यमों के द्वारा विस्तारित हो रही है और उपभोक्ताओं को सूचनाओं की उपलब्धता का क्षेत्र बढ़ रहा है। सुनवाई के लिए उत्पादकों द्वारा कायम की जा रही व्यवस्थाओं से लेकर उपभोक्ता कानून के प्रावधान उपभोक्ता हित में प्रभावी हो रहे हैं तो उपभोक्ता शिक्षा के लिए किए जा रहे प्रयासों का भी सकारात्मक परिणाम क्रमशः सामने आ रहा है। उपभोक्ता संरक्षण की न्यायिक प्रक्रिया के तहत मिली राहत पीड़ित उपभोक्ताओं के लिए प्रेरणा का विषय बन रही है और उपभोक्ता मंचों में प्रकरणों की बढ़ती संख्या व राहत पाते उपभोक्ताओं की तादाद भी नजर आने लगी है। बाजार व्यवस्था में आम उपभोक्ता के हितों का संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए कानूनी तौर पर काफी प्रावधान हैं और सरकारी तौर पर जारी जागरूकता कार्यक्रमों के साथ ही स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठनों द्वारा भी सजगता कार्यक्रम आयोजित कर उपभोक्ता आंदोलन का सशक्तीकरण किया जा रहा है।

उम्मीद की जानी चाहिए कि कठोर होते कानूनी प्रावधान, स्वच्छता के प्रति जागरूकता, नागरिक अधिकारों के प्रति दायित्व बोध, मिलावट को लेकर बढ़ती जन जागरूकता के चलते बाजार व्यवस्था में उपभोक्ता के लिए राहतकारी सुधार की संभावनाएँ बनेंगी। आमजन को यह भी समझना होगा कि यदि वो किसी व्यापार से जुड़े हैं तो उन्हें भी कई तरह की सेवाएँ व सामग्री अन्य स्त्रोत से लेनी है और वहाँ पर उनके साथ भी परेशानी संभव है अतः दूसरों के हित चिन्तन से उनका भी हित संरक्षण होगा, इसी जागरूकता की आवश्यकता है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मापोर,
बाँसवाड़ा (राज.)

रपट

राज्य स्तरीय बालिका पुरस्कार समारोह

❒ मोहन गुप्ता मितवा

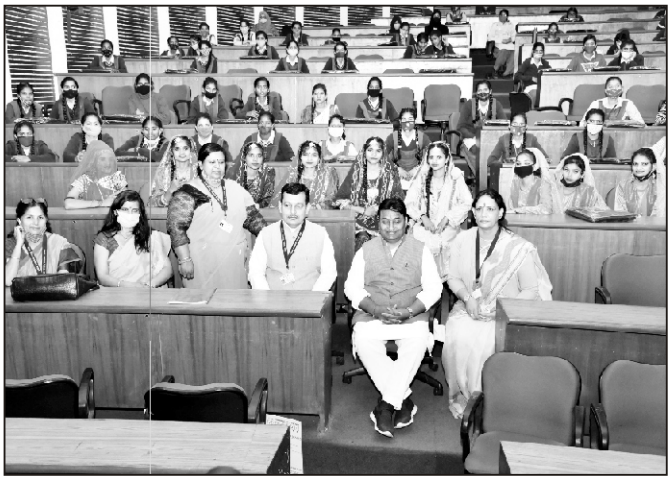

बालिका शिक्षा फाउण्डेशन की ओर से बसन्त पंचमी पर इन्दिरा गांधी पंचायतीराज संस्थान के सभागार में राज्य स्तरीय बालिका पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। समारोह में इन्दिरा प्रियदर्शिनी एवं मूक बधिर छात्राओं हेतु आर्थिक संबलता पुरस्कार की पात्र 138 बालिकाओं को पुरस्कार राशि एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। राज्य भर में गार्गी एवं बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार के अन्तर्गत इस वर्ष कक्षा 10 की 97,676 एवं कक्षा 12 की 80,316 बालिकाओं को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र का वितरण जिला एवं पंचायत समिति स्तरीय समारोह में वितरण किए गए। समारोह में मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमान् गोविन्द सिंह डोटासरा ने अपने उद्बोधन में बताया कि सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए संकल्पित एवं अत्यधिक संवेदनशील है। माननीय शिक्षामंत्री ने बताया कि राज्य में गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, कोई बालक-बालिका आर्थिक अभाव में अच्छी शिक्षा से वंचित न रहे, इस हेतु राज्य में 201 महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय प्रारम्भ किए गए हैं।

इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 में 36 बालिकाओं को कुल राशि 33,50,000/- रुपये के बैंक ड्राफ्ट, जिनमें कक्षा 10 की बालिकाओं को 75,000/- रुपये प्रति छात्रा तथा कक्षा 12 की बालिकाओं को 1,00,000/- रुपये प्रति छात्रा बैंक ड्राफ्ट एवं प्रमाण-पत्र पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए गए।

राजकीय मूक बधिर विद्यालय की कक्षा 9 से 12 में अध्ययनरत 102 बालिकाओं को 2,000/- प्रति बालिका कुल 2,04,000/- की राशि प्रदान की गई।

'मुख्यमन्त्री हमारी बेटी' योजना के अन्तर्गत कक्षा 10 में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त बी.पी.एल. एवं अनाथ बालिकाएँ जो जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करती हैं, ऐसी बालिकाओं को कक्षा 11 से स्नातक तक प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता दी जाती है, जो कक्षा 11 से 12 के लिए 1.25 लाख तथा स्नातक से स्नातकोत्तर तक 2.25 लाख रुपये आर्थिक सहायता प्रदान किये जाने का प्रावधान है।

कार्यक्रम में बालिकाओं हेतु आर्थिक संबलता पुरस्कार की समीक्षा करते हुए जो पुरस्कार केवल कक्षा 9 से 12 में अध्ययनरत बालिकाओं को दिया जाता रहा है, अब कक्षा 1 से 8 तक की बालिकाओं को भी दिया जाएगा तथा इस प्रोत्साहन राशि में भी वृद्धि की जाएगी। राज्य में वर्ष 2016 से 2019 तक 11,433 बालिकाएँ गार्गी पुरस्कार की पात्र थी जिन्हें किन्हीं कारणों से यह राशि प्राप्त नहीं हुई। उनके प्रार्थना पत्र जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक से मांगे जाएँगे और यह राशि प्रदान की जाएगी ।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रमुख शासन सचिव-शिक्षा श्रीमती अपर्णा अरोडा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बालिकाओं को दिन में बड़े सपने देखने के लिए भी प्रेरित किया तथा बालिकाओं को हर क्षेत्र में सहयोग किए जाने का आश्वासन दिया।

समारोह में विशेष अतिथि राज्य परियोजना निदेशक समसा डॉ. भंवरलाल तथा ओपन स्कूल निदेशक श्रीमती मंजू कार्यक्रम में उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम के दौरान माननीय शिक्षा राज्य मंत्री महोदय ने शिविरा पत्रिका के फरवरी-2021 के अंक का अवलोकन किया तथा प्रकाशन की सराहना भी की।

समारोह के प्रारम्भ में अतिथियों का स्वागत बालिका शिक्षा फाउण्डेशन के सचिव श्री महेश कुमार ने किया तथा आभार बालिका शिक्षा फाउण्डेशन के उपसचिव श्री तेजपाल मूंड ने किया समारोह का संचालन श्री राजेन्द्र हंस ने बखूबी किया।

मितवा स्टूडियो
नाहरगढ रोड,जयपुर
मो: 9414265628

रपट

जीवन में शिक्षा का दान ही सबसे अनमोल

❒ रामेश्वर लाल चौधरी

बीकानेर : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मूंडसर, जिला बीकानेर में मूँड परिवार द्वारा स्व. श्री लाखाराम चौधरी व श्रीमती जड़ाव देवी की पुण्यस्मृति में उनके पुत्रों श्री बेगाराम मूंड, श्री रामेश्वर लाल चौधरी (प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. मूंडसर, बीकानेर), श्री सूरजाराम मूंड व पौत्र श्री मनोज कुमार मूंड द्वारा निर्मित दो कमरों मय बरामदों का लोकार्पण समारोह दिनांक 06.02.2021 को श्रीमान् रामेश्वर डूडी पूर्व नेता प्रतिपक्ष के मुख्य आतिथ्य व श्रीमान् सौरभ स्वामी निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर तथा श्री मोडाराम मेघवाल जिला प्रमुख, बीकानेर के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर श्रीमती सुशीला सींवर पूर्व जिला प्रमुख, बीकानेर, श्री बिशनाराम सिहाग, श्री रामनिवास तर्ड सरपंच जसरासर, श्री जगदीश जाखड़, सरपंच तेजरासर, श्री मूलाराम चौधरी सरपंच प्रतिनिधि सूरतसिंहपुरा, श्रीमती सरदारी देवी सरपंच मूंडसर, श्रीमती सुमन देवी पंचायत समिति सदस्य की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा सरस्वती पूजन व दीप प्रज्वलन तथा विद्यालय की बालिकाओं द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ। मुख्य अतिथि श्री रामेश्वर डूडी पूर्व नेता प्रतिपक्ष ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा न केवल सिखाती है बल्कि एक व्यक्ति को समझदार व बेहतर इंसान बनाने में मदद करती है। शिक्षा ही जीवन है शिक्षा किसी देश की परम्पराओं, जीवन दर्शन और सामाजिक मूल्यों के अनुसार निर्धारित की जानी चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जो सभी का सर्वांगीण विकास कर सके। वास्तविक शिक्षा वही है जो हमें ऐसे बन्धनों से मुक्त कर सके जो हमारे आचरण, व्यवहार और व्यक्तित्व के निर्माण में बाधक हो।

शिक्षा ऐसी हो जो शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास कर सके। शिक्षा व्यक्ति को विनम्रता की ओर ले जाती है जिसमें

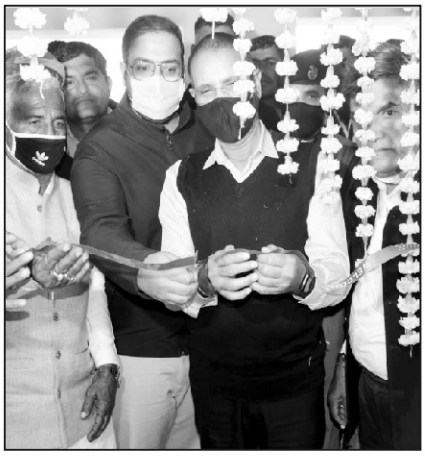

व्यक्ति को सुख और संतोष की प्राप्ति होती है और जीवन में सम्पूर्णता आती है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हमारे देश में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश और साक्षात् परब्रह्म स्वरूप माना गया है। गुरु राष्ट्र का प्रतीक, राष्ट्र का आदर्श एवं राष्ट्र का भाग्य निर्माता है। अज्ञान को नष्ट करके ज्ञान की ज्योति एक सच्चा शिक्षक ही जला सकता है। सच्चा शिक्षक वह होता है जिसमें कर्त्तव्यपरायणता, मर्यादित जीवन, सद्गुण, विषय की सम्पूर्ण जानकारी, प्रेरणा एवं चारित्रिक विशिष्टता, छात्र एवं अभिभावक से मधुर सम्बन्ध, राष्ट्र प्रेम की भावना हो। सच्चे शिक्षक में त्याग और सेवा की भावना होती है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्रीमान निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर श्री सौरभ स्वामी जी ने कहा कि शिक्षा आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा हमें एक अनुशासित जीवन विकसित करने में मदद करती है और हमें बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करती है। शिक्षा मानव को पशुता से मुक्त करके एक सामाजिक प्राणी बनाती है। वर्तमान समय में मूल्यपरक शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है। शिक्षा प्रदान करने वाले सभी घटक मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने के लिए सचेत रहें, जिनसे नैतिक स्तर उन्नत हो तथा मानवीय गुणों का विकास हो। शिक्षा का उद्देश्य है बालक का सर्वांगीण विकास। बालक की विकास यात्रा में सबसे प्रमुख हाथ होता है शिक्षा एवं शिक्षक का। शिक्षा ही बालक को जीना सिखाती है। उसे योग्य बनाती है, स्वावलम्बी बनाती है, सोचने-समझने, निर्णय लेने व तर्क करने की बुद्धि प्रदान करती है। शिक्षक ही राष्ट्र का गौरव है एवं राष्ट्र का जीवन है। जिस प्रकार भवन निर्माण में योग ईंट का होता है वही योग राष्ट्र निर्माण में शिक्षक का होता है। शिक्षक छात्र का मार्गदर्शन ही नहीं करता बल्कि वह राष्ट्र का भी मार्गदर्शक होता है। आदर्श गुरु मानव को सही शिक्षा की ओर प्रवृत कर सकता है। नकारात्मक प्रवृतियों से पीढ़ी को बचाने एवं उनके सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाने में गुरु की महत्ती भूमिका है। अच्छे एवं उत्तरदायी नागरिक तैयार करना गुरु का महत्वूर्ण कार्य है। गुरु का नाम श्रद्धा और निष्ठा को परिपक्व करता है। गुरु अपने शिष्य के भ्रम को दूर कर उसे सद्मार्ग की ओर प्रवृत्त करता है और लोहे को पारस बना देता है।

लोकार्पण समारोह में पधारने पर अतिथियों का उपस्थित ग्रामीणों व मूंडसर सरपंच श्रीमती सरदारी देवी, पंचायत समिति सदस्य श्रीमती सुमन देवी, श्री हुनताराम मूंड, श्री रामदेव मूंड, श्री चतराराम मूंड, सेवानिवृत अध्यापक श्री रूघाराम, श्री सोहनलाल, विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रामेश्वरलाल चौधरी, भामाशाह तथा प्रेरक श्री मनोज कुमार मूंड ने स्वागत किया। विद्यालय की बालिकाओं ने ''केसरिया बालक आओ नी पधारो म्हारे देश'' गीत पर मनमोहक नृत्य सहित अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रामेश्वरलाल चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
मूंडसर (बीकानेर)
मो. 9460923356

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2021

1. विद्यालय संचालन में श्रेष्ठ विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करने तथा अन्य विद्यार्थियों की अनुप्रेरणा हेतु हैड–बॉय एवं हैड–गर्ल बनाए जाने के संबंध में।
2. सूचना का अधिकार अधिनियम–2005 के प्रावधानों के अंतर्गत आमजन को सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के बाबत।
3. सूचना का अधिकार अधिनियम–2005 के प्रावधानों के अंतर्गत आमजन को सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के बाबत।
4. राज्य स्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में।

1. विद्यालय संचालन में श्रेष्ठ विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करने तथा अन्य विद्यार्थियों की अनुप्रेरणा हेतु हैड–बॉय एवं हैड–गर्ल बनाए जाने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा–स/22444/विविध/2019/231 दिनांक : 09.02.2021 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा ● विषयः विद्यालय संचालन में श्रेष्ठ विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करने तथा अन्य विद्यार्थियों की अनुप्रेरणा हेतु हैड–बॉय एवं हैड–गर्ल बनाए जाने के संबंध में।

विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए संस्थाप्रधान, शिक्षकों के अतिरिक्त उसी विद्यालय में अध्ययनरत वे विद्यार्थी भी रोल–मॉडल, प्रेरक, मार्गदर्शक एवं सहयोगी होते हैं, जो कि विद्यालयी गतिविधियों में अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं। इन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की प्रतिभा अन्य विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय बन सकती है। अतः राजकीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में एक प्रतिभाशाली बालक एवं एक प्रतिभाशाली बालिका को विद्यालय संचालन, अकादमिक गतिविधियों तथा विकास कार्यों में विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए हैड–बॉय और हैड गर्ल बनाया जाना है। इसकी संपूर्ण प्रक्रिया अग्रांकितानुसार रहेगी।

1. **चयन समितिः–** हैड बॉय व हैड–गर्ल का चयन शाला में निम्नांकित चयन समिति करेगीः–

i. शाला प्रधान।
ii. विद्यालय का वरिष्ठ अध्यापक/व्याख्याता जो कि एस.डी.एम.सी. का सदस्य सचिव हो।
iii. विद्यालय का शारीरिक शिक्षक।
iv. विद्यालय का पुस्तकालयाध्यक्ष/पुस्तकालय प्रभारी।
v. एक शिक्षिका महिला प्रतिनिधि के रूप में।
(यदि महिला शिक्षिका नहीं हो तो किसी अन्य शिक्षक का चयन किया जा सकता है।)

2. **चयन का आधारः–** हैड बॉय व हैड गर्ल के चयन निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर किया जाना हैः–

i. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में हैड बॉय और हैड गर्ल कक्षा–11 में अध्ययनरत हो। माध्यमिक विद्यालय होने की स्थिति में उक्त कक्षा–9 होगी।
ii. चयन हेतु विचारणीय विद्यार्थी का गत बोर्ड कक्षा की उत्कृष्ट शैक्षिक उपलब्धि।
iii. विद्यार्थी का सह–शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी।
iv. विद्यार्थी का शिक्षकों के साथ व्यवहार।
v. विद्यार्थी का सहपाठियों एवं अपने से छोटों से व्यवहार।
vi. विचारणीय विद्यार्थी की नेतृत्व क्षमता।

3. **नामों की घोषणा एवं बैज आवंटनः–** उक्त आधार पर श्रेष्ठतम प्रतिभा वाले बालक–बालिका का हैड–बॉय व हैड–गर्ल का चयन कर उसकी घोषणा नोटिस बोर्ड पर सूचना चस्पा कर के सार्वजनिक की जानी है। इसके उक्त आदेश के उपरांत आयोज्य होने वाली प्रथम अध्यापक–अभिभावक समिति (पी.टी.एम.) की बैठक में इन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को हैड–बॉय एवं हैड गर्ल का बैज पहना कर अतिथियों के समक्ष प्रोत्साहित करना है। उक्त कार्यक्रम में इन हैड–बॉय एवं हैड–गर्ल को बैज पहनाने की कम से कम दो फोटो वाट्सअप समूहों में अवश्य साझा की जाए।

4. **हैडबॉय व हैड गर्ल के कार्यः–** हैड बॉय व हैड गर्ल विद्यार्थियों के प्रतिनिधि होंगे तथा निम्नांकित कार्य करेंगे।ः–

i. हैड बॉय व हैड गर्ल विद्यालय में विद्यार्थियों और प्रधानाचार्य के बीच की कड़ी का कार्य करेंगे। वे विद्यार्थियों की समस्याओं को प्रधानाचार्य को अवगत करवाएँगे।
ii. विद्यालय में अनुशासन संबंधी समस्त कार्यों में सहभागिता करेंगे।
iii. बालसभा/पी.टी.एम./एस.डी.एम.सी. की बैठकों में समन्वय का कार्य करेंगे।
iv. विद्यालय के विकास कार्यों में बतौर सदस्य उनकी भूमिका रहेगी।
v. विद्यालय में होने वाले उत्सवों की सम्पूर्ण व्यवस्था करेंगे।
vi. नामांकन, वृक्षारोपण तथा परीक्षा तैयारी अध्ययन में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।
vii. विद्यालय में विद्यार्थियों की आवश्यकता का आंकलन कर संस्था प्रधान के साथ साझा करेंगे।
viii. विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन की योजनाओं के संबंध में जानकारी दिलाना एवं पात्र विद्यार्थियों को आवश्यक समन्वय कर उन्हें इन योजनाओं को लाभान्वित कराना।
ix. विद्यालयों में शिकायत पेटिका/गरिमा पेटी संचालन में सहायता करना तथा शिकायतों के समाधान में समन्वय करना।
x. हैड गर्ल विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं को सेनेटरी पैड उपलब्ध कराने के लिए समन्वय करेंगे तथा मैन्स्यूरेशन हाइजिन के संबंध में प्रभारी अध्यापिका के साथ समन्वय कर जागरूक करेगी।

निर्देशित किया जाता है कि अपने क्षेत्राधीन विद्यालयों में निर्देश जारी करवाकर, विद्यालय में हैड–बॉय एवं हैड–गर्ल का चयन व नियुक्ति संबंधी कार्य 20.02.2021 तक पूर्ण करना सुनिश्चित करें तथा समस्त ब्लॉक मुख्य शिक्षाधिकारियों से निम्नांकित प्रारूप में सूचना एकत्रित कर अभिलेख अपने कार्यालयों में संधारित करेंगे।

प्रारूप

क्र. सं.	ब्लॉक का नाम	विद्यालय का नाम	हैड–बॉय व हैड–गर्ल का नाम मय पिता /माता का नाम	हैड–बॉय एवं हैड–गर्ल के घर का पता	संपर्क सूत्र
1	2	3	4	5	6

उक्त बाबत समस्त ब्लॉक मुख्य शिक्षा अधिकारी से प्रमाण पत्र

प्राप्त कर दिनांक 25.02.2021 तक इस कार्यालय को निम्नांकित प्रारूप में प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करें-

प्रमाण-पत्र

कार्यालय-मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी.....

प्रमाणित किया जाता है कि इस कार्यालय के अधीन समस्त राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में हैड-बॉय एवं हैड गर्ल का चयन कर नियुक्ति की जा चुकी है। कोई भी विद्यालय ऐसा नहीं है जिसमें हैड-बॉय एवं हैड गर्ल की नियुक्ति नहीं हुई है।

हस्ताक्षर

मुख्य ब्लॉक जिला शिक्षा अधिकारी

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी उक्तानुसार कार्यवाही संपादित कर इस आशय का प्रमाण-पत्र कि क्षेत्राधीन के समस्त विद्यालयों में हैड-बॉय एवं हैड-गर्ल का चयन कर नियुक्त किया जा चुका है। उक्त प्रारूप में प्रमाण-पत्र दिनांक : 28.02.2021 तक अधोहस्ताक्षरकर्त्ता को प्रस्तुत करेंगे।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के प्रावधानों के अंतर्गत आमजन को सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/सूअप्र/निर्देश/2021 दिनांक : 09.02.2021 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा ● विषयः सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के प्रावधानों के अंतर्गत आमजन को सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के बाबत। ●कार्यालय आदेश।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग, जयपुर के अर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक F5(1050)DoiT/tech/17/3262 Jaipur, Date 05.08.2020 एवं प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय विभाग के परिपत्र क्रमांक : प.20 (84)प्रसू/सूअप्र/2009 पार्ट जयपुर दिनांक : 23 नवम्बर, 2020 के क्रम में सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के प्रावधानों के अन्तर्गत आमजन को सूचनाएँ उपलब्ध करवाने हेतु ऑनलाइन आवेदन/अपील प्रस्तुत करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग, जयपुर द्वारा RTI Portal (www.rti. rajasthan.gov.in) विकसित करने के मद्देनजर इस कार्यालय द्वारा भी ऑनलाइन आवेदन हेतु इस कार्यालय के पूर्व प्रसारित आदेश क्रमांकः शिविरा/माध्य/सूअप्र/निर्देश/2014-15/101 दिनांक : 18.12.2018 के अतिक्रमण में सूचना के अधिकार के तहत ऑनलाइन आवेदन हेतु नवीन लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपील अधिकारी संलग्न सारणी अनुसार तत्काल प्रभाव से मनोनीत किए जाते हैं। माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में उक्त नवीन ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया दिनांक 01.03.2021 से प्रभावी होगी।

विभाग में समस्त नव मनोनीत लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपील अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि आमजन में सूचना के अधिकार के तहत ऑनलाइन आवेदन हेतु किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो इस हेतु http://rajasthan.gov.in/Help files.aspx की सहायता से ऑनलाइन आवेदन हेतु गाईडलाइन सुलभ अवलोकनार्थ कार्यालय में आवश्यक रूप से उपलब्ध रखेंगे एवं प्राप्त ऑनलाइन आवेदन/अपीलों का निस्तारण सूचना के अधिकार अधिनियम-2005 के तहत निर्धारित समयावधि में नियमानुसार करेंगे। इस सम्बन्ध में आमजन के सुगम अवलोकन हेतु नोटिस बोर्ड पर भी सूचना के अधिकार के तहत ऑनलाइन आवेदन हेतु RTI Portal (www.rti.rajasthan.gov.in) की उल्लिखित सूचना आवश्यक रूप से चस्पा की जाए।

●संलग्न : यथोक्त

●**(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग हेतु मनोनीत लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपीलीय अधिकारी

क्र.सं.	लोक सूचना अधिकारी (स्वयं के कार्यालय हेतु)		प्रथम अपीलीय अधिकारी
	माध्यमिक शिक्षा	प्रारम्भिक शिक्षा	
1.	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
2.	-	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
3.	प्रधानाचार्य, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (आई.ए.एस.ई.) बीकानेर/अजमेर	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
4.	प्रधानाचार्य, राजकीय शारीरिक शिक्षा, महाविद्यालय, जोधपुर	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
5.	उप निदेशक, समाज शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	-	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
6.	प्रधानाचार्य, सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर	-	निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
7.	समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय (माध्यमिक शिक्षा के प्रकरण)	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
8.	-	समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय (प्रारम्भिक शिक्षा के प्रकरण)	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
9.	-	पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ, बीकानेर	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

10.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय (माध्यमिक शिक्षा के प्रकरण)	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय (प्रारम्भिक शिक्षा के प्रकरण)	सम्बन्धित संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय
11.	जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक मुख्यालय	जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक मुख्यालय	सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
12.	जिला शिक्षा अधिकारी (विधि-माध्यमिक) जयपुर/जोधपुर	जिला शिक्षा अधिकारी (विधि-प्रारम्भिक) जयपुर/जोधपुर	सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
13.	-	प्रधानाचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, (डाईट)	सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
14.	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (ब्लॉक के समस्त विद्यालयों सहित)	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (ब्लॉक के समस्त विद्यालयों सहित)	सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
15.	व्यवस्थापक, राजकीय गुरुनानक भवन संस्थान, जयपुर	-	सम्बन्धित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (ब्लॉक मुख्यालय)

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के प्रावधानों के अंतर्गत आमजन को सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/सूअप्र/निर्देश/2021 दिनांक 24.02.2021 ● विषयः सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के प्रावधानों के अंतर्गत आमजन को सूचनाएँ उपलब्ध करवाने के बाबत। ●कार्यालय आदेश।

इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 09.02.2021 के द्वारा सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग, जयपुर के अर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक F5(1050)DoiT/tech/17/3262 Jaipur, Date 05.08.2020 एवं प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय विभाग के परिपत्र क्रमांक : प.20 (84)प्रसू/सूअप्र/2009 पार्ट जयपुर दिनांक : 23 नवम्बर, 2020 के क्रम में सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के प्रावधानों के अन्तर्गत आमजन को सूचनाएँ उपलब्ध करवाने हेतु ऑनलाइन आवेदन/अपील प्रस्तुत करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग, जयपुर द्वारा RTI Portal (www.rti. rajasthan.gov.in) विकसित करने के मद्देनजर ऑनलाइन आवेदन हेतु नवीन राज्य लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपीलीय अधिकारी (तत्समय संलग्न सारणी अनुसार) तत्काल प्रभाव से मनोनीत करते हुए माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में नवीन ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया दिनांक 01.03.2021 से प्रभावी होने सम्बन्धी आदेश जारी किए गए थे।

इस सम्बन्ध में आमजन की सुविधा एवं अभिलेख तक सरलता से पहुँच बनाने हेतु ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया सम्बन्धी पूर्व समसंख्यक आदेश दिनांक 09.02.2021 की निरन्तरता में ग्रामीण क्षेत्र के समस्त पीईईओ को राज्य लोक सूचना अधिकारी मनोनीत किया जाता है तथा नव नियुक्त राज्य लोक सूचना अधिकारी अपने क्षेत्राधिकार के (PEEO) विद्यालयों के सम्बन्ध में सूचना के अधिकार के तहत कार्यवाही हेतु दायित्वबद्ध होंगे। इन नव नियुक्त राज्य लोक सूचना अधिकारी, पीईईओ (PEEO) के विरुद्ध सूचना के अधिकार अधिनियम-2005 के तहत प्रथम अपील हेतु सम्बन्धित ब्लॉक शिक्षा अधिकारी को प्रथम अपीलीय अधिकारी मनोनीत किया जाता है।

●**(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग हेतु मनोनीत लोक सूचना अधिकारी एवं प्रथम अपीलीय अधिकारी

क्र.सं.	लोक सूचना अधिकारी (स्वयं के कार्यालय हेतु)		प्रथम अपीलीय अधिकारी
	माध्यमिक शिक्षा	प्रारम्भिक शिक्षा	
1.	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
2.	-	अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
3.	प्रधानाचार्य, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (आई.ए.एस.ई.) बीकानेर/अजमेर	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
4.	प्रधानाचार्य, राजकीय शारीरिक शिक्षा, महाविद्यालय, जोधपुर	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
5.	उप निदेशक, समाज शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	-	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
6.	प्रधानाचार्य, सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर	-	निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
7.	समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय (माध्यमिक शिक्षा के प्रकरण)	-	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।
8.	-	समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय (प्रारम्भिक शिक्षा के प्रकरण)	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

9.	–	पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ, बीकानेर	निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।
10.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय (माध्यमिक शिक्षा के प्रकरण)	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय (प्रारम्भिक शिक्षा के प्रकरण)	सम्बन्धित संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा संभाग मुख्यालय
11.	जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक मुख्यालय	जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक मुख्यालय	सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
12.	जिला शिक्षा अधिकारी (विधि–माध्यमिक) जयपुर/जोधपुर	जिला शिक्षा अधिकारी (विधि–प्रारम्भिक) जयपुर/जोधपुर	सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
13.	–	प्रधानाचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, (डाईट)	सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
14.	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (ब्लॉक के समस्त विद्यालयों सहित)	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (ब्लॉक के समस्त विद्यालयों सहित)	सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मुख्यालय
15.	पीईईओ (PEEO) (ग्राम पंचायत क्षेत्र के समस्त विद्यालयों सहित)	पीईईओ (PEEO) (ग्राम पंचायत के समस्त विद्यालयों सहित)	सम्बन्धित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (ब्लॉक मुख्यालय)
16.	व्यवस्थापक, राजकीय गुरुनानक भवन, संस्थान	–	संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (ब्लॉक मुख्यालय)

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. राज्य स्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा/पेंशन–अ/34925/पी–2/2012 दिनांक : 26.02.2021 ● विषयः राज्य स्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान के संबंध में। ● कार्यालय आदेश।

इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 10.12.2020 एवं 01.02.2021 द्वारा माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में राज्य स्तरीय पेंशन प्रकरण निस्तारण अभियान दिनांक 01.01.2021–28.02.2021 तक चलाने के निर्देश दिए गए थे। उक्त अभियान की अवधि एक माह अर्थात 31 मार्च, 2021 तक बढ़ाई जाती है।

उक्त अभियान के शेष निर्देश यथावत रहेंगे।

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

शिविरा - एक परिचय राजस्थान सरकार के माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित मासिक शिविरा पत्रिका (Shivira Patrika) जूलाई, 1966 से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका में शिक्षा विभागीय मासिक आदेश–परिपत्र एवं दिशा–निर्देश, साहित्यकारों व शिक्षकों तथा शिक्षा अधिकारियों के आलेख, नवाचार एवं शैक्षिक चिन्तन संबंधी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। स्थाई स्तम्भों में नवप्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा, शाला प्रांगण के माध्यम से विद्यालयों में आयोजित सह शैक्षणिक गतिविधियों का प्रकाशन, हमारे भामाशाह के अन्तर्गत विद्यालयों में भामाशाहों के दिए गए सहयोग का जिलेवार प्रकाशन। बाल शिविरा के माध्यम से विद्यार्थियों की रचनाएँ भी हाल ही में प्रारम्भ की गई हैं। विशेषांक में शैक्षिक चिन्तन, हिन्दी विविधा, हिन्दी कविता, बाल साहित्य एवं राजस्थानी साहित्य की श्रेष्ठत्तम रचनाओं का प्रकाशन कर, संग्रहणीय अंक प्रतिवर्ष जयपुर में राज्य सरकार द्वारा शिक्षक दिवस समारोह में विमोचन किया जाता रहा है । प्रत्येक माह प्रकाशित शिविरा का मई–जून अंक संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस प्रकार कुल 11 अंकों का नियमित प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका का प्रत्येक अंक शिक्षा जगत से जुड़े प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय अंक के रूप में प्रकाशित करने का सम्पादक मण्डल सार्थक व सकारात्मक प्रयास नियमित रूप से करता है। शिविरा पत्रिका को क्रय करने की तीन केटेगरी निर्धारित की गयी हैं, प्रत्येक की दर अलग है।

व्यक्तिगत – Rs. 100/– वार्षिक, राजकीय संस्थान – Rs. 200/– वार्षिक, गैर–राजकीय संस्थान – Rs. 300/– वार्षिक

निर्धारित भुगतान प्राप्ति के पश्चात, अगले माह से शिविरा पत्रिका दिए गए पते पर पोस्ट कर दी जाती है। यह प्रत्येक माह की 5 अथवा 6 तारीख को साधारण डाक से सदस्यों को भेजी जाती है। इस बाबत किसी भी नुकसान की जिमेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

आवेदन प्रक्रिया :

- शिक्षा विभाग के किसी भी पोर्टल यथा शालादर्पण पर दिए गए लिंक शिविरा पत्रिका हेतु ऑनलाइन आवेदन पर क्लिक कर सर्विस–प्लस पोर्टल को एक्सेस कीजिए।
- लेफ्ट साइड में दिए गए मेनू से पूर्व में पंजीयन नहीं किया हुआ है तो 'Register Yourself' मेनू आइटम के द्वारा पंजीयन करवाएँ।
- एक बार पंजियान होने के पश्चात दाईं और दिए गए लिंक 'Login' के माध्यम से पंजीकरण के समय दिए गए लोगिन/पासवर्ड द्वारा लॉग इन कीजिए।
- लोगिन के पश्चात बाएं और दिए गए मेनू आइटम के 'Apply Service' लिंक द्वारा आवेदन करें एवं चाही गयी सभी जानकारी ध्यान से भरें।
- पासवर्ड आदि भूलने की स्थिति में होम पेज के दायीं और दिए गए लिंक 'Forgot Password' बटन का इस्तेमाल करें ।
- ग्राहक के प्रकार एवं मासिक चाही गयी प्रतियों की संख्या का सही से चयन करें।
- आवेदन समाप्ति/ आवेदन पत्र प्रिंट पश्चात दिए गए लिंक द्वारा राज्य सरकार के पेमेन्ट पोर्टल 'eGRass' के माध्यम से ऑनलाइन भुगतान करें। दिए गए लिंक पर क्लिक के पश्चात प्रोग्राम स्वयं ही इग्रास लिंक पर ले जाएगा। भुगतान के समय दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।

–शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर

फोनः 0151–2528875, मोः सम्पादक : 9460618809, वरिष्ठ सम्पादकः 9461074850

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
(प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान अजमेर)

शिक्षावाणी मासिक प्रसारण कार्यक्रम (दिनांक **01**.03.2021 से 2**7**.03.2021 तक)

प्रसारण समय–प्रातः 11.00 से 11.55 तक

क्र.स	दिनांक	वार	प्रारंभ से 15 मिनट		16 मिनट से 35 मिनट तक							36 मिनट से 55 मिनट तक						
			मीना की कहानियां	डाइट/ यूनिसेफ	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/ यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/ सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	डाइट/ यूनिसेफ	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री	समीक्षक का नाम श्री/श्रीमती /सुश्री
1	01.03.2021	सोमवार	तूफानी शाम	यूनिसेफ	6	विज्ञान	9	सजीव विशेषताएं एवं आवास	जयपुर	नीती जैन	डॉ. रश्मि गोगर	10	हिन्दी क्षितिज (गद्य)	12	मुंशी प्रेमचन्द ईदगाह	जयपुर	संजय जैन	मितेश कुमारी
2	02.03.2021	मंगलवार	अब तुम बड़ी हो गयी हो	यूनिसेफ	5	पर्यावरण अध्ययन	9	कहां कहां से पानी	जोधपुर	रमेश सोलंकी	मजाहिर सुल्तान जई	12	भौतिक विज्ञान	11	किरण प्रकाशिकी	जोधपुर	डॉ. महेश चन्द शर्मा	डॉ़ श्याम सुन्दर सोलंकी
3	03.03.2021	बुधवार	गली गली में शोर है	यूनिसेफ	2	हिन्दी	3	बबलू बदल गया	उदयपुर	डॉ. अंजली कोठारी	दिनेश सोमानी	12	हिन्दी अनिवार्य सृजन	11	बाजार दर्शन	उदयपुर	बनिता वागरेचा	मुकेश कुमार जोशी
4	04.03.2021	गुरूवार	खेल खेल में	यूनिसेफ	6	हिन्दी बसंत प्रथम	13	मैं सबसे छोटी होऊ (कविता)	बीकानेर	मोनिका मौर्य	अभय कुमार सोनी	10	सामाजिक विज्ञान	2	संघर्षकालीन भारत मुगलकालीन भारत	बीकानेर	रतनलाल छलानी	अभय कुमार सोनी
5	05.03.2021	शुक्रवार	छुपा दोस्त	यूनिसेफ	7	सामाजिक विज्ञान	3	राज्य शासन कैसे काम करता है	जयपुर	मिथिलेश सविता	जन्सी मीणा	10	विज्ञान	3	आनुवांशिकी	जयपुर	नूतन सैनी	दिनकर शर्मा
6	06.03.2021	शनिवार	समय की मांग	यूनिसेफ	7	हिन्दी बसंत द्वितीय	17	वीर कुंवर सिंह जीवनी	जोधपुर	श्रीमति वीणा	प्रदीप मोहन उदावत	10	विज्ञान	5	हमारे दैनिक जीवन में रसायन	जोधपुर	सुश्री शमीम	संयुक्ता गुप्ता
7	08.03.2021	सोमवार	हार में जीत	यूनिसेफ	8	सामाजिक विज्ञान	2	व्यापार से साम्राज्य तक कम्पनी की सत्ता	उदयपुर	वर्षा नरूका	ओम प्रकाश भट्ट	10	हिन्दी क्षितिज 2	1	पद्य सूरदास	उदयपुर	जगदीश चन्द्र जाट	मुकेश कुमार जोशी
8	09.03.2021	मंगलवार	दीपू और साबू	यूनिसेफ	6	सामाजिक विज्ञान	7	अशोक एक अनोखा सम्राट	बीकानेर	रितु गौड़	डॉ. ओम प्रकाश विश्नोई	12	हिन्दी साहित्य सरयू	16	शिरीष के फूल (निबंध)	बीकानेर	रेणू बाला चौहान	लक्ष्मी नारायण स्वामी
9	10.03.2021	बुधवार	जादू की बासुंरी	यूनिसेफ	8	संस्कृत रूचिरा तृतीयो भाग	5	कण्टकेनैव कण्टकम्	जयपुर	सरूचि सामरिया	राजेन्द्र कुमार सैनी	12	जीव विज्ञान	4	असंगजनन	जयपुर	सुनीता अग्रवाल	डॉ. रश्मि गोगर
10	12.03.2021	शुक्रवार	मक्खी मार मत	यूनिसेफ	7	संस्कृत रूचिरा	9	अहमपि विद्यालय गमिष्यामि	जोधपुर	डॉ. मीना जांगीड़	डॉ. श्याम सुन्दर सोलंकी	10	विज्ञान	14	पादपों एवं जंतुओं का आर्थिक महत्त्व	जोधपुर	अनिल धींगरा	सयुंक्ता गुप्ता

11	13.02.2021	शनिवार	पंजा लड़ाओ	यूनिसेफ	8	हिन्दी	16	पानी की कहानी	उदयपुर	ओम प्रकाश खटीक	दिनेश सोमानी	12	भूगोल	7	मानव व्यवसाय	उदयपुर	हेमलता कुमावत	सुनीता बैरवा
12	15.03.2021	सोमवार	मीना की दौड़	यूनिसेफ	8	विज्ञान	9	जन्तुओं में जनन	बीकानेर	आरती अंसारी	नरेश पोपली	10	सामाजिक विज्ञान	9	भारतीय कृषि	बीकानेर	शैलेन्द्र कुमार सुथार	अभय कुमार सोनी
13	16.03.2021	मंगलवार	पैसे यहाँ लगाए	यूनिसेफ	5	हिन्दी	9	सदाचार	जयपुर	जसपाल कौर	डॉ. सुषमा सिंह	11	राजनीति विज्ञान भारत का संविधान सिद्धांत और व्यवहार	7	संघवाद	जयपुर	कांता सैनी	संतोष मीणा
14	17.03.2021	बुधवार	मुरली और अमरूद चोर	यूनिसेफ	3	पर्यावरण अध्ययन अपना परिवेश	14	आओ मेरे घर	जोधपुर	डॉ. स्नेहलता अरोड़ा	ड़ॉ स्नेहलता औदिच्य	10	विज्ञान	15	पृथ्वी की संरचना	जोधपुर	अनिल कुमार धींगरा	संयुक्ता गुप्ता
15	18.03.2021	गुरूवार	मैं खुश हूँ	यूनिसेफ	7	विज्ञान	13	गति एवं समय	उदयपुर	सुरेश पाचाल	डॉ. भारती शर्मा	10	संस्कृत	3	समास–अव्ययीभाव	उदयपुर	लक्ष्मी खटीक	सत्यप्रिय
16	19.03.2021	शुक्रवार	जादुई घोल	यूनिसेफ	6	संस्कृत रूचिरा	7	बकस्य प्रतिकारः	बीकानेर	शीला कुमारी	सीमा शर्मा	11	इतिहास	7	बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएं	बीकानेर	अरविन्द बिठू	डॉ. ओम प्रकाश
17	20.03.2021	शनिवार	डर को करो छू	यूनिसेफ	6	विज्ञान	10	गति एवं दूरियों का मापन	जयपुर	विश्वेद्र प्रताप सिंह	डॉ. वर्तिका गुलाटी	9	हिन्दी क्षितिज	6	हरिशंकर प्रसाद–प्रेमचन्द के फटे जूते	जयपुर	लीलाधर शर्मा	महेश कुमार शर्मा
18	22.03.2021	सोमवार	संगीत गुरू	यूनिसेफ	4	पर्यावरण अध्ययन अपना परिवेश	9	पानी रे अजब तेरी कहानी	जोधपुर	अलका शर्मा	डॉ. श्याम सुन्दर सोलंकी	12	भौतिक विज्ञान	12	तरंग प्रकाशिकी	जोधपुर	डॉ. महेश चन्द्र शर्मा	डॉ. श्याम सुन्दर सोलंकी
19	23.03.2021	मंगलवार	नमकीन कहानी	यूनिसेफ	8	हिन्दी	18	टोपी	उदयपुर	मीनू सालवी	नीना यादव	10	सामाजिक विज्ञान	6	केन्द्र सरकार	उदयपुर	दीपक सोनी	नीता पटेल
20	24.03.2021	बुधवार	जरा सोच के देखो	यूनिसेफ	8	विज्ञान	12	घर्षण	बीकानेर	विनोद कुमार यादव	अनुराधा स्वामी	9	संस्कृत शैमुषी 1	8	लौह तुला	बीकानेर	रजनी चौधरी	सुशीला चौधरी
21	25.03.2021	गुरूवार	घर आए मेहमान	यूनिसेफ	7	सामाजिक विज्ञान–भूगोल	3	हमारी बदलती पृथ्वी	जयपुर	निशा शर्मा	महेश बाबू शर्मा	10	हिन्दी क्षितिज काव्य	8	सुभद्रा कुमारी चौहान–झांसी की रानी	जयपुर	मितेश कुमारी	विजय श्री कंवर
22	26.03.2021	शुक्रवार	किताब का किस्सा	यूनिसेफ	7	हिन्दी	10	विप्लव गायन	जोधपुर	अकलम नईम	संयुक्ता गुप्ता	10	सामाजिक विज्ञान	8	जल ससांधन	जोधपुर	केसर सिंह राजपुरोहित	मजाहिर सुल्तान जई
23	27.03.2021	शनिवार	मुन्ने की खुराक	यूनिसेफ	8	सामजिक विज्ञान	2	भूमि,मृदा जल प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन संसाधन	उदयपुर	भावना	श्वेता याज्ञनिक	11	अंग्रेजी	–	ARTICLE (Grammar)	उदयपुर	आभा जैन	विजय राजपूत

(इन्द्रा सोनगरा)
प्रभारी अधिकारी, शै. प्रो. प्रभाग–राज. अजमेर

राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टर द्वारा वर्ष 2021 के घोषित अवकाश

क्र.स.	जिले का नाम	दिनांक	वार	अवकाश का कारण
1.	श्री गंगानगर	13.01.21	बुधवार	लोहड़ी
		26.10.21	मंगलवार	श्रीगंगानगर स्थापना दिवस
2.	बीकानेर	14.09.21	मंगलवार	पुनरासर मेला
		3.11.21	बुधवार	धनतेरस
3.	हनुमानगढ़	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		15.09.21	बुधवार	गोगानवमी
4.	कोटा	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		10.09.21	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
5.	बारां	17.09.21	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
		14.10.21	गुरुवार	महानवमी
6.	बून्दी	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		25.08.21	बुधवार	कजली तीज
7.	झालावाड़	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		10.09.21	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
8.	जयपुर	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		11.10.21	सोमवार	मेला छठ, आमेर
9.	अलवर	20.07.21	मंगलवार	मेला श्री जगन्नाथ जी महाराज
		14.09.21	मंगलवार	मेला श्री हनुमान जी महाराज (पाण्डूपोल)
10.	दौसा	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		10.09.21	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
11.	पाली	23.07.21	शुक्रवार	गुरु पूर्णिमा
		10.9.21	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
12.	जालोर	17.09.21	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
		14.10.21	गुरुवार	महानवमी
13.	सिरोही	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		18.03.21	गुरुवार	रघुनाथ पाटोत्सव (केवल आबूरोड़ तहसील हेतु)
		10.09.21	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी (आबूरोड़ तहसील क्षेत्र को छोड़कर)
14.	नागौर	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		10.09.21	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
15.	बाँसवाड़ा	17.09.21	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
		8.11.21	सोमवार	मंशावृत चौथ
16.	अजमेर	18.11.21	गुरुवार	पुष्कर मेला
		19.02.21	शुक्रवार	उर्स मेला

क्र.सं.	जिले का नाम	दिनांक	वार	अवकाश का कारण
17.	चित्तौड़गढ़	17.09.21	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
		9.04.21	शुक्रवार	रंगतेरस
18.	डूंगरपुर	22.09.21	बुधवार	रथोत्सव
		8.11.21	सोमवार	मनसा चौथ
19.	प्रतापगढ़	9.04.21	शुक्रवार	रंगतेरस
		10.09.21	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
20.	राजसमन्द	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		17.09.21	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
21.	उदयपुर	15.04.21	गुरुवार	गणगौर
		17.09.21	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
22.	भीलवाड़ा	17.09.21	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
		2.11.21	मंगलवार	धनतेरस
23.	टोंक	2.11.21	मंगलवार	धनतेरस
		17.09.21	शुक्रवार	जलझूलनी एकादशी
24.	चूरू	27.04.21	मंगलवार	सालासर मेला
		31.08.21	मंगलवार	गोगानवमी
25.	झुन्झुनू	7.09.21	मंगलवार	लोहार्गल मेला
		3.11.21	बुधवार	धनतेरस
26.	सीकर	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		15.04.21	गुरुवार	गणगौर
27.	भरतपुर	23.07.21	शुक्रवार	गुरु पूर्णिमा
		6.09.21	सोमवार	वन यात्रा
28.	धौलपुर	27.04.21	मंगलवार	हनुमान जयन्ती
		10.09.21	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
29.	करौली	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		20.04.21	मंगलवार	दुर्गाष्टमी (कैलादेवी मेला)
30.	सवाई मधोपुर	1.02.21	सोमवार	मेला श्री चौथ माता जी
		10.9.21	शुक्रवार	मेला श्री गणेश जी
31.	जोधपुर	14.05.21	शुक्रवार	अक्षय तृतीया
		8.09.21	बुधवार	बाबा रामदेव मेला (मसूरिया)
32.	बाड़मेर	21.6.21	सोमवार	निर्जला एकादशी
		3.11.21	बुधवार	धनतेरस
33.	जैसलमेर	14.01.21	गुरुवार	मकर संक्रान्ति
		2.11.21	मंगलवार	धनतेरस

शिक्षा और संस्कृति

शिक्षा संस्कृति की संवाहिका

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

युग–युग के संचित संस्कार,
ऋषि मुनियों में उच्च विचार।
धीरों–वीरों का व्यवहार है,
निज संस्कृति के शृंगार।।

–मैथिलीशरण गुप्त

भारतीय संस्कृति की अवधारणा : संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है– अच्छी कृति, संवारना, निखारना अर्थात संस्कृति वास्तविकता में राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्त्वों का नाम है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक तथा भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। संस्कृति आत्मानन्द की वह धारा है, जिसमें मानव जाति, राष्ट्र अथवा समुदाय विशेष के, मानव के अभ्युदय एवं उत्कर्ष की सभी बातें समाहित होती हैं, संस्कारों का बोध होता है, जिसके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। इसमें लोक कल्याण की भावना निहित होती है। संस्कृति के निर्माण में धर्म, दर्शन, अध्यात्म, साहित्य का विशेष योगदान होता है। संस्कृति हमारी शारीरिक, मानसिक एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए, जीवन को लक्ष्यपूर्ण तरीके से उत्तम जीवन व्यतीत करना सिखाती है। संस्कृति समाज में पाई जाने वाली उच्चतम मानवीय मूल्यों की सहज चेतना है। सामाजिक प्रथाओं, व्यक्तियों की चित्तवृत्तियों, मनोभावों, मनोवृत्तियों तथा आचरण के साथ–साथ भौतिक पदार्थों के विशिष्ट स्वरूप दिए जाने में इसकी अभिव्यक्ति होती है। मानव के नीतिगत या अमूर्त विषय जैसे जीवन के समस्त कार्यकाल के समन्वय मत को संस्कृति कहते हैं। मानव की आंतरिक बाह्य स्थितियों से सुसंस्कृत एवं परिष्कृत समूह को संस्कृति की संज्ञा दी जाती है। संस्कृति हमारे जीवन में उसी प्रकार व्याप्त है, जिस प्रकार फूल के अंदर सुगंध या दूध के अन्दर मक्खन।

भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में विद्वानों का मत :

किसी समूह के कार्य करने और विचार करने के सभी तरीकों का नाम संस्कृति है।

–बोगार्डर्स

संस्कृति मनुष्य की कृति है, एक साधन है जिसके द्वारा वह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करता है।

–मैलिनोस्की

संस्कृति एक विचार है, जिसकी साधारण या असाधारण रूप में परिभाषा नहीं हो सकती। संस्कृति का कोई निश्चित स्वभाव या चिह्न नहीं है, जिसे संस्कृति का तत्त्व या विशेष्य माना जाए। यह सदैव बहुत महत्त्वपूर्ण धाराओं और शक्तियों का सम्मिश्रण है।

–प्रो. हुमायु कबीर

किसी भी जाति अथवा राष्ट्र के शिष्ट मानवों में विचार, वाणी एवं क्रिया का जो रूप व्याप्त रहता है तथा उसे प्रकट करते हैं, उसी का नाम संस्कृति है।

–राजगोपालाचारी

'साहित्य, संगीत, कला विहीनः साक्षात पशु पुच्छ विषाण हीनः' अर्थात संस्कृति के बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है।

–भर्तृहरि

भारतीय संस्कृति की विशेषता : भारत की संस्कृति में सर्वोच्च सामंजस्य की भावना होती है। हमारी संस्कृति में भिन्न–भिन्न जातियाँ, सम्प्रदाय, धर्म, भाषा, परम्पराओं का समागम है। भारतीय संस्कृति में उदारता है लेकिन संकीर्णता का विरोध है। भारतीय ग्रंथों में ही नहीं, अपितु पश्चिमी इतिहासकारों, विद्वानों ने भी इसकी श्रेष्ठता के उल्लेख एवं उद्गार प्रकट किए हैं। कर्नल अल्कार ने कहा है कि– 'मानव संस्कृति का उद्गम स्थल भारत वर्ष ही माना है। यहाँ की संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। उदारता, मानवीयता, त्याग और विश्व बंधुत्व भारतीय संस्कृति के मूलमंत्र हैं। नम्यता, समरसता और परोपकारिता के गुणों के कारण ही यह कालजय है। भारतीय संस्कृति का आधार–'मातृदेवोभवः पितृदेवोभवः आचार्य देवो भवः अतिथि देवो भवः' सदैव से रहा है। विशाल सांस्कृतिक विरासत में हमें वेद–पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, बौद्ध, जैन धर्म का दर्शन, भक्ति मार्ग की उपासना पद्धतियाँ, दार्शनिक चिंतन, वास्तुशास्त्र, संगीत, नृत्य, शिल्प कला, वाद्ययंत्र, चित्रकला, शैलचित्रकला एवं सम्पूर्ण भारत को सांस्कृतिक रूप से एकता में बाँधने का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ। मातृभूमि के प्रति श्रेष्ठता का भाव, विशेष दृष्टि हमें वैदिक काल से विरासत में मिला है। हमारे पूर्वजों की सोच, व्यापकता में विश्व बंधुत्व की भावना के स्वभाव के परिणामस्वरूप हमारी एकात्म भाव की दृष्टि है। यही कारण है कि हम अनेकता से एकता के सिद्धांत को आत्मसात कर रहे रहे हैं। भारत ने जीवन जगत तथा जगदीश को एकात्म स्वरूप से देखा है, यही भारत की जीवन विचारधारा है। सम्पूर्ण मानव के कल्याण की कामना करने वाली हमारी संस्कृति ने एक आदर्श प्रस्तुत किया है, विश्व कल्याण की भावना भारतीय संस्कृति का प्रमुख आधार रहा है।

शिक्षा सांस्कृतिक की संवाहिका : शिक्षा का अर्थ ज्ञान के समग्र रूप से है। शिक्षा शब्द 'शिक्ष' धातु से बना है, जिसका अर्थ है ग्रहण करना, विद्या प्राप्त करना। शिक्षा का सामान्य अर्थ है–सीखना–सिखाना। शिक्षा का उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास अर्थात शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास या रूपांतरण करना है। केवल सूचनाओं को संग्रहण करना नहीं है और न एक विषयक, विशेष कला या तकनीक का सीमित ज्ञान देना ही है। शिक्षा निर्माण की सतत चलने वाली प्रक्रिया है। जिसके दो स्थूल चिह्न हैं– ज्ञान तथा विज्ञान। वर्तमान में शिक्षा को ज्ञान का माध्यम मानकर औपचारिक शिक्षा को ही शिक्षा का प्रतिमान स्वीकार कर लिया गया है। जबकि देशकाल के परिदृश्य में शिक्षा और संस्कृति के सूत्र परस्पर अन्तर्निहित होते हैं। शिक्षा बौद्धिक विकास के साथ–साथ

अन्तश्चेतना के विकास का भी, सशक्त माध्यम है। माना जाता है कि शिक्षा सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था का आधार है। शिक्षा के बिना न व्यवस्था तंत्र का निर्माण संभव है और न ही व्यक्तित्व का विकास संभव है। शिक्षा निसंदेह संस्कृति की संवाहिका है। सांस्कृतिक मूल्यों के विकास और विस्तार के लिए शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा के द्वारा मानव अपने अनुभूतिजन्य अनुभवों को समाज में संचारित करता है। शिक्षा का महत्त्वपूर्ण दायित्त्व है कि वह हमारी चिरन्तन संस्कृति की संवाहिका बने। शिक्षा और संस्कृति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि शिक्षा प्रणाली अक्षम होगी तो व्यक्ति सच्चे अर्थों में शिक्षित एवं संस्कारित नहीं हो पाएगा। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है कि आज मानव (नवयुवक) किस दिशा की ओर जा रहे हैं। वर्तमान युवा का कोई जीवन उद्देश्य नहीं है। वह क्या बनना चाहता है? लक्ष्यहीन जीवन जी रहा है। इसलिए शिक्षा का प्रसार एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। जहाँ अशिक्षा है वहाँ सांस्कृति उत्थान कम हो जाता है। संस्कृति का परिष्करण शिक्षा से ही संभव है। संस्कृति का इतिहास पुरातन है और शिक्षा उनकी पोथिका है। हुमायू कबीर का कहना है कि संस्कृति का मार्ग आनन्द की ओर जाता है; दुर्भावनाओं से दूर कर सद्भावनाएँ जगाता है। यह आत्मा का स्पंदन है। सांस्कृतिक तत्त्वों के प्रवाहमय बनाना शिक्षा का महत्त्वपूर्ण कार्य है।

शिक्षा से संस्कृति का रक्षण संभव : भारतीय संदर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की रचना एक दिन में न होकर, शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। यह मात्र समाज में प्रचलित मान्यताओं, विश्वासों, परम्पराओं का समूह मात्र नहीं है वरन् मानव जीवन के अनुभवों से प्राप्त सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के प्रति लोककल्याण की भावना श्रेष्ठ मानवीय जीवन के अनुभवों से निर्मित श्रेष्ठ मानवीय गुणों को व्यवहार्य बनाने, उचित अनुचित के प्रति नीर-क्षीर, विवेक निष्ठ बनाने, करणीय-अकरणीय में भेद करने की अन्तर्दृष्टि विकसित करने की क्षमता, शिक्षा के द्वारा ही विकसित किए जा सकते हैं। भारतीय संस्कृति में मूल्यों तथा संस्कार निर्माण में प्रकृति व अध्यात्म प्रमुख होता है। शिक्षा द्वारा इन्हीं संस्कारों व जीवन मूल्यों को मनुष्य में समाहित करने का लक्ष्य रहता है। इसे पूर्णता प्रदान करने में भाषा, साहित्य और लिपि महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध होते हैं। शिक्षा से मनुष्यों में श्रेष्ठ मानवीय गुणों यथा-सत्य, प्रेम, अहिंसा, सद्भाव, सहिष्णुता, सदाचार के गुण समाहित होते हैं। शिक्षा से रक्षित संस्कृति हमें इहलोक और परलोक दोनों के आत्मिक विकास में सहयोग देती है। सांस्कृतिक मूल्यों के विकास के लिए शिक्षा एक सबल माध्यम है। शिक्षा और संस्कृति का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। शिक्षा संस्कृति के स्वरूप को निर्धारित करती है। शिक्षा संस्कृति की वाहक बनकर इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने तथा मानव को दीक्षित करने का कार्य सम्पादित करती है। भारतीय संस्कृति में रची-बसी शिक्षा व्यवस्था सहस्रों वर्षों से भारतीय चिन्तन का आधार बनी हुई है। एतदर्थ शिक्षा से संस्कृति का रक्षण संभव है।

प्रधानाध्यापक (सेवानिवृत्त)
सांपला, अजमेर (राज.)
मो: 9460894708

सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अत: अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**

-वरिष्ठ संपादक

तुम हो...

❐ सुनीता पंचारिया

घर आंगन की दहलीज में,
पूजा घर की महक में,
तुम हो .....
रसोईघर के स्वाद में,
बर्तनों की खन-खनाहट में,
तुम हो....
भोर का सूर्य,
सांझ का तारा,
तुम हो .....
बगिया का महकता फूल,
और फूल की खुशबू,
तुम हो.....
निर्झर झरनों में,
नदियों की कल-कल में
तुम हो....
बाल मन की किलकारियो में,
बुजुर्गों के अंतर्मन में
तुम हो ....
बहनों का दुलार,
भाइयों का रक्षा सूत्र,
तुम हो.....
ममता की छाँव,
और प्यार की आस में
तुम हो.....
मान मर्यादाओं में,
विचारों व संस्कारों में,
तुम हो .....
संगीत के सुरों में,
वायु के झोंकों में,
तुम हो.....
होली के रंगों में,
विजय की लक्ष्मी,
तुम हो.....
गौतम की यशोधरा,
और राम की सीता,
तुम हो.....
क्योंकि माँ में, बहन में,
बेटी में, बहू में, पत्नी में
नारी केवल तुम हो।

रा.उ.मा.वि. जूना, गुलाबपुरा
मो: 9251775153

बाल-पुस्तकालय

बाल साहित्य और बच्चों का पढ़ना-लिखना

❒ विजय प्रकाश जैन

बाल साहित्य को लेकर कई स्तरों पर विमर्श चलता रहता है कि आखिर बाल साहित्य है क्या? किसे माना जाए बाल साहित्य और कैसे मदद करता है बाल साहित्य बच्चों के पढ़ने-लिखने में? इन प्रश्नों के उत्तर अपनी कक्षा के अनुभवों से खोजने का प्रयास किया गया। बच्चों से जुड़े बाल साहित्य के लिए आवश्यक है कि उसमें उनका अपना परिवेश, उनके जीवन से जुड़े अनुभव, उनकी अपनी भाषा से जुड़े परिचित शब्द और उनके जाने-पहचाने चित्र हों। यह बाल साहित्य ऐसा हो जो उनका मनोरंजन तो करे ही साथ ही उसे कल्पना की दुनिया में सैर कराता हुआ अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक प्राणी के रूप में संस्कारित करे। यह बाल साहित्य उपदेशात्मक और सीख देने वाली शैली का नहीं हो।

बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जिसकी विषय वस्तु बच्चों को संज्ञानात्मक रूप से सक्रिय कर सके, जो बच्चों को कुछ सोचने पर मजबूर करे साथ ही बच्चों की जमी-जमाई धारणाओं को चुनौती दे सके और उन्हें लगे कि क्या ऐसा भी होता है? यदि उपर्युक्त कार्य बाल साहित्य की विषय वस्तु स्वयं करे तो बहुत बेहतर है नहीं तो शिक्षक को यह प्रयास करने होंगे कि वह ऐसी कौनसी गतिविधि करे कि उस साहित्य से बच्चों का संज्ञानात्मक जुड़ाव पैदा हो सके।

बाल साहित्य ही वह सामग्री है जिसकी सहायता से बच्चे की मौखिक भाषा शैली संवर सकती है, वह अपने घर की भाषा से स्कूल की भाषा की ओर बढ़ सकता है, उसमें प्रश्न करने और खुद उत्तर देने की क्षमता का विस्तार हो सकता है। बाल साहित्य उनके सोचने की कल्पना की दुनिया का विस्तार करता है। साथ ही बच्चों में निष्कर्ष करना और विश्लेषण करने के कौशल का विकास करता है।

शुरूआत के दिनों में बच्चों को दी जानी वाली चित्रात्मक पुस्तकों से बच्चे अपने आपको जोड़ते हैं, उन चित्रों से बात करते हैं, पुस्तकों से प्रेम करते हैं और यह पुस्तक प्रेम उनके पढ़ना शुरू करने का आधार बनता है।

बच्चे जिस परिवेश के हों वहाँ उनके बचपन में गाई जाने वाली कविताओं, बोले और सुने जाने वाली कहानियों, गीतों को लिखा जाए और बच्चों तक सहज पहुँच में हो तो यह साहित्य बच्चों को अपने जीवन से और अपनी माटी से जोड़ता है। ऐसे परिवेश के बच्चे जिनके घरों में पढ़ने-लिखने का कोई माहौल नहीं होता है, जिनके घर की भाषा और स्कूल की भाषा अलग होती है, जिनके घरों में प्रिंट की कोई सामग्री नहीं होती, पूरे गाँव में टी.वी., मोबाइल, होर्डिंग अखबार जैसी सामग्री नहीं होती है, के साथ परिवेश को जोड़ते हुए पुस्तकों को पढ़ने की सामग्री में उपयोग लाने की प्रक्रिया में बच्चों के साथ पहले बातचीत किया जाना बहुत आवश्यक है। इसके लिए-

1. बच्चों से उनकी भाषा में उनकी कहानी, कविताओं को सुनना, उन्हें लिपिबद्ध करना और बाद में उनके कहानी/कविता कार्ड, बिग बुक बनाकर बच्चों को पढ़ने-लिखने को देने जैसे कार्य किए जाए।
2. पाठ्यपुस्तक के वर्णों, मात्राओं का शिक्षण कराते समय इन वर्ण मात्राओं से स्थानीय भाषा के शब्द/घटनाक्रम बनाकर उनके पठन कार्ड बच्चों को पढ़ने के लिए दे सकते हैं।
3. कमरे में डोरी बाँधकर पुस्तकों को उन पर लटका दिया जाए जिसमें बच्चे अपनी पसंद की पुस्तक को पढ़ सकें।
4. जो बच्चे पढ़ना नहीं जानते हैं जिनका अभी विद्यालय में प्रवेश हुआ है उन्हें चित्रों वाली पुस्तकें देना, उन पुस्तकों को उलटने, पलटने उन पर बात करने के मौके देना।
5. प्रतिदिन कुछ समय बच्चों को पुस्तकें पढ़ने के लिए देना, उन पर बात करना।
6. बाल साहित्य चित्रात्मक हो, सहज सरल भाषा में हो, संवाद शैली में हो। बच्चों के बाल साहित्य को पढ़ने का नतीजा यह हुआ कि-

- इन कविताओं, कहानियों आदि की पुस्तकें पढ़ते रहने से बच्चों का उच्चारण बेहतर हुआ, वे व्याकरण की गलतियाँ कम करने लगे। बच्चों में समालोचनात्मक चिंतन की क्षमता बढ़ी और वे मौलिक लेखन की ओर बढ़े।
- बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि हुई और वे अधिक परिष्कृत भाषा का उपयोग करने लगे।
- बच्चे आम बातचीत में हिन्दी के शब्दों का प्रयोग अधिक करने लगे।
- इन पुस्तकों के साथ की जाने वाली गतिविधियों से बच्चों में कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का विकास हुआ।
- बच्चे पढ़ने के लिए अन्य संदर्भों को खोजने लगे।

इन पुस्तकों से होने वाले अन्य लाभ-

- ये पुस्तकें कक्षा में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों के बारे में बच्चों को अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध कराती हैं। वे उन मुद्दों पर विस्तृत समझ बना पाते हैं।
- कई बार विद्यालय में शिक्षकों की संख्या अधिक होती है और आप सभी बच्चों पर एक सा ध्यान नहीं दे पाते हैं। ऐसे में बच्चे या तो सिर्फ खेल में व्यस्त होते हैं या फिर आपस में खेलने लगते हैं। विद्यालय में उपलब्ध पुस्तकें ऐसे समय काम आ सकती हैं। बच्चों के एक समूह को कुछ पुस्तकें देकर उनसे उनकी पसंद की पुस्तक छाँटकर पढ़ने या देखने, पलटने को कहें। हो सकता है शुरू में वे इसमें रुचि न लें। पर कुछ दिनों बाद वे तन्मयता से पुस्तकों को पढ़ने व समझने में व्यस्त रहने लगेंगे।
- बच्चे जब समूहों में पढ़ते हैं तो पढ़ी और समझी गई बातों के बारे में अपने साथियों के साथ बातचीत करते हैं। यह बातचीत सीखने की प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इससे उनमें अभिव्याक्ति का कौशल भी विकसित होता है।
- कई बच्चे समय से पहले विद्यालय आ जाते हैं या कुछ बच्चे अपना काम समय से पहले खत्म कर लेते हैं। ऐसे बच्चे इस समय में इन पुस्तकों को पढ़ते हैं और उनमें पढ़ने से रुचि जाग्रत होती है।

अंततः बाल साहित्य बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में बहुत बेहतर सामग्री के रूप में काम आ सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि कैसे इसका उपयोग बच्चों के साथ किया जाए।

प्रबोधक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मेंदिया,
डिन्डोर, बाँसवाड़ा (राज.)

शारीरिक शिक्षा

चुस्त-दुरुस्त रहने के लिए व्यायाम कीजिए

❒ जयन्ती लाल सोलंकी

व्यायाम ऐसे शारीरिक श्रम को कहा गया है जो प्रसन्नतापूर्वक, स्वेच्छा से और मन के अनुकूल मात्रा में किया जाए। आयुर्वेद ने इसकी परिभाषा इस प्रकार से की है–

शरीर चेष्टा या चेष्टा स्थेर्यार्था बलवर्धनी।
देह व्यायाम संख्याता मात्रया तां समाचरेत्।।

अर्थात शरीर की जो चेष्टा मन के अनुकूल, शरीर में स्थिरता लाने वाली और बल बढ़ाने वाली हो उस चेष्टा को शारीरिक व्यायाम कहते हैं। व्यायाम उचित मात्रा में ही करना चाहिए। सुश्रुत संहिता में व्यायाम की परिभाषा देते हुए कहा गया है–**'शरीरायासजननं कर्म व्यायाम संज्ञितम्'** अर्थात शरीर में थकावट उत्पन्न करने वाला कर्म व्यायाम कहलाता है। साथ ही इसकी मात्रा बताते हुए सावधान भी किया गया है–हित चाहने वालों को सभी ऋतुओं में प्रतिदिन आधी शक्ति के अनुकूल मात्रा में व्यायाम करना चाहिए वरना इसका असर हानिकारक होता है। शक्ति से अधिक व्यायाम करने से क्षीणता, प्यास, अरुचि, छर्दि रक्त, पित्त भ्रम, क्लम, कास शोष, ज्वर और श्वास आदि व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए जितनी चादर हो उतने ही पैर फैलाना चाहिए। जब शरीर ज्यादा थकने लगे और साँस काबू से बाहर फूलने लगे तब आधी शक्ति खर्च हो चुकी समझ कर व्यायाम रोक देना चाहिए।

इसी प्रकार उचित-अनुचित और अनुकूल-प्रतिकूल का विचार कर उचित ढंग से, नियमित रूप से और अपनी क्षमता के अनुकूल मात्रा में प्रसन्न चित्त होकर व्यायाम करने से बहुत फायदे होते हैं। चरक संहिता में कहा है–

लाघवं कर्म सामर्थ्यं स्थैर्य दुःख सहिष्णुता।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।।

अर्थात– व्यायाम करने से देह में हल्कापन, कार्य करने की शक्ति, शरीर में स्थिरता, दुःख सहन करने की क्षमता, वृद्ध (बढ़े हुए) दोषों की क्षीणता और अग्नि की वृद्धि होती है।

सुश्रुत संहिता में कहा गया है– व्यायाम

करने से शरीर की सम्यक पुष्टि, कांति, समस्त अंगों का सुगठन, पाचक, अग्नि की वृद्धि, आलस्य व शिथिलता न होना, स्थिरता, हल्कापन, शरीर शुद्धि तथा श्रम, क्लम (बिना श्रम के थकावट) प्यास गर्मी और शीत आदि को सहन करने की क्षमता और उत्तम आरोग्य की प्राप्ति होती है।

जो व्यायाम करता है उसका शरीर सुगठित और सुडोल बना रहता है। मोटापा वालों के लिए तो व्यायाम एक वरदान है क्योंकि **'न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित स्थौल्यापकर्षणम्'** सुश्रुत के अनुसार मोटापा कम करने के लिए व्यायाम के समान दूसरा कोई उपाय नहीं है।

व्यायाम करने वाले व्यक्ति को शत्रु भी भययभीत रहने के कारण पीड़ित नहीं करते, बुढ़ापा जल्दी नहीं आता और उसकी मांसपेशियाँ मजबूत बनी रहती हैं। पौष्टिक और स्निग्ध आहार करने वालों के लिए तो व्यायाम करना सदा ही हितकारी होता है और शीत और बसन्त ऋतु में तो विशेष रूप से लाभकारी होता है। व्यायाम कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम्। विदग्धम्विदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते।' (सुश्रुत) के अनुसार नित्य नियमित व्यायाम करने वाले का विरुद्ध अशन, अम्ल पाक युक्त, अपक्व और अम्ल आहार भी संपूर्ण रूप से पच जाता है और दोष उत्पन्न नहीं कर पाता है। व्यायाम करने से शरीर से पसीना निकलता है जिससे शरीर का विकार निकल जाता है, श्वास की गति तेज हो जाती है जिससे फेफड़ों का व्यायाम होता है, शरीर के अंग प्रत्यंग हल्के हो जाते हैं और शरीर में मजबूती आती है। आयुर्वेद का यह उपदेश पढ़कर आप व्यायाम का महत्त्व समझ गए होंगे। अब सवाल यह पैदा होता है कि व्यायाम कैसे, कब व कौनसे करने चाहिए इसकी रूपरेखा भी प्रस्तुत है–

व्यायाम का सबसे अच्छा समय प्रातः काल का होता है। शौचादि से निवृत्त होकर खुली हवा और प्रकाश युक्त स्थान में दण्ड बैठक लगाना, मुग्दर घुमाना, दौड़ लगाना, तेल मालिश करना आदि व्यायाम करने चाहिए। खेलकूद भी व्यायाम ही होते हैं जो कि प्रायः शाम को खेले जाते हैं। व्यायाम के बाद पसीना सुखाकर स्नान करना चाहिए और रात को पानी में भिगोए हुए चने चबाकर नाश्ते के रूप में खाकर दूध पीना चाहिए। जैसे-जैसे व्यायाम बढ़ाएँ वैसे-वैसे पौष्टिक आहार की मात्रा भी बढ़ाते जाना चाहिए ताकि शरीर को आवश्यक मात्रा में खुराक मिलती रहे। व्यायाम करने वालों को शोक, चिंता, मानसिक तनाव, ईर्ष्या-द्वेष, क्रोध और कटु भाषण करने से बचना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। व्यायाम करने वाले को अपने आहार-विहार का पूरा ध्यान रखना चाहिए। यह जरूरी नहीं कि महंगे पौष्टिक पदार्थ ही सेवन किए जाएँ। भोजन करते समय प्रत्येक कौर 32 बार चबा कर ही निगला करे। जो भी रूखा-सूखा हो उसे बड़े प्रेम से प्रसन्नचित्त होकर और एकाग्र मन से भोजन पर ध्यान केन्द्रित रखकर धीरे-धीरे आहार करें। जल्दबाजी में भोजन न करें। शाक-सब्जी और मौसमी फल का सेवन अधिक मात्रा में करें। गुड़, मूँगफली, भूने चने, केला और गाजर सस्ते होते हुए भी बहुत पौष्टिक होते हैं। भोजन ताजा ही लें, बासी नहीं।

छात्रों को व्यायाम अवश्य करना चाहिए

पर व्यायाम की मात्रा पहलवानों की तरह नहीं बढ़ानी चाहिए। पहलवानी करने वालों का व्यायाम बहुत परिश्रम वाला होता है। छात्रों को पढ़ाई पर विशेष ध्यान देना होता है अतः उनके लिए सीमित मात्रा में, लेकिन नियमपूर्वक हल्का व्यायाम करना पर्याप्त है। कुश्ती लड़ना पहलवानों का काम है अतः छात्रों को अखाड़े में कुश्ती का अभ्यास नहीं करना चाहिए क्योंकि कोई भी अभ्यास तभी तक लाभकारी और सुखदायक होता है जब तक किया जाता रहे। अभ्यास छोड़ने पर कई तरह के कष्ट उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए छात्रों को उतनी ही मात्रा में व्यायाम करना चाहिए, जितनी मात्रा में वे आजीवन करते रह सके। नियमपूर्वक निरन्तर रूप से थोड़ी मात्रा में किया गया व्यायाम भी शरीर के लिए पूरी तरह हितकारी सिद्ध होता है।

व्यायाम करने वाले को शराब, ड्रग्स आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, धूम्रपान आदि से सदा दूर रहना चाहिए और विवेक, धैर्य व साहस आदि गुणों को अपनाना चाहिए। मन को चिंता, शोक और क्रोध से बचाना और प्रसन्नचित्त रहना सबसे बड़ी पौष्टिकता देने वाला उपाय है और समय पर भोजन करना तथा सुबह शाम शौच के लिए जाना, खाया-पिया ठीक से हजम करने वाला नियम है। कहने का मतलब है कि दिमाग और पेट को साफ रखते हुए ही व्यायाम करना चाहिए।

व्यायाम करते समय मुँह से साँस लेना, बातचीत करना और किसी प्रकार के सोच-विचार में दिमाग को उलझाना सख्त मना है। व्यायाम से पहले कुछ भी खाना-पीना न करें। व्यायाम से पहले शीतकाल में सरसों का और अन्य ऋतुओं में खाने का तेल लेकर शरीर पर लगाएँ और हल्की मालिश करें इसके बाद व्यायाम करें। व्यायाम के आधे घण्टे बाद स्नान करके मोटे तौलिये से शरीर को खूब रगड़-रगड़ कर पौंछे। इस प्रकार व्यायाम से अपने शरीर को निरोग बनाए रखें। ठीक ही कहा गया है-'पहला सुख निरोगी काया।'

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाग्भवेत।।

प्राध्यापक (हिन्दी)
कुण्डल, तहसील-सिवाना, बाड़मेर (राज.)-344043
मो: 9413900416

चिन्तन

आत्मविश्वास ही सफलता की कुँजी

❐ स्नेहलता शर्मा

प्यारे बच्चों, जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले आवश्यक है आत्मविश्वास का होना। प्रायः देखा गया है कि अधिकांश व्यक्ति बिना किसी कारण के अपने अन्दर आत्मविश्वास की कमी महसूस करते हैं। यह सोच ही उन्हें जीवन में दूसरे व्यक्तियों से पीछे होने का संदेश देती है। जिन्दगी में आगे बढ़ने के लिए सबसे पहले आत्मविश्वास को बढ़ाने का प्रयत्न स्वयं को करते रहना चाहिए और अविश्वास को दूर करने का प्रयास भी करना चाहिए। सर्वप्रथम व्यक्ति को अपने मन में विचार करना चाहिए कि आत्मविश्वास अगर कमजोर है तो उसका कारण पहचान कर उसे दूर करना चाहिए। सर्वविदित है कि संसार में कोई भी व्यक्ति अपने आप में परिपूर्ण नहीं है। आशावादी व्यक्ति प्रेरित होकर आत्मविश्वास की कमी को पहचान कर उसे दूर कर लेते हैं। जो व्यक्ति अपनी कमी को पहचान कर भी सुधारने का प्रयास नहीं करते हैं उन्हें भविष्य में बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे उनके आत्मविश्वास में निरन्तर कमी नजर आने लगती है।

आत्मविश्वास की कमी से व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार भी संकुचित होने लगता है। आधुनिक युग में सामाजिक व्यवहार का अच्छा होना महत्त्वपूर्ण है। आत्मविश्वास की कमी के कारण व्यक्ति अपनी बात को भी किसी दूसरे व्यक्ति एवं समूह में नहीं रख सकता है और न ही अपनी बात को उनसे मनवा सकता है, यह प्रवृत्ति व्यक्ति को आगे बढ़ने से रोकती है इसके लिए जरूरी है कि व्यक्ति स्वयं एक चैक लिस्ट बनाएँ। इस चैक लिस्ट में स्वयं की कमियों को दूर करने का प्रयास करे। इससे अच्छाइयों में वृद्धि होगी और कमियाँ दूर होगी तथा आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। असंभव कार्य भी आत्मविश्वास से सरल हो जाता है। आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु स्वयं के बारे में मन ही मन (सैल्फ टॉक) स्वयं से सकारात्मक बातें करके आत्मविश्वास को बढ़ाया जा सकता है। इस सकारात्मक अभ्यास में व्यक्ति निष्पक्ष होकर अपनी कमजोरी पर ध्यान केन्द्रित कर उसे आसानी से दूर कर सकता है।

जिन व्यक्तियों का दृष्टिकोण नकारात्मक होता है वे पहली बार में अपनी कमियों को दूर करने का खुद से किया वादा पूरी तरह निभा नहीं पाते हैं। उन्हें निराश नहीं होना चाहिए। धैर्य से कार्य करें अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने के कार्य में अपने धैर्य का साथ नहीं छोड़ें। आत्मविश्वास को बढ़ाने हेतु हमने महापुरुषों की जीवनियों में देखा है कि अगर कोई व्यक्ति सभी के सामने भाषण नहीं दे पाता है तो उसके लिए दर्पण के सामने भाषण का अभ्यास करने से व्यक्ति में सकारात्मक सोच से आत्मविश्वास बढ़ता है जो सफलता की कुँजी है।

शिक्षा का महत्त्व : विद्या एक ऐसा धन है जिसे न कोई छीन सकता है, न चुरा सकता है, न ही नष्ट कर सकता है। यह खर्च करने पर घटने के स्थान पर बढ़ता है। जितना खर्च करो उतना बढ़ता है। विद्या, माता के समान पोषण करती है, पिता के समान संरक्षण करती है, दुःख-विपत्ति में पत्नी के समान धैर्य और उत्साह प्रदान कर दुःख को दूर करती है, विदेश में मित्र की तरह साथ देती है, चहुँ ओर कीर्ति फैलाती है और भाई की तरह जीवनपर्यन्त साथ निभाती है।

न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एवं नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मी तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं
किं किं न साधयति कल्पलतेव विघा।।

शिक्षा ही वह हथियार है, जिसके बल पर आप दुनिया बदल सकते हैं।

विशेष शिक्षिका (लेवल प्रथम)
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जोगीपुरा, नदबई, भरतपुर (राज.)
मो: 9928388935

वर्तमान विद्यालयी शिक्षा पद्धति : एक दृष्टि

❐ विनोद कुमार भार्गव

प्राचीन भारतीय विद्यालयी शिक्षा पद्धति एवं वर्तमान में प्रचलित भारतीय विद्यालयी शिक्षा पद्धति दोनों में युगानुरूप अंतर तो है, साथ ही साथ दोनों पद्धतियों के परिणामों में भी अत्यधिक अंतर प्रतीत होता है। इस विश्लेषण का तात्पर्य यह नहीं है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की एकांतिक श्रेष्ठता घोषित कर दी जाए, वरन् उस शिक्षा प्रणाली की उत्कृष्ट व्यवस्थाओं एवं बिन्दुओं को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करना है। इस पर किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व वर्तमान विद्यालयी शिक्षा के क्या प्रभाव है अथवा बदलने की जरूरत है; देखना समीचीन होगा।

1. लोकमानस मे प्रचलित कहावत है कि विद्या कंठ की और पैसा अंटी का, जो कि सटीक बैठती है। प्राचीन काल में शिक्षा से तात्पर्य गुरुकुल रूपी विद्यालय में मात्र ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं था बल्कि उस ज्ञान को व्यवहार में परिणित करते हुए संपूर्ण देश या विदेश में प्रसारित करना भी हुआ करता था जिसे अध्ययनकर्ता ज्ञान को लिखित रूप की अपेक्षा मौखिक रूप से अधिग्रहण करते हुए उसे कंठस्थ कर अपने मस्तिष्क में उसे स्थाई बनाता था। कंठस्थ ज्ञान लंबे समय तक स्मृति में रहता है जबकि लिखित स्वरूप को पढ़ने के उपरांत यदि व्यवहार में न लाया जाए अर्थात् उस पर चर्चा एवं विश्लेषण ना करें तो कुछ समय पश्चात् विस्मृत हो जाता है।

2. आज की विद्यालय शिक्षा प्रणाली में केवल पुस्तकीय ज्ञान की भरमार है अत: आज की शिक्षा प्रणाली पुस्तकीय ज्ञान देने के अलावा शायद ही अन्य प्रकार की शिक्षा प्रदान करती हो। प्राचीन काल में जहाँ शिक्षा को मात्र ज्ञान देने से बढ़कर संस्कार से भी संबंधित समझा जाता था वहीं वर्तमान शिक्षा में संस्कारों का अभाव देखा जाता है, उसके साथ-साथ शैक्षिक स्तर को भी निम्न स्तर पर ला दिया है क्योंकि वह शिक्षा जो एक अध्यापक छात्र को देना चाहता है यदि छात्र उस शिक्षा व ज्ञान का अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग ना कर सके तो वह व्यर्थ है, जिसे हम आधुनिक पीढ़ी के संस्कार हीन एवं पुस्तकीय ज्ञान से बोझिल व्यवहार में देख सकते हैं ।

3. वर्तमान शिक्षा पूर्ण रूप से क्रिया पर आधारित तो है लेकिन अतिरिक्त बोझ के कारण प्रभावी नहीं है। आज की युवा पीढ़ी के अधूरे ज्ञान को देख कर इस की तह तक पहुँचा जा सकता है कुछ यह भी सोचते होंगे कि ऐसा व्यवसाय क्षेत्र की विभिन्नता के कारण है लेकिन सत्यता यह है कि व्यवसाय क्षेत्र की विविधता होते हुए भी आज का शिक्षार्थी एक भी क्षेत्र में अपना पूर्ण योगदान देने में असमर्थ है। वस्तुत: आज की शिक्षा प्रणाली केवल व्हाइट कॉलर जॉब के लिए ही प्रेरित करती है, ऐसी स्थिति में वर्तमान शिक्षा प्रणाली केवल बेरोजगारों की अतिरिक्त खेप तैयार करने की प्रणाली भर बन कर रह गई है।

इंटरनेट आधारित शिक्षा का प्रचलन अभी धीरे-धीरे अपने चरम पर पहुँच गया है जो देश की तकनीकी व शैक्षिक प्रगति का प्रतीक बन गया है, लेकिन विद्यालय स्तर पर उसका पूर्ण रूपेण दुरुपयोग ही देखा गया है। क्योंकि विद्यार्थी के मन में ना ही अध्यापक का भय है ना ही शिक्षा के प्रति रुचि। प्रश्न यह उठता है कि क्यों आज का विद्यार्थी शिक्षा की महत्ता एवं आवश्यकता को समझने के बजाय इंटरनेट की दुनिया में गुम सा हो गया है जो कहीं ना कहीं यह इंटरनेट पर आधारित शिक्षा का दुष्परिणाम है।

4. विद्यालय की कक्षा-कक्ष के अंतर्गत शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति केवल अंक निर्धारण ही नहीं है बल्कि इससे अधिक बहुत कुछ है। गाँधीजी सदैव बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देते थे। खेलों के माध्यम से शिक्षा, जीवन के गुणों, मानसिक एवं शारीरिक विकास का महत्त्वपूर्ण आयाम इस विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में समाप्त सा हो गया है। केवल अंक प्रणाली पर अधिक जोर एवं शारीरिक गतिशीलता को रोक कर हम शारीरिक एवं मानसिक दृढ़ता की दृष्टि से कमजोर युवा ही देश को दे रहे हैं। इस के साथ ही वे मातृभाषा को ज्ञान प्राप्ति का उत्तम आधार एवं माध्यम मानते थे। शिक्षा के माध्यम की विविधता के कारण भी बालक अधिगम में स्वयं को असुरक्षित एवं असमर्थ पाता है वह ज्ञान के उस स्वरूप को उसी स्तर पर ग्रहण नहीं कर पाता है।

आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली को वास्तविक एवं व्यावहारिक शिक्षा से जोड़ने की जरूरत है। इसमें व्याप्त कमियों को दूर करने के लिए निम्न बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है-

1. डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि 'शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे बल्कि वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।' अत: शिक्षा केवल सूचना पर आधारित ना होकर जीवन से जुड़ी होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी शिक्षा को अपने ऊपर बोझ नहीं बल्कि जीवन का एक हिस्सा समझकर उस पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए स्वयं को सक्रिय व जागरूक रख सके।

2. पढ़ाई में रटन तोता बनाने की बजाय उसे जीवन के साथ क्रियात्मक एवं व्यावहारिक रूप से जोड़ कर प्राचीन शिक्षा प्रणाली के इस गुण को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित कर दोषों को दूर किया जा सकता है।

3. वर्तमान शिक्षा पद्धति को वास्तविक धरातल पर लाने हेतु उसमें कुछ परिवर्तन होना आवश्यक है जिनमें मूल्य आधारित शिक्षा के साथ-साथ चरित्र व संस्कार निर्माण पर विशेष बल देने की आवश्यकता है।

4. वर्तमान शिक्षा पद्धति में व्यावहारिक शिक्षा को जोड़ने के साथ-साथ शिक्षा के दायरे को भी विस्तृत करना होगा। नैतिक शिक्षा पर जोर एवं जीवन मूल्यों पर आधारित पाठ्यक्रम को लाना होगा।

व्यावहारिक एवं वास्तविक शिक्षा अवधारणा के माध्यम से वर्तमान शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूरकर इसे पूर्ण एवं सार्थक बनाया जा सकता है।

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
राजकीय माध्यमिक विद्यालय गीगासर,
बीकानेर (राज.)
मो: 8432113761

कोरोना - संकट

सावधानी हटी - दुर्घटना घटी

❒ डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

एक लम्बे अंतराल के बाद सरकार द्वारा फिर से स्कूलों को खोलने के आदेश जारी किए गए हैं, यह कदम निश्चित रूप से शिक्षा जगत के साथ-साथ समस्त शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा शिक्षाविदों के लिए एक सुखद पहल माना जाएगा। कोविड-19 महामारी का जिस तरह से देश और दुनिया में आक्रमण हुआ, धीरे-धीरे समाज और समाज के विविध अंगों पर प्रभाव पड़ने लगा था, पर जब सभी क्षेत्र प्रभावित हो ही रहे थे, ऐसे में शिक्षा विभाग तो बेहद संवेदनशील तथा समाज का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग है, अतः इसका प्रभावित होना स्वाभाविक ही था, इसीलिए राज्य सरकार द्वारा प्रभावी कदम उठाते हुए गत सत्र को समुचित रूप से व्यवस्थित किया तथा अब इस सत्र में विद्यालय खोले जाने की स्वीकृति प्रदान की गई है परन्तु इतना कुछ होने के बावजूद हम सभी पूर्ण सतर्क रहें तथा कोविड निर्देशों की सावधानीपूर्वक पालना करते रहेंगे तो विद्यालय खोले जाने के बाद भी हमें दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ेगा। कोरोना अभी पूरी तरह से हमारे राज्य, देश से गया नहीं है, लोगों में अभी भी संक्रमण की संभावना बनी रहती है, वैक्सीनेशन यद्यपि पूर्ण तैयारी से हो रहा है, पर जब तक सभी का टीकाकरण नहीं हो जाता है, हमें पूर्ववत् नियम शर्ते तो माननी ही है, कुछ सावधानियों का विशेष ख्याल रखा जाना है, जिससे विभाग भी तनाव मुक्त रह सके, हमारा विद्यालय भी स्वस्थ व आनन्द में रह सकें।

सभी संस्थाप्रधान तथा कक्षाध्यापक इस बात की सुनिश्चितता कर लें कि विद्यालय परिसर, फर्नीचर, प्रयोगशाला उपकरण, स्टेशनरियाँ, पेयजल, कक्षा-कक्ष, शौचालय-मूत्रालय तथा अन्य दैनिक उपयोग के सामान समय-समय पर सैनिटाइज किए जाते रहें, पानी की टंकी के पास तथा सुविधाओं के बाहर यदि हैण्ड सैनेटाईजर, साबुन, लिक्विड हैण्डवाश होंगे तो बालकों और स्टाफ साथियों के लिए अपने हाथों को संक्रमण मुक्त रखे जाने में सुविधा होगी। आजकल पैरों से संचालित किए जाने वाले सैनेटाइज यंत्र भी खूब प्रचलित हैं, यदि हम अपने बजट से या भामाशाहों के सहयोग से ऐसे यंत्र कक्षा-कक्षों/विद्यालय मुख्य द्वार के समीप लगवा लें तो बालक और स्टाफ साथी, बिना हाथ छुए, अपने आप को संक्रमण मुक्ति के साथ-साथ सोडियम हायक्लोराइट, फिनाइल तथा अन्य सैनेटाइजर द्वारा बार-बार बरामदे, कक्षा-कक्ष तथा अन्य परिसर को भी साफ किया जाता रहना चाहिए।

संस्थाप्रधान यदि विद्यालय के सभी बालकों को सोशल मीडिया, अपने ई लर्निंग वाले कक्षा वाट्सएप ग्रुप के माध्यम से यदि ऐसे निर्देश पहले ही दे दें कि बिना फेस मास्क, फेस शील्ड तथा अभिभावक की लिखित सहमति के किसी छात्र-छात्रा को विद्यालय नहीं आने दिया जाएगा, तो निश्चित रूप से सारे विद्यार्थी मास्क पहन कर ही स्कूल आएँगे। इन निर्देशों के बावजूद यदि कोई बालक गलती से बिना मास्क स्कूल आ जाता है तो हमें अपने स्कूल परिसर में भी कुछ मास्क भामाशाहों के माध्यम से रखवा दिए जाने चाहिए, ताकि बिना मास्क वाले बच्चों को तुरन्त मास्क दिया जा सके। बच्चों के साथ-साथ सभी स्टाफ साथी, अभिभावक या कोई भी आगंतुक विद्यालय परिसर में मास्क पहन कर ही रहें, यह बात हमें प्रमुखता से प्रचारित-प्रसारित करनी होगी।

एक बात और, हमारा प्रयास यही रहे कि सारे विद्यार्थी अलग-अलग बैंच या टेबल-स्टूल पर अलग-अलग अकेले ही बैठें, यदि ऐसा संभव ही नहीं हो पा रहा हो तो प्रत्येक बालक के मध्य पर्याप्त दूरी अवश्य हो। कमरे, सारे ही पूरी तरह हवादार, रोशनी युक्त तथा खुले-खुले हों, इसका पूर्ण ध्यान रखा जावें। ना ही कोई छात्र-छात्रा अपनी शिक्षण सामग्री यथा पैन, पेंसिल, कापी, किताब, बैग आदि एक दूसरे का लेवें-देवें, ना ही अपने लंच बॉक्स को भी आपस में मिल बाँट कर खाएँ, इस बात का विशेष ख्याल रखा जाना चाहिए। हमें उन्हें समझाना है कि रोग अभी गया नहीं हैं, अतः सब अपनी सोशियल डिस्टेंसिंग को पर्याप्त रूप से पालन करते रहें।

प्रायः यह देखा जाता है कि विद्यालय का मैन गेट कम ही खोला जाकर, इसके बजाय छोटी फाटक ही खोली जाती है। हमें इस नियम को भी बदलते हुए, अब विद्यार्थियों के आने-जाने के समय स्कूल के मुख्य द्वार को ही खोला जाना चाहिए, इससे एक साथ भीड़-भाड़ से हम बचे रह सकेंगे। प्रत्येक कक्षा में डस्टबिन तो रखा ही जाए पर यहाँ-वहाँ थूकने की आदत या कचरा फैलाने की आदत किसी छात्र-छात्रा में हो तो हमें टोक देना चाहिए। जिन बालकों में खाँसी-जुकाम, सर्दी, बुखार या अन्य कोई रोग का लक्षण दिखाई दे रहा हो तो उसे स्वस्थ होने तक विद्यालय में आने हेतु नहीं कहा जाए। हर बालक-बालिका रूमाल या टिशु पेपर रखें, जो खाँसते या छींकते हुए उनके काम आ सके।

सरकारी निर्देशों की पालना करते हुए हमें प्रार्थना सभा, संगोष्ठी, खेलकूद, चर्चा-विमर्श, उत्सव, जयंती अथवा शनिवारीय कार्यक्रम आदि किसी प्रकार के कोई आयोजन करने हैं। अतः विविध सह शैक्षणिक गतिविधियों के संबंध में समय-समय पर उच्चाधिकारियों की ओर से निर्देश व परिपत्र जारी किए जाते रहते है। हमें उसी अनुरूप आयोजित करने हैं। संस्थाप्रधान भी सतर्क रहे तथा स्टाफ साथी और विद्यार्थी भी यदि इन निर्देशों की पालना करते रहे तो हमारा विद्यालय निश्चित रूप से संक्रमण से मुक्त रह सकेगा। यही आज के समय की आवश्यकता है।

समता भवन के पास, रायपुर, भीलवाड़ा
(राज.)-311803
मो: 9460351881

पुस्तक समीक्षा

सुशासन की व्यथा

लेखक : **बद्रीलाल स्वर्णकार;** प्रकाशक : **Self Published, 17-A-40, बापू नगर, भीलवाड़ा–311001;** संस्करण : **2020;** पृष्ठ संख्या : **174;** मूल्य : ₹ **299 ।**

राज्य की किसी भी सेवा से जुड़े व्यक्ति का शासन की व्यवस्थाओं से सीधा नाता होता है, उसके अपने अनुभव होते हैं, लेकिन यदि व्यक्ति प्रशासनिक सेवा से जुड़ा रहा हो तो उसके अनुभवों की विविधता के कारण उनका साझा होना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। लेखक प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त हुए हैं। उनके अनुभव वैसे ही उत्सुकता जगाते हैं, लेकिन जब वह 'सुशासन की व्यथा' शीर्षक से पुस्तक के रूप में आते हैं तो उसमें रुचि और भी बढ़ जाना स्वाभाविक है। आमुख में श्रीमती गुरजोत कौर, जो स्वयं प्रशासनिक सेवा की अधिकारी रही हैं ने लेखक का यह प्रयास राज्य सुशासन व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, संवेदनशील व जवाबदेह बनाने का प्रयास करने वाले व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए उपयोगी होने की आशा की है। यही आशा पुस्तक पढ़ते हुए पाठक भी करने लगता है।

पुस्तक की प्रस्तावना श्री स्वर्णकार स्वयं कुछ गंभीर प्रश्नों के साथ शुरू करते हैं यथा– क्या आज के वातावरण में प्रशासनिक व्यवस्था अपने दायित्वों को सम्यक रूप से निर्वहन कर पा रही है? क्या हमारे सरकारी तंत्र ने आम नागरिकों के प्रति अपने दायित्वों को उचित महत्त्व देना कम कर दिया है? क्या सरकारी तंत्र के कर्त्तव्य निर्वहन में राजनीतिक या अन्य दबावों का बोलबाला है? ये प्रश्न आम आदमी व पाठक को भी हमेशा परेशान करते हैं, सो यह पुस्तक शुरूआत से ही पढ़ने के लिए उत्सुकता पैदा करती है, समाधान की स्वाभाविक तलाश में।

'सुशासन की व्यथा' को लेखक ने चुनौतियों, समाधान, प्रयासों और संभावनाओं के रूप में सम्मिलित करते हुए व अध्यायों में बाँटा है। इसमें लेखक ने शासन के अंग के रूप में प्रशासनिक अधिकारी के व्यक्तित्व के अस्तित्व को अनवरत मिलती चुनौतियों से शुरूआत कर बाहर से अत्यधिक ताकतवर दिखने वाले वर्ग की पीड़ा को उजागर किया है। प्रथम अध्याय में एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात लेखक ने कही है– 'हमारे तंत्र की सबसे बड़ी व्यथा यही है कि हमारी अधिकांश शक्ति इस व्यवस्था को बनाए रखने में ही क्षीण हो जाती है।'

शासन तंत्र के एक हिस्से के रूप में कार्य करते हुए मिले अनुभवों से लेखक जब यह कहता है कि 'एक विभाग में कुछ समय तक काम करने पर जब कार्य संतुष्टि आने लगती है, तभी तुरंत ऐसे दूसरे विभाग में ट्रांसफर हो जाता है जिसका उस विभाग से दूर–दूर तक नाता नहीं होता।' तो इस स्थिति को सहज स्वीकार करने के बावजूद यह एक गंभीर प्रश्न तो सुशासन की कार्य प्रणाली पर खड़ा होता प्रतीत होता है। यह व्यथा लेखक द्वारा उद्धृत गीता के कथन 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' में वास्तव में ढाँढ़स बंधाते वाक्य में ध्वनित नहीं होती।

शासन के महत्त्वपूर्ण अंग रहने के बावजूद लेखक प्रश्न उठाता है– 'क्या कारण है कि शासन प्रणाली को चुस्त–दुरुस्त करने में हम अधिकांशतया जाने–अनजाने में अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति को न्याय दिलाने में कहीं पीछे रह जाते हैं तब वह प्रशासक के रूखे व्यक्तित्व के आवरण के पीछे के एक संवेदनशील मन को भी सामने लाता है। वे इसी प्रश्न के साथ एक भेद भी उजागर करते हैं–'हमारी सुशासन की अवधारण ऊपरी छोर पर तो बहुत मजबूत दिखाई देती है किन्तु नीचे के छोर तक पहुँचते–पहुँचते वह कमजोर होकर अनन्त में विलीन हो जाती है। जब लेखक ऐसा कहते हैं तो यह तब वास्तव में व्यक्ति की पीड़ा मात्र न रहकर वाकई में सुशासन की पीड़ा महसूस होने लगती है।

लेखक कुछ निराशा से कथन करते हैं कि 'इस व्यवस्था के माध्यम से लक्ष्य प्राप्ति बहुत खर्चीली व समय साधक हो गई है। लेकिन यही लेखक समाधान भी देता है। वह जनसाधारण की समस्याओं का निदान आधुनिक तकनीकी व सूचना संप्रेषण के माध्यमों से आसानी से किया जाकर सुशासन व्यवस्था में नए आयाम स्थापित कर किए जाने के प्रति आशान्वित भी है।

पुस्तक में विषय का विकास श्री स्वर्णकार द्वारा बहुत सहजता के साथ अपने अनुभवों से जोड़कर किया है। किस्सों के माध्यम से भी गंभीर प्रश्नों को उठाया है। प्रशिक्षण कार्य में भी संभागी के माध्यम से एक प्रश्न खड़ा करते हैं कि 'सुना है कि राजकीय सेवा में राजनैतिक दखलंदाजी बहुत होती है।' तब यह प्रश्न लेखक का सुशासन का मात्र नहीं रहकर आमजन का प्रश्न बन जाता है। लगभग ऐसे ही प्रश्न वे तब भी उठाते हैं जब आँगनबाड़ी केन्द्रों के संबंध में अपने अनुभव को जोड़ते हैं, यह परियोजना बड़ी मुश्किल से हम स्वीकृत करवाकर लाए हैं। आपको हमारे से तालमेल बिठाकर चलना होगा।' या फिर 'आँगनबाड़ी कार्यकर्ता चयन में हमारी दखलंदाजी तो होगी ही।' यहाँ सुशासन के लिए संघर्ष की स्थितियाँ सामने आती हैं। लेखक इस प्रश्न का सीधा उत्तर नहीं देता, बल्कि समाधान के साथ उत्तर खोजता है– ''एक सफल सुशासन व्यवस्था के लिए उत्तरदायी राजनीतिक नेतृत्व, दूरदर्शी नीति निर्धारण, कुशल एवं संवेदनशील अफसरशाही, सुदृढ़ सिविल सोसायटी, स्वतंत्र सूचना तंत्र तथा स्वतंत्र न्याय व्यवस्था भी होनी चाहिए।'

श्री स्वर्णकार माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक रहे हैं, जो कि राज्य में सबसे बड़े सरकारी विभागों में से एक है। इस पद के अपने कार्यकाल के अनुभवों को उन्होंने विस्तृत रूप से साझा किया है। उनके कार्यकाल में विभाग द्वारा असंभव सा लगने वाला प्रयास, नियुक्ति व पदोन्नति काउंसलिंग से पूर्ण पारदर्शिता के साथ सफलतापूर्वक किए जाने का कार्य किया गया। वे लिखते हैं कि स्कूल शिक्षा विभाग में पदस्थापन का कार्य राजनैतिक व प्रशासनिक दखलंदाजी से गंभीर चिंता का विषय बन जाता था। उसी स्तर यानि विभागीय मंत्री एवं ऊपर के स्तर पर इसके निराकरण हेतु गंभीर चिंतन किया गया कि नियुक्ति व पदोन्नति पर पदस्थापन बिना किसी सिफारिश के पूर्णतया आवश्यकता और वरीयता के आधार पर किया जाए। इस प्रक्रिया में न केवल पारदर्शिता व न्यायपूर्ण नीति से पदस्थापन किया गया बल्कि उन रिक्तियों की प्राथमिकता तय की गई। जहाँ शिक्षकों की

सर्वाधिक आवश्यकता थी। इस व्यवस्था ने सभी के मन में से असंतुष्टि का हमेशा रहने वाला भाव समाप्त कर दिया। इस व्यवस्था की राजनैतिक लोगों ने भी सराहना की, जिन्हें हमेशा भेदभाव की शिकायतें सुननी पड़ती हैं। यह लेखक द्वारा प्रस्तावना में किए गए कथन का समर्थन करता है 'समस्याओं में ही उनका समाधान भी छुपा होता है।

'सुशासन की कथा' में लेखक अपने अनुभवों की स्मृतियों से गुजरते हैं तो उन उत्सुक लोगों को भी साथ ले लेते हैं जो शासकीय व्यवहारों को सीखना चाहते हैं। शिक्षा विभाग के अधिकारियों श्री विजय शंकर आचार्य एवं श्री अरुण शर्मा का जिक्र करते हुए विभाग के अनुभवी लोगों की सलाह से कार्य करने के महत्त्व को रेखांकित करते हैं।' अपनी भिन्न कार्यशैली के अनुसार वे किसी भी प्रस्ताव को रखते हुए उसके खिलाफ लोगों की राय जोर देकर प्राप्त करते हैं। इससे कार्य प्रारंभ करने से पूर्व ही उसके क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का अनुमान लगाया जा सकता है। इससे उनके समाधान भी पहले ही खोजे जा सकते हैं। यह काफी उपयोगी अनुभव व कारगर कार्यशैली साबित हो सकती है। इसका एक लाभ यह भी होता है कि अधीनस्थ किन्तु अनुभवी अधिकारी अपनी बेबाक राय देने में नहीं हिचकिचाते।

शिक्षा विभाग के कार्यकाल की बहुत अच्छी स्मृतियों के साथ ही कुछ समस्याओं को भी लेखक ने बेबाकी से सामने किया है। इसमें सबसे विकट समस्या है कि शिक्षकों के तबादले का कार्य। वे कहते हैं- माननीय विभागीय मंत्री का अधिकांश समय तो स्थानान्तरण आवेदन अनुरोधों के निस्तारण में ही निकल जाता हैं।

सेवानिवृत्ति के बाद अपने अनुभवों को लिखते हुए लेखक सायास एक आम आदमी की व्यथा भी कहते हैं- 'कई प्रयत्नों के बाद कुछ जोर आजमाइश के बाद आखिर मेरा काम हो गया। रिटायरमेंट के बाद इस प्रकार मेरा अहसास पक्का हो गया कि तथाकथित बड़े कार्यालयों में सामान्य नागरिक द्वारा कार्य करवाना कितना मुश्किल होता है।

'सुशासन की व्यथा' पढ़ते हुए कहा जा सकता है कि इस पुस्तक में सुशासन की स्थापना में जो चुनौतियाँ आती हैं उनका काफी बेबाकी से वर्णन किया गया है। हर चुनौती के साथ घटनाओं के उल्लेख सहित उनसे निपटने के उपाय और समस्याओं के व्यावहारिक समाधान भी दिए गए हैं, जो नए लोगों का अवश्य मार्गदर्शन करेंगे। भाषा संयमित और गरिमापूर्ण है। श्री बद्रीलाल स्वर्णकार एक मंजे हुए लेखक की तरह पाठक को बाँधे रखते हैं। उनकी शैली रोचक प्रभावी और कभी-कभी चुटीली भी बन पड़ी है। पढ़ते समय कभी-कभी लगता है कि लेखक अपनी सफलताओं को बताने के लिए भी लिख रहे हैं, जबकि ऐसा सोचना हमारी सोच की सीमा ही होगा। यदि समस्याओं और समाधानों का वर्णन इस प्रकार नहीं किया जाता है तो पुस्तक अपने लिखे के उद्देश्यों को ही पूरा नहीं करती।

पुस्तक में वर्तनी संबंधी कुछ असावधानियाँ हैं, जो एक अच्छी पुस्तक में कुछ अखरती है। पुस्तक पूरा पढ़ने के बाद कभी-कभी लगता है कि लेखक को अपनी पूर्व पद की गरिमा और अनुशासन से और बाहर आना चाहिए ताकि वह पूर्ण लेखक की स्वतंत्र भूमिका में आ सके। एक नई किताब में यह अपेक्षा बढ़ जाएगी।

समीक्षक : **रमेश कुमार हर्ष**
रीडर, IASE, बीकानेर (राज.)
मो: 7976945057

राजस्थानी साहित्य का समकाल

लेखक : **डॉ. नीरज दइया;** प्रकाशक : **सूर्य प्रकाशन मंदिर, दाऊजी रोड, बीकानेर;** संस्करण : **2020;** पृष्ठ संख्या : **128;** मूल्य : **₹ 200/-**

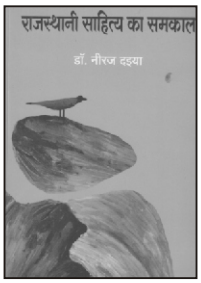

'राजस्थानी साहित्य का समकाल' समकालीन राजस्थानी साहित्य पर केन्द्रित हिन्दी में आलोचनात्मक पुस्तक है। डॉ. नीरज दइया कृत इस पुस्तक में गत वर्षों में आधुनिक राजस्थानी साहित्य और भाषा मान्यता के संबंध में बारह आलेखों को संकलित किया गया है। राजस्थानी भाषा की मान्यता के सवाल से लेखक नीरज दइया ने अपनी बात आरंभ करते हुए समकालीन राजस्थानी साहित्य की विविध विधाओं के विकास को व्यापकता से रेखांकित करते हुए एक विहंगम परिदृश्य प्रस्तुत किया है।

पुस्तक के तीन आरंभिक आलेखों में राजस्थानी भाषा के मान्यता मुद्दे को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत करते हुए विद्वान लेखक ने राजस्थानी के चाहने वालों के समक्ष ठोस आधार भूमि प्रस्तुत की है। इन आलेखों में बहुत विनम्र भाषा में सटीक तर्क के साथ भाषा विसर्जन को आधार बनाते हुए अनेक महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ और अपना पक्ष लेखक ने रखा है। राजस्थानी एक संपूर्ण और समृद्ध भाषा है, इसके साक्ष्य को अनेक बिंदुओं में इस कृति में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक नीरज दइया की यह विशेषता है कि वे अपने आलोचनात्मक आलेखों में इस बात का विशेष आग्रह रखते हैं कि उनके उदाहरण और पक्ष-विपक्ष की तमाम बातें हमारे आसपास के और अपनी ही भाषा के साहित्य में प्रस्तुत की जाए। अन्य विद्वान समालोचकों की भाँति अनेक प्रख्यात देशी-विदेशी लेखकों के कथनों की भरमार नहीं प्रस्तुत कर लेखक ने केवल और केवल अपने मुद्दे की बात अपने अंदाज में की है जो प्रभावित करता है और संप्रेषित भी अधिक होता है। लेखक ने अपने समकाल और समकालीन साहित्य को सम्यक दृष्टि से देखने-समझने और परखने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इस कृति में मुख्य रूप से साहित्य की केन्द्रीय विधाओं को विमर्श का विषय बनाया गया है।

आलोचक डॉ. नीरज दइया की इस कृति का महत्त्व दो दृष्टियों से किया जा सकता है, जिसमें पहला साहित्य के विकास और प्रवाह के महत्त्वपूर्ण आयामों को सहेजते हुए सम्यक रूप प्रस्तुत करना, वहीं दूसरा और अधिक महत्त्वपूर्ण विधाओं के तकनीकी पक्षों को रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए रचनात्मक आरोह-अवरोह को रेखांकित करना। उपन्यास और कहानी में अंतर को दर्शाने वाले आलेख के अंतर्गत दोनों विधाओं के तात्विक अंतर को जहाँ सूक्ष्मता से स्पष्ट किया गया है, वहीं इस आलेख में न केवल राजस्थानी साहित्य वरन इसकी परिधि में संपूर्ण साहित्य के समकाल को देखने-परखने के आयाम भी उद्घाटित होते हैं। किसी भी रचना में भाषा का अवदान महत्त्वपूर्ण

होता है। भाषा की सहूलियत और सहूलियत की भाषा आलेख में उपन्यासों पर अपनी बात को केन्द्रित करते हुए लेखक ने राजस्थानी उपन्यास विधा में भाषिक तत्व को गहनता से विवेचित किया है। राजस्थानी कहानी के संबंध में इस कृति में तीन आलेख संकलित किए गए हैं, जिनमें राजस्थानी कहानी के कदम दर कदम विकास के साथ उसमें होने वाले शिल्प और संवेदना के स्तर पर बदलावों और उनके अनेक पक्षों का सुंदर विवेचन भी किया गया है।

आधुनिक समकालीन कविता के साथ ही युवा कविता स्वर का भी सम्यक विश्लेषण दो आलेखों में प्रस्तुत किया गया है। इन आलेखों में अपने समकालीन लेखकों पर लिखते हुए लेखक ने जहाँ निर्ममता दिखाई है। वहीं रचनात्मक सबल पक्षों के प्रस्तुतिकरण में अपने साथी और पूर्ववर्ती पीढ़ी के रचनाकारों की भरपूर सराहना भी पुस्तक में देख सकते हैं। अंतिम आलेख के रूप में इस अभिभाषण को संग्रह में स्थान दिया गया है। जो आलोचक डॉ. नीरज दइया ने साहित्य अकादमी मुख्य पुरस्कार को ग्रहण करने के बाद नई दिल्ली में दिया था। इसमें उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा और आलोचनात्मक दृष्टि के बारे में उदाहरणों के साथ अपनी आत्मीयता और भाषा के प्रति लगाव को अभिव्यंजित किया है। पुस्तक के फ्लैप पर डॉ. मदन गोपाल लढ़ा के इस मत से सहमत हुआ जा सकता है।-'भारतीय भाषाओं के बीच राजस्थानी साहित्य की समालोचना की यह पहल नई होने के साथ सार्थक भी है।'

यह पुस्तक न केवल राजस्थानी में रुचि रखने वाले पाठकों-शोधार्थियों के लिए उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है, वरन भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के लिए भी पर्याप्त महत्त्व रखती है। लेखक नीरज दइया का मानना है कि भारतीय साहित्य का पूरा परिदृश्य भारत की सभी भाषाओं के समकालीन राजस्थानी साहित्य से निर्मित होता है और इस क्रम में यदि समकालीन राजस्थानी साहित्य को किसी एक पुस्तक के जरिए जानना हो तो यह पुस्तक जरूरी है।

समीक्षक : **डॉ. सत्यनारायण सोनी**
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय टोपरियां, नोहर, हनुमानगढ़ (राज.)-335523
मो: 7014967603

सरहिंद रो साको

लेखक : **मनोज कुमार स्वामी;** प्रकाशक : **बोधि प्रकाशन,** जयपुर; संस्करण: **अगस्त 2020;** पृष्ठ संख्या : **80;** मूल्य : ₹ **100**

किसी भी भाषा के विकास एवं प्रचार-प्रसार का सबसे विश्वसनीय माध्यम उसका बाल साहित्य होता है। बाल साहित्य की मार्फत ही नई पीढ़ी को लिखने-पढ़ने की संस्कृति से जोड़ा जा सकता है। नवीन तकनीक के जीवन में तेजी से पाँव पसारने के साथ पुस्तक संस्कृति पर खतरा स्पष्ट नजर आ रहा है। सार्वजनिक पुस्तकालय-वाचनालय की परम्परा अब बीते जमाने की बात हो चुकी है। मोबाइल-लैपटॉप के चलते घरों से भी किताबों का कोना धीरे-धीरे गायब हो रहा है। अंकों की प्रतिस्पर्धा व कॅरियर के दबाव के बीच बच्चों के पास मनोरंजक साहित्य पढ़ने का न तो समय है और ना ही अवसर। सच का एक चिंताजनक पहलू यह भी है कि अच्छी व सस्ती किताबें बाल पाठकों के हाथों में पहुँच भी नहीं पाती। इधर दैनिक अखबारों से बच्चों के पन्ने गायब होते जा रहे हैं वही गाँव-कस्बों के जुनून का केन्द्र होने वाली कॉमिक्स की जगह अब टीवी कार्टून शो ने ले ली है, वही दादी-नानी की कहानियों के स्थान पर वीडियो मोबाइल गेम्स आ गए हैं। ऐसी परिस्थितियों में बच्चों के लिए लेखन-प्रकाशन किसी चुनौती से कम नहीं रह गया है।

संवैधानिक मान्यता के लिए संघर्षरत मातृभाषा राजस्थानी के संरक्षण के लिए बाल साहित्य उतना ही जरूरी है जितना जीवन के लिए हवा पानी। इसी सोच का प्रतिरूप है चर्चित कथाकार-बाल साहित्यकार मनोज कुमार स्वामी का नवीनतम बाल एकांकी संग्रह 'सरहिन्द रो साको।' सहज सरल भाषा के संवादों से युक्त यह संग्रह बाल पाठकों के लिए मनोरंजक तो है ही, उनको जीवन मूल्यों से संस्कारित करने वाला भी है।

आलोच्य किताब में कुल छह एकांकी शामिल किए गए है जिनमें भावानुरूप रेखाचित्र भी प्रकाशित हुए हैं। शीर्षक रचना 'सरहिंद रो साको' देशप्रेम व त्याग के भावों से ओतप्रोत है। इस एकांकी में महान गुरु गोविंद सिंह जी के दो सपूतों के राष्ट्रधर्म हितार्थ बलिदान की प्रेरक कहानी है। 'माँ सा गुजरी खंनै दो हीरा, बां नैं खोसण फिरै केई नुगरा, मा सा नैं इतरो फिकर बस खावै, लाग दाग ना धरम रै जावै' जैसे गीतों से बुने इस एकांकी को पढ़ते समय रोंगटे खड़े हो जाते हैं व मन उन अमर शहीद बालकों के प्रति श्रद्धा से झुक जाता है। 'फरक' और 'बेटी अर मोटी' एकांकी कन्या भ्रूण हत्या की नापाक हरकतों के प्रति एक अजन्मी बेटी की मार्मिक आवाज को मुखरित करता है। 'आँखदान' परमार्थ का भाव जगाने वाला एकांकी है जिसमें एक बच्चा अपनी दादी को नेत्रदान के पुण्य कार्य की ओर प्रवृत्त करता है। रक्तदान, अंगदान व देहदान जैसे सेवा कार्यों के बारे में समाज में भ्रम निवारण व जागरूकता के प्रसार के लिए ऐसे रचनात्मक प्रयास ही कारगर साबित हो सकते हैं। 'फीस' एकांकी शिक्षा व्यवस्था के ओनों-कोनों को प्रकाशित करता है तो 'फूंफा' सामाजिक ताने-बाने पर केन्द्रित एक हास्य एकांकी है।

बच्चों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य का पांडित्य प्रदर्शन से मुक्त होना बेहद जरूरी है ताकि बाल पाठक उससे सीधा जुड़ सके। इन रचनाओं को पढ़ते वक्त बाल पाठकों का मन न केवल प्रफुल्लित हो जाता है बल्कि प्रेरक संदेश दूध-शक्कर की तरह मिला होने से थोपा हुआ नहीं लगता। मनमोहक आवरण से सुसज्जित यह कृति निश्चय ही बाल पाठकों का मन मोहने वाली है। इस रचनात्मक उपक्रम के लिए एकांकीकार मनोज कुमार स्वामी व बोधि प्रकाशन के प्रबंधक मायामृग साधुवाद के अधिकारी हैं।

समीक्षक : **डॉ. मदन गोपाल लढ़ा**
प्रधानाचार्य
144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर (राज.)
मो: 9982502969

नाक का सवाल

लेखक : **बसंती पंवार;** प्रकाशक: **साहित्य सागर प्रकाशन, जयपुर-302003;** संस्करण : **2019;** पृष्ठ संख्या : **144;** मूल्य : ₹ **225**

आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की लोकप्रियता किसी से छुपी नहीं है लेकिन

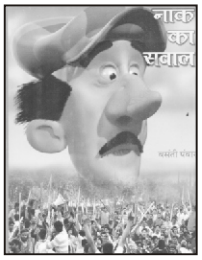

आमतौर पर हास्य और व्यंग्य को एक जैसी विधा समझ लिया जाता है। क्योंकि दोनों का उद्देश्य लोगों को हँसाना है। जबकि व्यंग्य रचना का मूल उद्देश्य केवल मात्र हँसाना न होकर मानव और समाज में व्याप्त दोगले चरित्र, विद्रूपताओं और विडम्बनाओं पर अंगुली रखना है। श्री हरिशंकर परसाई के अनुसार 'व्यंग्य-जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का उत्कृष्ट उदाहरण है। श्री हरिशंकर परसाई ने हास्य और मजाक को व्यंग्य समझने वालों के लिए व्यंग्य के मूलभूत तत्वों की आवश्यकता को रेखांकित किया है। श्री हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाएँ पाठकों को हँसाते-गुदगुदाते अपनी चुटीली शैली में मानवीय या समाज के छीजते जीवन मूल्यों पर दृष्टिपात करने को मजबूर कर देती है। श्री शरद जोशी, प्रेम जन्मेजय, आलोक पुराणिक वगैरा लेखकों ने भी व्यंग्यात्मक आलेखों के माध्यम से पाठकों में एक नयी चेतना जाग्रत करने की पहल की है।

समीक्ष्य कृति 'नाक का सवाल' भी इसी श्रेणी में आती है। इस कृति की रचनाकार श्रीमती बसंती पंवार का यह पहला व्यंग्य संग्रह है। जिसमें 43 रचनाओं का समावेश है। संग्रह की पहली रचना 'पानी' की शुरूआत उन्होंने रहीम जी के प्रसिद्ध दोहे 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।' पानी गए न उबरे मोती मानस चून।।' से करते हुए पानी के विभिन्न उपयोग के साथ-साथ इसके व्यावसायीकरण और अपव्यय को बखूबी रेखांकित किया है।

हमारे समाज में पानी को व्यक्ति के सम्मान (इज्जत) से जोड़ा जाता है। आज के युगीन सत्य को उद्घाटित करते हुए वे लिखती हैं, 'पानीवाला (इज्जतदार) व्यक्ति इज्जत के योग्य कहाँ बचता है? उसे कोई हींग लगाकर ही नहीं पूछता है। इसलिए हर कोई अपना-अपना पानी उतारने में लगा हुआ है।

'कुर्सी' का जिक्र आते ही लोगों के सामने जो तस्वीर आती है। उसके साथ-साथ उन्होंने बैठने और बिठाने के विभिन्न मकसदों की चर्चा करते हुए वे नसीहत देती है कि 'तो जनाब! जहाँ भी बैठना, देखभाल कर, संभलकर बैठना। कई बार लोग जिसे फूलों की सेज समझकर बैठते हैं, वो काँटों भरा गद्दा होता है।'

'सुख पर शर्त' में विदुषी लेखिका ने राग (माया) के दलदल में फंसे लोगों की तृष्णा पर चुटकी लेते हुए लिखा है- 'लोग सुख पर शर्त इसलिए नहीं लगाते, इसीलिए दुखी हैं, सुख पर शर्त लगाते हैं, इसलिए सुखी नहीं हो पाते। जैसे ही जब कोई वस्तु मिलती है, तो दूसरी मुँह उठाए चली आती है फिर.....असीमित। क्षणिक सुखों की प्राप्ति की मृग तृष्णा में ही अमूल्य जीवन घट रीतता चला जाता है।

'श्री की महानता' में वे बहुप्रचलित 'तीन तिगाड़ा, काम बिगाड़ा।' पर व्यंग्य का नश्तर चुभाते हुए कहती हैं कि सभी को तीन मुख्य चीजों की आवश्यकता होती है-रोटी, कपड़ा और मकान।' तीन को अशुभ मानने वालों को वे स्मरण कराती हैं कि प्रमुख हिंदु देवता तीन हैं- ब्रह्मा, विष्णु, महेश। गुण, दोष, लोक, युग, ऋण, राष्ट्र ध्वज के रंग और गाँधीजी के बंदर की संख्या भी तीन है तो तीन से क्या घबराना?

आज के युग में फेसबुक। वाट्सअप की आभासी दुनिया में रमें लोगों की कटु भर्त्सना करने की बजाय, वे उन पर मीठी चुटकियाँ लेते हुए कहती हैं, 'मैं तुम्हें (नोटीफिकेशन) भेजो, तुम मुझे भेजो।'

'तुम हमारी तारीफ के पुल बाँधो मैं तुम्हारी तारीफ के बड़े-बड़े पुल बनाऊँ। 'घूँघट' को जो मर्यादा से जोड़ते हैं उनके मापदण्ड के दोहरेपन की बखिया उन्होंने 'घूँघट' में उघाड़ने में बखूबी किया है। वे उनसे सवाल करती हैं 'सिर्फ स्त्रियाँ ही पर्दा क्यूं करें? माना कि यह मर्यादा की निशानी है। लेकिन पुरुषों के लिए भी तो कोई मर्यादा की निशानी होनी चाहिए।' पर्दे को स्त्री की लज्जा का प्रतीक मानने वालों से वे पूछती हैं-अगर पर्दा करके भी कोई बड़े-बुजुर्गों को गालियाँ निकाले, उन पर दाँत पीसे, आँख निकाले तो ऐसे पर्दे का क्या औचित्य?'

संग्रह की अंतिम रचना खुद अपने शीर्षक को सोलह आना सार्थक करते हुए बात-बात पर 'नाक का सवाल' खड़ा करने वालों की मनोवृत्ति पर जमकर शब्दों की धुनाई करती प्रतीत होती हैं। उनके अनुसार 'कोई भी स्थान, दुनिया में ऐसा नहीं है, जहाँ नाक की महिमा न गाई जाती हो। सभी रात-दिन इसी चिंता में डूबे रहते हैं कि बैठे-बिठाए नाक न कटने पाए। लगता है जिन मुद्दों से आम इंसान बेबस और परेशान रहता है, उसे अपनी व्यंग्य रचनाओं में स्थान देकर पाठकों का स्वस्थ मनोरंजन करने की दिशा में वे वरिष्ठ सरकारी सेवानिवृत्त शिक्षिका बसंती पंवार ने अपनी 'नाक का सवाल' बना लिया है। इसलिए पाठकों के मन को छूने वाली लालित्यपूर्ण सहज शैली को अपनी नाक बचाने का मोहक हथियार बनाकर हमारे आसपास की ज्वलंत समस्याओं को हमारे नाक की सीध में लाने में वे सक्षम हुई हैं।

समीक्षक : **पूर्णिमा मित्रा**
ए-59, करणी नगर, नागणेचीजी रोड, बीकानेर-3
मो: 8442038941

घोषणा-पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार-पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1. प्रकाशन संस्थान	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक	:	सौरभ स्वामी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4. प्रकाशक	:	सौरभ स्वामी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5. प्रधान सम्पादक	:	सौरभ स्वामी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, सौरभ स्वामी घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(सौरभ स्वामी) आई.ए.एस
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

बालशिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

समय बड़ा बलवान है!

विद्यार्थी जीवन, जीवन की स्वर्णिम अवस्था है। यह अवस्था ही व्यक्ति का भविष्य और उसकी नींव मजबूत करती है। इस अवस्था में प्रत्येक विद्यार्थी को समय का सदुपयोग करना चाहिए। बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता। प्रसिद्ध लेखक प्रेमचंद कहते थे ऐसी कोई घड़ी नहीं बन सकती जो गुजरे हुए घण्टे को फिर से बना दे, इसलिए समय का सदुपयोग करें। एक बच्चा विद्यार्थी जीवन में जो कुछ अर्जित करता है वही उसके भविष्य की नींव मजबूत करता है इसलिए विद्यार्थी जीवन ही एक ऐसा समय है जब हम अपने जीवन की नींव को मजबूत कर सकते हैं और अपने भविष्य को अच्छा बना सकते हैं। बच्चे की शिक्षा उसके जन्म से ही आरंभ हो जाती है। यही वह समय होता है जब उसकी संस्कारशाला प्रारंभ हो जाती है। समय अनमोल होता है इसलिए विद्यार्थियों को अपने समय के एक-एक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को अपने जीवन के हर हिस्से की दिनचर्या बना लेनी चाहिए। यह बहुत जरूरी है, क्योंकि इससे जीवन व्यवस्थित रहता है। जीवन में व्यवस्था बहुत जरूरी है।

अव्यवस्थित लोगों के कार्य कभी भी समय से पूर्ण नहीं होते। समय कभी भी किसी का इंतजार नहीं करता। जीवन का स्वर्णिम समय विद्यार्थी काल में होता है, दिनचर्या नियमित होने पर परीक्षाएँ और कठिन कार्य भी सहजता से पूरे हो जाते हैं, क्योंकि उनके लिए पूर्ण समय मिल जाता है। यह याद रखिए कि जब जीवन में समय व्यवस्थित होता है तो हर बड़ी से बड़ी बाधा और समस्या को दूर किया जा सकता है। कभी भी खाली न बैठें। हमेशा कार्य करते रहें। आप तब भी काम करना न छोड़े जब वक्त और परिस्थितियाँ विपरीत होने लगे। यकीन कीजिए जब आप परिस्थितियों और वक्त से हार नहीं मानते तो समय एवं परिस्थितियाँ और वक्त सब आपके अनुकूल हो जाती हैं। विद्यार्थी जीवन एक ऐसा समय होता है जो मनुष्य को संकल्प करना सिखाता है, बाधाओं से लड़ना सिखाता है और उनके आत्मविश्वास को प्रबल करता है। विद्यार्थी जो कद इस समय ग्रहण कर लेता है और वही उसके जीवन की पूँजी बन जाती है। स्वामी विवेकानन्द विद्यार्थी के लिए गहन बात कहते हैं- 'उठो जागो तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।' इसलिए विद्यार्थी जीवन से ही अपने लक्ष्य पर एकाग्र होकर काम करते रहिए। धीरे-धीरे यह आपकी आदत बन जाएगी। यह आदत आपको कामयाबी के शिखर तक ले जाएगी। विद्यार्थी काल ही व्यक्ति की सफलता-असफलता का मापक होता है। इसलिए इस काल में अपने समय का सही से प्रयोग करें। समय सिर्फ अकेला नहीं बदलता बल्कि जो लोग समय के साथ चलते हैं समय उन्हें भी बदल देता है और महान बनाकर विश्व के सामने खड़ा कर देता है। इसलिए यही समय है कि खुद को तराशिए जीवन में आगे बढ़िए।

-ज्योत्स्ना गुर्जर
कक्षा-VII
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कासोरिया,
बनेड़ा, भीलवाड़ा (राज.)

सूरमा नहीं विचलित होते...

सच है, विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है
सूरमा नहीं विचलित होते
क्षण एक नहीं धीरज खोते
विघ्नों को गले लगाते हैं
कांटों में राह बनाते हैं
मुँह से कभी उफ़ न कहते हैं
संकट का चरण न गहते हैं
जो आ पड़ता सब सहते हैं
उद्योग-निरत नित रहते हैं

शूलों का मूल नसाते हैं
बढ़ ख़ुद विपत्ति पर छाते हैं
है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के मग में?
ख़म ठोक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़
मानव जब ज़ोर लगाता है

पत्थर पानी बन जाता है
गुण बड़े एक से एक प्रखर
है छिपे मानवों के भीतर
मेहंदी में जैसे लाली हो
वर्तिका बीच उजियाली हो
बत्ती जो नहीं जलाता है
रोशनी नहीं वह पाता है

अरविंद कुमार, कक्षा 10
राजकीय माध्यमिक विद्यालय डेडवा जालोर
मो : 9929953861

हमारी अनुकरणीय महिलाएँ : खेल जगत में

आप सभी को खेलना बहुत पसंद है ना यदि आप में से कुछ बच्चे खेल को गंभीरतापूर्ण खेलते हैं तो **पी.वी. सिन्धु** की तरह बहुत कम उम्र में अपना और देश का नाम रोशन कर सकते हैं। पी.वी. सिन्धु का पूरा नाम पुर्सला वेंकटा सिन्धु है उनका जन्म 5 जुलाई, 1995 को तेलंगाना में हुआ। बचपन से ही सिन्धु की रुचि बैडमिंटन में थी। केवल आठ साल की उम्र से ही उन्होंने बैडमिंटन का प्रशिक्षण लेना आरंभ कर दिया था। उनकी रुचि को ध्यान में रखते हुए उनके माता-पिता ने उनका दाखिला पुलेला गोपीचंद अकादमी में करा दिया। इसके बाद तो सिंधु पढ़ाई के साथ-साथ बैडमिंटन में भी महारत हासिल करने लगी। उनका कोचिंग उनके घर से 56 किलोमीटर दूर था, लेकिन इसके बावजूद वे हमेशा समय पर पहुँचती थी। उनके मन में अपने लक्ष्य के प्रति बहुत लगन थी। उनके कोच पुलेला गोपीचंद भी यह कहते हैं कि वह कभी हार नहीं मानती और कोशिश करती रहती है। उन्होंने जूनियर एशियन बैडमिंटन चैम्पियन 2009 में रजत, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कांस्य पदक जीता और वर्ष 2010 में रजत पदक जीता। साल 2012 में उन्होंने चीन की स्वर्ण पदक विजेता को हराकर सबको चौंका दिया और अपने कॅरियर की बेस्ट रैंकिंग 15 प्राप्त की। खेलों में हार जीत लगी रहती है। पी.वी. सिन्धु भी कभी जीती कभी हारी लेकिन उन्होंने हार के आगे घुटने नहीं टेके और गिरकर वह हर बार खड़ी होती रही। तभी तो सबसे बड़ा चमत्कार कर इतिहास रच पाई। हाँ बच्चों, उन्होंने सबसे बड़ा चमत्कार वर्ष 2016 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में आयोजित ओलम्पिक खेलों में किया। उन्होंने ओलम्पिक में भारत को बैडमिंटन में रजत पदक दिलवाया। वह ऐसा करने वाली विश्व में देश की पहली महिला खिलाड़ी है। इसके लिए सरकार की ओर से अनेक इनाम दिए गए। वे भारत पेट्रोलियम में कार्यरत है। पद्म श्री अर्जुन अवॉर्ड एवं राजीव गाँधी खेल रत्न प्रमुख है। अभी हाल ही में डब्ल्यू. एफ. विश्व चैम्पियनशिप में उन्होंने एक बार फिर से रजत पदक प्राप्त किया हैं। उन्होंने अपनी लगन और कड़ी मेहनत से यह साबित किया है कि यदि हौंसले बुलंद हो तो दुनिया की कोई ताकत आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती। आप भी उनकी तरह प्रगति के पथ पर आगे बढ़िए।

राजस्थान केवल महान राजा-महाराजाओं की ही महान स्थली नहीं है। अपितु यहाँ की बेटियों ने भी अपनी उपलब्धियों एवं योग्यताओं से पूरे विश्व को अचंभित किया है। **अपूर्वी चन्देला** भी एक ऐसा ही नाम है। निशानेबाज अपूर्वी चन्देला का जन्म 4 जनवरी, 1993 को जयपुर में हुआ था। वे एक राजपूत परिवार से हैं, उनके पिता का नाम कुलदीप सिंह चंदेला है। अपूर्वी ने जयपुर के महारानी गायत्री देवी गर्ल्स स्कूल से अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की। इसके बाद आगे की शिक्षा के लिए वे दिल्ली आ गई। यहाँ दिल्ली विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र का अध्ययन किया। शिक्षा के दौरान उन्हें शूटिंग करना बहुत अच्छा लगता था। इसलिए उन्होंने शूटिंग का परीक्षण आरंभ किया। किसी भी खेल के लिए निरंतर और नियमित अभ्यास बेहद जरूरी है। अपूर्वी को जब भी समय मिलता वे अपने खेल को निखारने में लग जाती। उन्होंने बचपन में ही सोच लिया था कि उन्हें शूटिंग के खेल के माध्यम से भारत का नाम रोशन करना है। माता-पिता दोनों ने अपनी होनहार बेटी की इच्छा का सम्मान किया और उसके खेल को निखारने में बहुत मेहनत की। धीरे-धीरे अपूर्वी ने अनेक शूटिंग खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेना आरंभ कर दिया। वर्ष 2011 में अपूर्वी की प्रतिभा उभरकर सामने आई। उन्होंने जूनियर स्तर पर एशियाई निशानेबाजी चैम्पियनशिप में उच्च स्कोर बनाकर नौवां स्थान प्राप्त किया। इसके बाद उनका सफर निरंतर प्रगति की ओर बढ़ता गया। वर्ष 2012 में उन्होंने राष्ट्रीय स्पर्धा जीती। साल 2013 में ही अपूर्वी ने कांस्य पदक का खिताब जीतकर यह बता दिया कि अब उनकी अगली मंजिल स्वर्ण पदक है। वर्ष 2014 के ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में आखिर अपूर्वी ने वह मंजिल प्राप्त कर ही ली जिसकी उन्हें बचपन से प्रतीक्षा थी। ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त कर वे राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरकर सामने आई। अपूर्वी को अनेक पदकों के साथ ही उन्हें कई सम्मान भी प्राप्त हुए। उन्हें भारत का प्रतिष्ठित खेल पुरस्कार, अर्जुन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। अपूर्वी ने अपनी प्रतिभा से राजस्थान राज्य के साथ ही पूरे देश को यह संदेश दिया है। बेटियों को उड़ने के लिए आसमान दिया जाए तो कामयाबी के शिखर को छू लेते है और अपने माता-पिता के साथ ही पूरे देश का नाम रोशन करती है। आज अपूर्वी चन्देला पर हर भारतीय को गर्व है।

-विष्णु गुर्जर
कक्षा-7
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कासोरिया,
बनेड़ा, भीलवाड़ा (राज.)

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

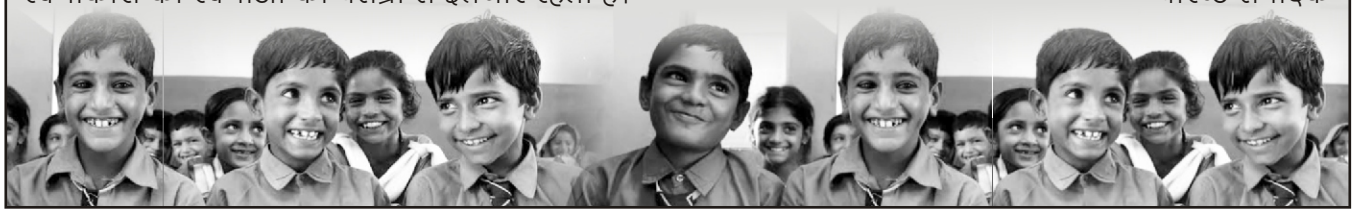

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

भामाशाहों का सम्मान एवं रैली का आयोजन

बाँसवाड़ा: राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सेमलिया पंड्या में कक्षा-कक्ष एवं लैब निर्माण हेतु दानदाताओं/ भामाशाहों का तहसील कार्यालय में तहसीलदार श्री मयूर शर्मा द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत-अभिनन्दन किया गया। प्रधानाचार्य मनोज दीक्षित ने बताया कि भामाशाह / दानदाता गाँव सेमलिया पंड्या के परोपकारी, मेहनतकश किसान श्री डायालाल/नाथू पाटीदार एवं श्री मंगलजी/धनजी पाटीदार स्वयं तो अधिक शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाए, परन्तु इनके मन में एक कसक है कि गाँव के बच्चे पढ़ लिखकर अपने देश का मान-सम्मान बढ़ाएँ।

श्री डायालाल एवं मंगलजी पाटीदार ने 2610 वर्गफीट ज़मीन विद्यालय के लिए भूमिदान करके एक अविस्मरणीय कार्य किया है। दोनों भामाशाहों का अभिनंदन सर्वश्री गजेंद्र सिंह चौहान, खुशवंत भट्ट, मोगजी पाटीदार एवं भरत पाटीदार ने भी किया। इस अवसर पर सर्वश्री नवीन भट्ट, नवनीत भट्ट, पंकज उपाध्याय एवं सुनील भट्ट भी उपस्थित थे। रा.उ.मा. विद्यालय सेमलिया पंड्या में उजियारी पंचायत हेतु वाहन रैली का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य मनोज दीक्षित ने पंचायत को उजियारी घोषित करने के लिए 18 वर्ष तक के अनामांकित छात्रों को स्कूल से जोड़ने का आह्वान किया। रैली स्कूल से पंचायत भवन एवं गाँव से होते हुए स्कूल जाकर सभा मे परिवर्तित हो गई।

बैठक का आयोजन हुआ

जालौर: स्थानीय राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लाल पोल में पीटीएम बैठक का आयोजन विद्यालय प्रबंधन एवं विकास समिति के अध्यक्ष श्री हरिराम की अध्यक्षता में आयोजित हुई । संस्थाप्रधान श्री सुरेंद्र सिंह परमार ने बताया की बैठक में सभी अभिभावकों एवं छात्र-छात्राओं से राज्य सरकार के कोविड-19 के आदेशों की पालना

सुनिश्चित करने का आग्रह किया। इस संबंध में बच्चों को मास्क लगाकर स्कूल आने, सैनेटाइजर का उपयोग करने, साबुन से हाथ धोने व सोशल डिस्टेंसिंग रखने इत्यादि सरकारी निर्देशों की पालना के संबंध में अवगत कराया गया। अभी तक हुई ऑनलाइन पढ़ाई एवं होमवर्क के बारे में अवगत कराया गया। श्री दलपत सिंह आर्य ने सभी अभिभावकों से बच्चों को समय पर स्कूल भेजने का आग्रह किया। इस मौके पर सर्वश्री श्याम सिंह, राजेश बालोत, पवनी देवी, पंखू देवी सहित बड़ी संख्या में अभिभावक उपस्थित थे।

भामाशाह द्वारा निर्मित कक्षा-कक्ष का लोकार्पण

पाली: जिले की पं.स. सोजत में रा.उ.प्रा.वि. सिंगपुरा के विद्यालय में श्रीमती जड़ाव देवी पत्नी स्व. श्री मंगलाराम मेघवाल की सद्प्रेरणा से उनके शिक्षक पुत्र श्री माणक चंद दरिवाया एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी ने एक कक्षा-कक्ष मय बरामदा जिसकी लागत 3,25,000/- (अक्षरे तीन लाख पच्चीस हजार) रुपये लगी, का निर्माण करवाकर नववर्ष 2021 के शुभागमन के प्रथम दिवस पर शिक्षा विभाग को सप्रेम भेंट किया। इस कक्षा-कक्ष में बिजली फिटिंग एवं अन्य व्यवस्था इनके सुपुत्र श्री कुलदीप राज, विजय राज एवं सम्पत राज द्वारा की गई। श्री माणकचंद दरिवाया वर्तमान में पीईईओ. एवं प्रधानाचार्य शहीद जेठनाथ रा.उ.मा. वि. खोड़िया में कार्यरत है। इन्होंने उक्त पुण्य कार्य अपने गाँव के विद्यालय विकास हेतु करके शिक्षकवृंद में प्रेरणा स्रोत बने। लोकार्पण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान

बसंत कुमार लखावत मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सोजत एवं विशिष्ठ अतिथि के रूप में श्रीमान नाहर सिंह अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्र के पीईईओ. श्री ताराचंद मेवाड़ा ने की। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक एवं अनेक ग्रामवासी मौजूद रहे। विद्यालय स्टाफ ने भामाशाह परिवार का अभिनंदन किया तथा विभाग का प्रतिनिधित्व करते हुए सीबीईओ श्रीमान लखावत ने सभी का आभार एवं भामाशाह परिवार को धन्यवाद ज्ञापित किया। किसी शिक्षा अधिकारी का विद्यालय के प्रति किया गया उक्त कार्य अनूठी मिशाल है। कार्यक्रम का संचालन श्री उत्तम चंद प्रजापत व.अ. रायरा कलां ने किया। स्थानीय विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने सभी का आभार व्यक्त किया।

भामाशाह ने जल मंदिर का निर्माण करवाया

पाली : मण्डला विद्यालय में नव निर्मित प्याऊ का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। यह प्याऊ श्री कानसिंह राजपुरोहित (पूर्व प्रबंधक, बड़ौदा राज. ग्रामीण बैंक) हाल निवासी मण्डला द्वारा उनके बड़े भाई स्वर्गीय श्री भंवरसिंह राजपुरोहित (पूर्व सरपंच एवं भामाशाह) की पुण्य स्मृति में लगभग 2.25 लाख रुपये की लागत से निर्माण करवाकर विद्यालय को सुपुर्द की गई। इस लोकार्पण समारोह में गाँव के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे जिनमें सर्वश्री दलपत सीरवी, किशोर सिंह, पुण्यसिंह, लालसिंह, रूपसिंह, जब्बरसिंह, नत्थुपुरी, कानाराम, चम्पालाल, गोमाराम, गुमानाराम आदि उपस्थित थे। प्रधानाचार्य श्री श्यामसुंदर सोनी ने भामाशाह श्री कानसिंह राजपुरोहित का आभार व्यक्त किया।

बसंत पंचमी पर्व का आयोजन किया गया।

जयपुर : संघवी हंसराज कानाजी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जीरावल में विद्या की देवी सरस्वती माता का प्राकट्योत्सव बसंत पंचमी पर्व का आयोजन किया गया। विद्यालय में स्थित सरस्वती माता मंदिर की साज सजावट की गई एवं विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। संस्थाप्रधान श्री कमल कांत शर्मा द्वारा प्रतिमा का विधिवत पूजन किया गया। कोरोना गाइड लाइन की अनुपालना कर

सभी विद्यार्थियों ने प्रतिमा को नमन कर आशीर्वाद मांगा। अध्यापक श्री मफतराम जोशी द्वारा प्रसादी की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर सर्वश्री/श्रीमती चेतराम मीना, मीठालाल मीना, मुकेश पुरोहित, जगदीश कुमार, दिनेश गर्ग, अनिता, रामराज गुर्जर, लक्ष्मी सुथार, अरविंद कुमार, कांतिलाल रावल, महेंद्र जोशी, रमेश चंद्र सुथार, रमेश धर्माणी, भादर नाथ, छगनलाल सहित स्काउट बालचर निम्बाराम, महेंद्र कुमार, आनंद सिंह, तुलसी राम, मनीष, भंवर उपस्थित रहे।

पतंग निर्माण प्रतियोगिता एवं भामाशाह सम्मान

जयपुर : माह जनवरी में महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) मानसरोवर, जयपुर के छात्र-छात्राओं हेतु विभिन्न ऑनलाइन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यथा मकर-संक्रांति के अवसर पर पतंग निर्माण प्रतियोगिता (कक्षा 1 से 8 तक), पराक्रम दिवस 23 जनवरी, 2021 पर क्विज प्रतियोगिता (कक्षा 9 से 12 तक), गणतंत्र दिवस के अवसर पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता (As Freedom Fighter) (कक्षा 1 से 3 तक), Tricolour dish making (कक्षा 4 से 5 तक) Patriotic dance प्रतियोगिता (कक्षा 6 से 8 तक) इन ऑनलाइन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त विद्यालय स्तर पर कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों हेतु विज्ञान मेले का आयोजन प्रधानाचार्य श्रीमती अनु चौधरी के मार्गदर्शन में किया गया।

श्रीमती वीना जैन ने एक Room Sanitizer Machine, 15 लीटर लिक्विड सैनेटाईजर दिया जिसकी लागत 2,500 रुपये, श्री साहिल चौधरी (Smile group) ने एक फुट ऑपरेटेड स्टैण्ड, 250 मास्क, एक थर्मल स्कैनर एवं कपड़े दिए जिनकी लागत 2,500 रुपये, महिला स्वावलंबन ग्रुप द्वारा 5 डस्टबिन, 2,000 मास्क एवं एक फुट ऑपरेटेड

स्टैण्ड दिया जिसकी लागत 3,600 रुपये, श्री योगेन्द्र शर्मा द्वारा एक वॉटर प्योरीफायर दिया गया जिसकी लागत 2,500 रुपये, श्रीमती दीप्ती ज्यानी द्वारा 50 मास्क दिए गए एवं 50 मास्क श्रीमती विम्मी शर्मा द्वारा दिए गए। इस अवसर पर संस्थाप्रधान द्वारा भामाशाहों का आभार जताते हुए सम्मानित किया।

कुचोली में स्काउट्स ने सड़क सुरक्षा की दी जानकारी

कुंभलगढ़– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुचोली, कुंभलगढ़ में राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड एवं रोड सेफ्टी क्लब के तत्वावधान सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट श्री राकेश टॉक के नेतृत्व में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह 2021 के अंतिम दिवस पर कुचोली में स्काउट्स ने सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा के बारे में जन सामान्य को सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी दी। सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट व शारीरिक शिक्षक राकेश टॉक ने बताया कि राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के तहत आयोजित सेमिनार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री मोहनलाल विश्नोई बीट अधिकारी ओडा, कुंभलगढ़, विशिष्ट अतिथि ग्राम पंचायत कुचोली की सरपंच निर्मला देवी भील व कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यवाहक पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी श्री गणेश लाल मेघवाल ने की। बीट अधिकारी ने सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा के बारे में अपनी वार्ता के द्वारा स्काउट्स को बताया कि वह अपनी बचत की राशि से एक अच्छी क्वालिटी का हेलमेट खरीद कर अपने परिवार में टू व्हीलर चलाने वाले सदस्य को भेंट करें ताकि वह उसका उपयोग कर सकें, उन्होंने यह भी कहा की नौजवान रोड पर किसी प्रकार की प्रतिस्पर्धा नहीं करे पर पढ़ाई में प्रतिस्पर्धा जरूर करें। स्काउट्स यातायात नियमों की जानकारी प्राप्त कर परिवार जन, अपने मोहल्ले और अपने गाँव के लोगों को जागरूक करने का कार्य बखूबी करें। सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट श्री राकेश टॉक ने अपनी वार्ता में सड़क सुरक्षा के नियम व प्रोजेक्टर के माध्यम से सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा की जानकारी देते हुए लाईसेंस बनवाने की प्रक्रिया को समझाया। बीट अधिकारी श्री मोहन लाल विश्नोई ने सड़क सुरक्षा रैली को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। रेली मुख्य गाँव, बस स्टैंड होती हुई मुख्य चौराहा पर आकर संपन हुई। रैली में नारा लिखी तख्तियां, पोस्टर, फ्लेक्स,सड़क सुरक्षा गीत के माध्यम से जनजाग्रति लाने का प्रयास किया। इस अवसर पर स्काउट्स द्वारा सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु आमजन को यातायात नियमों के प्रति अधिकाधिक जागरूक करने का प्रयास किया गया। साथ ही मुख्य मार्ग पर हेलमेट, सीटबेल्ट तथा मास्क नहीं लगाने वाले वाहन चालकों को स्काउट्स द्वारा गुलाब के फूल भेंट कर व मास्क प्रदान कर आगे से सड़क सुरक्षा नियमों की पालना करने का अनुरोध किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में सहायक स्काउटर सर्वश्री दल्ला राम भील, समोज कुमार, पुष्पा शर्मा, गिरजा शंकर भील, गोपाल लाल भील, राजकुमार मीणा, अंदा राम भील, पंचायत सहायक कमला प्रजापत, कनिष्ठ सहायक मन्नालाल भील व स्काउट्स उपस्थित थे।

'राउंड टेबल इण्डिया ट्रस्ट' द्वारा कक्षा-कक्षों का निर्माण करवाया गया

उदयपुर : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शोभागपुरा उदयपुर की प्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता धनकड़ की प्रेरणा से उदयपुर यूनाइटेड राउंड टेबल इंडिया ट्रस्ट ने शाला परिसर में विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर, पंखे, ट्यूबलाइट व रंग रोगन सहित चार कक्षा-कक्षों, शौचालय ब्लॉक व मनोरंजन के लिए झूले, फिसलपट्टी आदि का निर्माण करवाकर 29 जनवरी 2021 को लोकार्पण किया। ज्ञातव्य रहे कि राउंड टेबल इंडिया ट्रस्ट द्वारा विगत सत्र जुलाई 2020 में भी इस विद्यालय में 23 लाख रुपये की लागत से चार कक्षा-कक्षों का निर्माण करवाकर विद्यालय को सुपुर्द किए थे। कोविड गाइड लाइन की पालना करते हुए आयोजित यह सादा समारोह राउंड टेबल इंडिया के नेशनल प्रेसिडेंट प्रियेश शाह के मुख्य आतिथ्य, शिक्षा विभाग से संयुक्त निदेशक प्रतिनिधि के रूप में अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी पूनम सक्सेना की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्रियेश शाह ने अपने उद्बोधन में कहा कि राउंड टेबल इंडिया ट्रस्ट द्वारा राजकीय विद्यालयों में भौतिक संसाधनों के निर्माण के कार्य जारी रखे जाएँगे जिससे विद्यार्थियों के लिए शिक्षण में कठिनाई न हो। विशिष्ट अतिथि के रूप में राउंड टेबल इंडिया के नेशनल प्रोजेक्ट नंदेश सांचेति, राजस्थान एरिया चैयरमेन जोहर, एरिया सेक्रेटरी वरुण मुर्डिया, अंकित मिश्रा, आदित्य जयपुरिया, यूयूआरटी 234 आदित्य सोमानी, सरपंच शोभागपुरा जशोदा डांगी, पं.स. इन्दिरा डांगी, उप सरपंच भूपेन्द्र व अन्य पदाधिकारी गण मौजूद रहे। कार्यक्रम से पूर्व शोभागपुरा गाँव की ओर से भगवानजी पटेल, पुरीलाल, तोलाराम व समाजसेवी रमेश ने अतिथियों में पुरुष वर्ग का पारंपरिक तरीके से साफा पहनाकर व महिला वर्ग को

शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संयोजन स्मिता राठौड़ व मोहम्मद सलीम खान तथा धन्यवाद शारीरिक शिक्षक कैलाशचंद्र ने किया।

मंच एवं सरस्वती मन्दिर का लोकार्पण किया

जयपुरः PEEO/प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. विद्यालय मंडा भिंडा, पं.स. गोविंदगढ़, जिला जयपुर श्रीमती मंजू सोनी ने अपने माता-पिता की स्मृति में PEEO मंढ़ाभिंडा के अधीनस्थ राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दौलतपुरा, गोविंदगढ़, जयपुर के प्रांगण में निर्मित स्टेज 15X15 एवं माँ शारदे मंदिर का लोकार्पण एवं मूर्ति स्थापना समारोह बसंत पंचमी, दिनांक 16 फरवरी, 2021 मंगलवार के शुभ अवसर पर संपन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि चौमूँ एसडीएम श्री अभिषेक जी सुराणा, विशिष्ट अतिथि डिप्टी कमिश्नर जयपुर श्रीमती सोनिया महाजन, गोविंदगढ़ डीवाईएसपी श्री संदीप जी सारस्वत, विकास अधिकारी गोविंदगढ़ श्री अनिल कुमार जी सोनी, जीएसटी सुप्रिडेंट श्री नेमीचंद जी सोनी, नव चयनित एसआई कुमारी कृतिका सोनी रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंडा भिंडा श्रीमती मंजू सोनी ने की। ग्रामवासियों ने भामाशाह-प्रधानाचार्य श्रीमती मंजू हरीश सोनी तथा आमंत्रित अतिथियों का राजस्थानी परंपरा से साफा एवं शॉल पहनाकर स्वागत किया एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए। कार्यक्रम के समापन के उपरांत श्रीमती मंजू हरीश सोनी परिवार ने सभी आए हुए मेहमानों व गणमान्य नागरिकों एवं विद्यार्थियों को पंगत प्रसादी कराई। कार्यक्रम अति उत्साहवर्धक एवं प्रेरणास्पद रहा।

रीछड़ा (भीलवाड़ा) में वार्षिक उत्सव कार्यक्रम सम्पन्न

भीलवाड़ा : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रीछड़ा (भीलवाड़ा) में वार्षिक उत्सव कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राम लाल जाट पूर्व मंत्री राजस्थान सरकार, चेयरमेन भीलवाड़ा डेयरी एवं विधायक माण्डल (भीलवाड़ा), अध्यक्षता श्री प्रमोद तिवाड़ी कल्याणम संस्थान, भीलवाड़ा, विशिष्ठ अतिथि श्री भैरूलाल सुवालका सरपंच ग्राम पंचायत रीछड़ा (भीलवाड़ा) थे। वार्षिक उत्सव कार्यक्रम प्रातः 10 बजे से कवि सम्मेलन के साथ शुरू हुआ। जिसमें ख्याति प्राप्त कवियों ने कविता पाठ के माध्यम से छात्रों को 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ', कोरोना भगाओ एवं देशभक्ति से

ओत-प्रोत कविताओं का वाचन कर अभिभावकों का मनोरंजन किया। दोपहर 12.15 से भामाशाहों का सम्मान, पूर्व छात्रों का सम्मान के साथ-साथ प्रतिभावान छात्रों को प्रशस्ति पत्र, मेडल एवं पुरस्कार देकर सम्मान किया गया। विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रकार की स्टालें लगाई गई। जिसमें चाट पकौड़ी, पानी पतासे, भेलपुरी, आइसक्रीम का अतिथियों एवं अभिभावकों व छात्र-छात्राओं ने लुत्फ उठाया। कल्याणम संस्थान भीलवाड़ा द्वारा मेधावी छात्र-छात्राओं को 12 टेबलेट को वितरित करते हुए संस्था सचिव श्री प्रमोद तिवाड़ी ने कहा कि बालिकाएँ शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं टेबलेट का उपयोग पढ़ने में करें। टेबलेट में शिक्षाप्रद एप के साथ-साथ शिक्षा विभाग की पुस्तकें, मॉडल पेपर अपलोड कर रखे है।

भामाशाहों द्वारा बढ़-चढ़कर सहयोग दिया गया।

1. कल्याणम् संस्थान, भीलवाड़ा, टेबलेट कुल 12, रुपये 1,20,000/-
2. श्री भंवर सिंह राजावत, ट्यूबवेल की घोषणा, रुपये 1,00,000/-
3. श्री भंवर सिंह राणावत, पुरस्कार सामग्री, रुपये 11000/-
4. डॉ. राजेश सुवालका, नल फिटिंग, रुपये 26000/-
5. श्री भैरूलाल सुवालका, 5 टेबल स्टूल, रुपये 5000/-
6. श्री संजु गुजर, 5 टेबल स्टूल, रुपये 5000/-
7. श्री दिनेश तिवाडी, 5 टेबल स्टूल, रुपये 5000/-
8. श्रीमती बीना व्यास, ऑफिस चेयर 4, रुपये 8000/-
9. श्रीमती सुशीला पंवार, ऑफिस चेयर 2, रुपये 2000/-
10. श्री हंसराज चौधरी, श्री नवग्रह आश्रम, रायला, ट्री गार्ड 50, रुपये 25000/-
11. श्री बंशीलाल कोली, सरस्वती मन्दिर बनाकर दिया, रुपये 20,000/-

सभी भामाशाहो का सम्मान किया गया। संस्था प्रधान डॉ. रामेश्वर प्रसाद जीनगर ने सभी का आभार व्यक्त किया। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। श्री श्याम लाल खटीक प्रधानाचार्य राजेन्द्र मार्ग, श्री राजेश पारीक प्रधानाचार्य पालडी, श्री गणेश लाल भण्डोवरा, प्रधानाचार्य सिदड़ीयास, श्री गोपाल लाल सुधार प्रधानाचार्य चमनपुरा सहित पीईईओ क्षेत्र के सभी प्रधानाध्यापक उपस्थित थे।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

हड्डियों की मजबूती और हृदय रोगों में भी फायदेमंद सोयाबीन

सोयाबीन में अधिक मात्रा में प्रोटीन, फाइबर, विटामिन ए, बी, के, फाइटो-एस्ट्रोजन्स, एमिनो एसिड आदि मिलते हैं। ये हड्डियों की मजबूती, हृदय रोगों से बचाव के साथ इम्युनिटी बढ़ाने में मददगार होते हैं। कैल्शियम, मैग्नीशियम, कॉपर, सेलेनियम, जिंक आदि हड्डियों को मजबूत बनाते हैं। महिलाओं में ओस्टियोपोरोसिस का खतरा घटता है। इसमें मिलने वाले विटामिन बी कॉम्प्लेक्स और फोलिक एसिड से मानसिक रोगों से बचाव होता है। ब्लड प्रेशर भी नियंत्रित रहता है। सोयाबीन मिलने वाला प्रोटीन डायबिटीज को भी नियंत्रित रखने में मदद करता है। इसमें मौजूद फाइबर पेट से जुड़े कोलन और कोलोरेक्टल कैंसर से भी बचाव करता है।

शुगर व हृदय रोगों से बचाती लहसुन की चाय

लहसुन में एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल के साथ कई गुण होते हैं। इसकी चाय पीने से शरीर का शुगर लेवल और कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रहता है। यह डायबिटीज और हृदय रोगियों के लिए फायदेमंद होता है। पाचन को ठीक करने के साथ ही वजन नियंत्रित रहता है। इसकी चाय बनाने के लिए दो कली लहसुन को कूट लें और आधा गिलास पानी में कालीमिर्च और एक चुटकी सेंधा नमक डालकर पाँच मिनट तक चाय की तरह से उबालें।

एंटी फ्राइब्रोटिक दवा से दूर हो रही तकलीफ

बीकानेर : कोरोना संक्रमित तो सामने आने बंद हो गए है। परन्तु जो लोग कोरोना की चपेट में आए और वायरस ने उनके फेफड़ों को क्षतिग्रस्त किया। वह अभी परेशानी से धीरे-धीरे उभर रहे हैं। तीन महीने पहले ऐसे मरीजों के सामने आने पर बीकानेर के एसपी मेडिकल कॉलेज के श्वास रोग विभाग ने एन्टी फ्राइब्रोटिक दवा शुरू की। इसके सकारात्मक परिणाम पर तीन महीने तक नजर रखी। मरीजों के 80 फीसदी तक रिकवर होना सामने आया है। आमतौर पर मरीज के फेफड़ों के उत्तक क्षतिग्रस्त होने पर दी जाने वाली निन्टाडेनिब और परफिमीडोन दवा पोस्ट कोविड निमोनिया मरीजों पर असरकारक साबित हो रही है। बीकानेर के एसपी मेडिकल कॉलेज से सम्बद्ध टीबी और श्वास रोग विभाग ने अक्टूबर में इन दवाओं को मरीजों को देकर सकारात्मक परिणाम मिलने पर आईसीएमआर को पत्र भेजकर अवगत कराया था। अब तीन महीने का कोर्स लेकर 1500 मरीज ठीक हुए है। इसके बाद श्वास की तकलीफ को कम करने वाले अन्य उपाय इन मरीजों को देने शुरू किए है। जिनमें योग और व्यायाम शामिल है।

सियाचिन में लेह से खाना पहुँचाएगा ड्रोन, 2022 में भरेगा अपनी पहली उड़ान

हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड, एक ऐसा भी ड्रोन तैयार कर रहा है जो कि एक बार उड़ान भरने के बाद 90 दिन तक लगातार हवा में रह सकता है। वह भी 65,000 फीट की ऊँचाई पर। एचएएल के साथ मिलकर इसे न्यू स्पेस रिसर्च और टेक्नालॉजी स्टार्टअप तैयार कर रहा है। बताया जा रहा है कि इसे अगले तीन से पाँच सालों में भारतीय वायुसेना के लिए उपलब्ध करा दिया जाएगा। सियाचिन की दुर्गम पहाड़ी हो या फिर अरुणाचल प्रदेश का घना जंगल। भारतीय सेना को ऊँचाई वाले स्थानों पर संसाधन पहुँचाने के लिए चीता हैलीकॉप्टर उड़ाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) ऐसा हैलीकॉप्टर ड्रोन तैयार कर रही है, जो न केवल 30 किलोग्राम संसाधन ले जाने में सक्षम है, बल्कि धरती से साढ़े पाँच किमी ऊँचाई तक उड़ान भर सकता है। इससे सीमाई इलाकों में दुश्मन द्वारा जीपीएस ब्लॉक करके ड्रोन गिराने की कार्रवाई की जा सकती है।

नासा ने आइएसएस में पुरानी बैटरी हटाकर लगाई लिथियम-आयन बैटरी

वॉशिंगटन– अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) में कई सालों के दौरान 13 अंतरिक्ष यात्रियों की 14 स्पेस वॉक के बाद आखिरकार वहाँ प्राइमरी पॉवर सिस्टम में लगी निकल-हाइड्रोजन बैटरियों को हटा लिथियम-आयन की नई बैटरियाँ लगा दी गईं। अमरीकी स्पेस एजेंसी नासा ने बताया कि अब आइएसएस के पॉवर सिस्टम को पूरी तरह अपग्रेड कर दिया गया है। इस अपग्रेडेशन से आइएसस शोध एवं तकनीकी विकास के कार्यक्रम में अधिक क्षमता से कार्य कर सकेगा। आइएसएस में बैटरी बदलने का काम बहुत मुश्किल था। क्योंकि हर बैटरी करीब एक मीटर लंबी है और उसका वजन 180 किलोग्राम है। इन बैटरी को बदलने का काम दिसम्बर 2016 में शुरू हुआ था। नासा को लिथियम आयन की नई बैटरियाँ बोइंग कम्पनी ने उपलब्ध कराई।

पाकिस्तानी ड्रोन से निपटने के लिए आई एंटी ड्रोन गन

बेंगलूरु– राजस्थान में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर ड्रोन से जासूसी करने का मामला हो पंजाब में नशीले पदार्थ की तस्करी। जम्मू में घुसपैठ की बात या फिर कश्मीर में आतंकियों की मदद में हथियार पहुँचाने की कवायद। दुश्मन देश के लिए अब यह सब करना आसान नहीं होगा। स्वदेशी कम्पनी ने ऐसे हवाई दुश्मनों की सुरक्षा के लिए ऐसी गन तैयार की है, जिसके इशारे पर दुश्मन के ड्रोन घुटने टेक देंगे। इतना ही नहीं, इस गन से इन्हें मारा भी जा सकता है। इस गन को एयर शो में प्रदर्शित किया गया। गन को तैयार करने वाले क्राउन ग्रुप के सीईओ बिग्रेडियर (रिटायर्ड) राम छिल्लर बताते हैं कि अब फाइटर और मिसाइल अगर ड्रोन या यूएवी को मारते हैं तो काफी महंगा पड़ेगा। ऐसे में एंटी गन बेहतर विकल्प है। इसे कहीं पर ले जाया जा सकता है। यह मात्र तीन किलो वजनी है। इसे टांगकर सीमा पर आराम से पेट्रोलिंग की जा सकती है।

सरकारी स्कूल की छात्रा ने बनाया वाटर सेविंग ड्रिप सिस्टम

बीकानेर : जिलास्तरीय विज्ञान मेले में महारानी गर्ल्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल की कक्षा 6 में पढ़ने वाली छात्रा रितिका सोनी ने विज्ञान अध्यापिका बिन्दु गुप्ता के निर्देशन में पर्यावरण अनुकूल सामग्री के तहत पानी और समय को बचाने के लिए एक युक्ति बनाई है। इसमें पौधों को पानी देने का प्रबंधन कर सकते हैं। नल के पास एक ऑटोमेटिक टाइमर लगाया गया है, जिसको ड्रिप सिस्टम से जोड़ा गया है। निश्चित समय तक बूँद-बूँद पानी पौधों को मिलता रहेगा। इससे समय और पानी दोनों की बचत होगी। सिस्टम के तहत स्वतः ही पानी समय सूचक यंत्र द्वारा आना बंद हो जाएगा। इस प्रोजेक्ट को पूरा करने में महारानी स्कूल की अध्यापिका बिंदु गुप्ता की अहम भूमिका रही। साथ ही रितिक की बड़ी बहिन बिंदिया सोनी जो 9वीं कक्षा में पढ़ती हैं उसका भी सहयोग रहा। उल्लेखनीय है कि इससे पहले भी रितिक सोनी को इंस्पायर अवार्ड में चयन हो चुका है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

जयपुर

रा. दरबार उ.मा.वि. सांभरलेक में श्री टीकमचंद मालाकर (प्रधानाचार्य) द्वारा 1,51,000 रुपये की लागत से ऑफिस बरामदे का जीर्णोद्धार किया गया, श्रीमती इन्दू सक्सेना (व्याख्याता) से 7,000 रुपये नकद प्राप्त व 22,000 रुपये की संदर्भ पुस्तकें प्राप्त, श्री जितेन्द्र वर्मा (व्याख्याता) द्वारा 25,000 रुपये की लागत से चित्रकला कक्ष का जीर्णोद्धार किया गया, श्रीमती राजनिशा सैनी (व्याख्याता) से एक सोफा सेट प्राप्त जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्रीमती चन्दा शर्मा (अध्यापिका) से 5,100 रुपये नकद, 8,400 रुपये की कुर्सियाँ, 1,000 रुपये वाटर केम्पर, श्री शिम्भूदयाल यादव (व्याख्याता) से 5,100 रुपये नकद, 4,000 रुपये के पौधे, 2,000 रुपये थर्मल स्केनर, श्री सुरेन्द्र सिंह (व्यायाता) से कुर्सियाँ प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्रीमती लता मानवानी (अध्यापिका) से 11,000 रुपये प्राप्त, श्री शैलेष कुमार गोयल (व्याख्याता) से 5,100 रुपये नकद, 3,300 रुपये ऑफिस सामग्री एवं 1,600 रुपये की सेनेटाइजर स्टेण्ड, श्री जितेन्द्र वर्मा (वरिष्ठ अध्यापक) से 8,000 रुपये की इलेक्ट्रॉनिक बेल, श्री जीवणराम यादव (वरिष्ठ अध्यापक) द्वारा 7,200 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल में जमा, श्रीमती तारा जोशी (व्याख्याता) द्वारा 5,100 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल में और 2,000 रुपये ऑफिस सौन्दर्यकरण में खर्च, श्रीमती सुशीला तंवर (क. सहायक) से 5,600 रुपये की कुर्सियाँ प्राप्त, सर्वश्री नेमीचंद कुमावत (व्याख्याता), सोहन यादव (व्याख्याता) श्रीमती लक्ष्मी वाष्णेय (वरिष्ठ अध्यापिका) प्रत्येक से 5,100-5,100 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल जमा कराए। सर्वश्री शंकरलाल मीणा (व्याख्याता), पुष्करण सैनी (वरिष्ठ अध्यापक) जगन्नाथ प्रसाद ढेनवाल (अध्यापक), गुरु प्रसाद बलाई (प्रयोगशाला) गणेश राम जाट (प्रयोगशाला सा.) प्रत्येक से 5,100-5,100 रुपये नकद प्राप्त, श्रीमती अंजना शर्मा (व्याख्याता) से 5,000 नकद प्राप्त, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत (शा. शि.) द्वारा 3,100 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल में जमा कराए, सर्वश्री मोहन लाल देवत (वरिष्ठ अध्यापक), कमलेश कुमावत (वरिष्ठ अध्यापक), सुण्डाराम कुमावत (अध्यापक), शिवकरण जाट (अध्यापक) प्रत्येक से 2,500-2,500 रुपये प्राप्त, श्री गजानंद कुमावत (व्याख्याता) द्वारा 2,100 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल में जमा कराए, सर्वश्री राजेश कुमार (वरिष्ठ अध्यापक), बालचंद कुमावत (वरिष्ठ सहायक) प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये नकद प्राप्त, श्री खिवराज वर्मा (व्याख्याता) से 5,100 रुपये नकद प्राप्त। सर्वश्री अनिल माहेश्वरी, नन्द किशोर गढ़वाल, हरीश सैनी, सुधीर पारीक, मोहर चन्द जाट, सभी विद्यालयों के पूर्व सेवारत कर्मचारी से प्रधानाचार्य टेबल हेतु 21,000 रुपये प्राप्त हुए, श्रीमती संगीता पारीक (अध्यापिका) से ट्री-गार्ड प्राप्त जिसकी लागत 5,100 रुपये, श्रीमती रूकमणी देवी (अध्यापिका) से

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

टी गार्ड प्राप्त जिसकी लागत 2,100 रुपये, श्री सत्यनारायण सैनी (पूर्व प्रधानाचार्य) से 51,000 रुपये प्राप्त, श्री जगन प्रसाद जौहरी के 96वें जन्मदिवस पर 21,000 रुपये प्राप्त, श्री रामनिवास, सत्यनारायण अग्रवाल के 90वें जन्मदिवस पर 11,111 रुपये प्राप्त, श्री शेरसिंह बारेठ (पूर्व व्याख्याता) से 11,000 रुपये प्राप्त, श्री धर्मचन्द्र कुमावत से सरस्वती मन्दिर में जड़ाई कार्य हेतु 10,000 रुपये प्राप्त। **महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) मानसरोवर जयपुर** को श्रीमती वीना जैन से एक Room सैनिटाइजर मशीन 15 लीटर लिक्विड सैनेटाइजर दिया जिसकी लागत 2,500 रुपये, श्री साहिल चौधरी ने एक फुट ऑपरेटेड स्टैण्ड, 250 मास्क एक थर्मल स्कैनर एवं कपड़े दिए जिसकी लागत 2,500 रुपये, महिला स्वावलंबन ग्रुप द्वारा 5 डस्टबिन, 2000 मास्क एवं एक फुट ऑपरेटेड स्टैण्ड दिया जिसकी लागत 3,600 रुपये, श्री योगेन्द्र शर्मा द्वारा एक वाटर प्योरीफायर सप्रेम भेंट जिसकी लागत 2,500 रुपये, श्रीमती दीप्ति ज्यानी से 50 मास्क एवं श्रीमती विम्मी शर्मा से 50 मास्क प्राप्त हुए।

हमारे भामाशाह

उदयपुर

रा.उ.मा.वि., वल्लभनगर को श्री अनिल कुमार वाजपेयी जी ने अपने स्व. पिता श्री अवध बिहारी वाजपेयी के नाम से तीनों संकाय के 12वीं कक्षा के सर्वोच्च अंक लाने वाले छात्र-छात्राओं प्रत्येक को 2,500-2,500 रुपये प्रति वर्ष एवं 10वीं बोर्ड में संस्कृत में सर्वोच्च अंक लाने वाले विद्यार्थी को प्रतिवर्ष 1,000 रुपये प्रोत्साहन राशि प्रदान करते है, श्री संपतलाल लौहार (उप मुख्य परियोजना प्रबंधक) से 11,000 रुपये सी.सी.टी.वी. कैमरे तथा 5,000 रुपये सर्वोत्तम अंक लाने वाले विद्यार्थियों को दिए, समाजसेवी तथा पूर्व सरपंच श्री कालू लाल जी गुर्जर ने विद्यालय में सीसीटीवी. कैमरे लगाने के लिए 11,000 रुपये आर्थिक सहयोग दिया।

राजसमंद

रा.उ.मा.वि. सुन्दरचा को श्रीमती निर्मला धोबी (अध्यापिका) विद्यालय को प्रिंटर क्रय हेतु 10,000 रुपये भेंट की गई, श्री कपिल मेनारिया (बी.टेक. गोल्ड मेडलिस्ट) द्वारा विद्यालय विकास हेतु 10,000 की राशि विद्यालय को भेंट की गई, श्री राजूलाल बगोरा द्वारा 13,000 रुपये की स्वचालित विद्युत घंटी विद्यालय में भेंट की गई, श्री भैरूलाल भण्डारी से विद्यालय विकास हेतु 21,000 रुपये विद्यालय को दिए, श्री प्रेमशंकर बागोरा ने फर्नीचर क्रय हेतु 25,000 रुपये की राशि विद्यालय को भेंट की।

पाली

रा.उ.मा.वि. खोडिया निवासी सिंगपुरा पं.स. सोजत में श्री माणक चन्द मेघवाल द्वारा 3,25,000 रुपये की लागत से एक कक्षा-कक्ष मय बरामदा एवं बिजली व्यवस्था करवाकर सप्रेम भेंट।

नागौर

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समग्र शिक्षा नागौर को सेठ श्री नेमीचंद तोषनीवाल, सीता देवी तोषनीवाल चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता द्वारा एक कम्प्यूटर सेट डेस्कटॉप जिसकी लागत 20,900 रुपये और एक प्रिन्टर जिसकी लागत 8,800 रुपये कार्यालय को सप्रेम भेंट।

भरतपुर

रा.उ.मा.वि. गुलपाडा तह. नगर में श्री लुपिन द्वारा शौचालय निर्माण व मरम्मत का कार्य करवाया गया जिसकी लागत 1,53,000 रुपये, श्री जीवन लाल भारती द्वारा पेयजल हेतु बोर की व्यवस्था कराई जिसकी लागत 70,000 रुपये, जनसहयोग से 10 किलोवाट स्टेपलाइजर विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्रीमती सुनीता गोयल से 04 कुर्सी प्लास्टिक प्राप्त जिसकी लागत 2,800 रुपये, जनसहयोग द्वारा 05 बरामदों का कोटा स्टोन व सौंदर्यकरण जिसकी लागत 2,00,000 रुपये, सर्वश्री भरतलाल गोयल, जुहरू खान, कैलाश चन्द गर्ग, दामोदर लाल गर्ग, इदरीश खान द्वारा एक कमरे का बरामदा (26X10) का निर्माण करवाया गया जिसकी प्रत्येक की लागत 1,00,000-1,00,000 रुपये, सर्वश्री खेमचंद गर्ग, महेश चन्द गर्ग, दिनेश चन्द गर्ग, सामन्ता राम गर्ग, प्यारे लाल भारती द्वारा एक-एक कमरे का कोटा स्टोन (18X20) का निर्माण करवाया गया जिसका प्रत्येक की लागत 40,000-40,000 रुपये, श्री टीकमचन्द गुप्ता और रामसहाय यादव द्वारा 50,000-50,000 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल में जमा कराए, श्री गणेश कुमार शर्मा द्वारा 20,000 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल में जमा कराए, श्री ल्यूपिन फाउण्डेशन भरतपुर द्वारा रंग रोगन एवं विकास हेतु 1,90,000 रुपये, कक्षा 12 के विद्यार्थी द्वारा एक अलमारी विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्री यादराम यादव द्वारा विद्यालय में विद्यार्थी हेतु गणवेश जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्री बृजभूषण शर्मा द्वारा विद्यालय में विद्यार्थी हेतु गणवेश जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री योगेश कम्वाल से एक सोफा सेट प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, श्री गायत्री यादव, रोशन लाल, हीरालाल से एक आहूजा सेट प्राप्त जिसकी लागत 12,500 रुपये, जनसहयोग से ट्री गार्ड एवं वृक्षारोपण जिस पर कुल खर्चा आया 40,000 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मूण्डसर जिला-बीकानेर में स्व. श्री लाखाराम चौधरी व श्रीमती जड़ाव देवी की पुण्यस्मृति में उनके पुत्रों श्री बेगाराम मूण्ड, श्री रामेश्वरलाल चौधरी (प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. मूण्डसर), श्री सुजाराम मूण्ड एवं पौत्र श्री मनोज कुमार मूण्ड द्वारा निर्मित दो कमरों मय बरामदा के लोकार्पण के अवसर पर संबोधित करते श्रीमान रामेश्वर डूडी पूर्व नेता प्रतिपक्ष, श्रीमान सौरभ स्वामी निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान एवं कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि गण, ग्रामीण जन, शाला स्टाफ व विद्यार्थी गण।

बाल शिविरा

नाम-रेखा पंवार व साहिना बानू
कक्षा-10, रा.उ.मा.वि.कसोरिया

नाम-रीना कुमारी भील
कक्षा-10, रा.उ.मा.वि. बोरदा

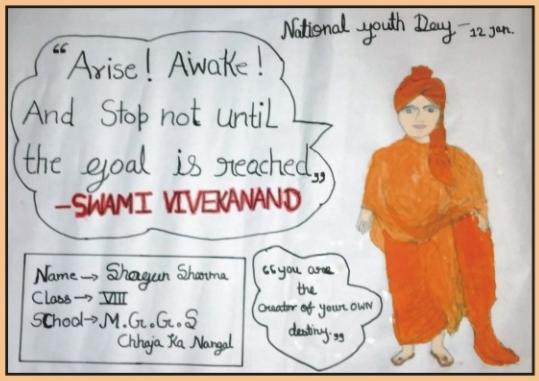

नाम-सगुन शर्मा, कक्षा-12,
महात्मा गांधी रा.वि.छजा का नागल

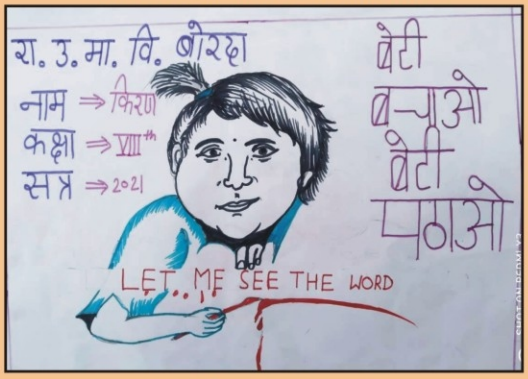

नाम-किरण, कक्षा-10,
रा.उ.मा.विद्यालय बोरदा

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● मार्च, 2021 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 मार्च, 2021 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्रवीथिका : मार्च, 2021

राज्य स्तरीय बालिका पुरस्कार वितरण समारोह

बालिका शिक्षा फाउण्डेशन राजस्थान, जयपुर द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय बालिका पुरस्कार समारोह (सत्र :2020-21) में मेधावी बालिकाओं को पुरस्कृत एवं संबोधित करते माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमान् गोविन्द सिंह डोटासरा, प्रमुख शासन सचिव-शिक्षा श्रीमती अपर्णा अरोरा, राज्य परियोजना निदेशक-समसा डॉ. भंवर लाल, निदेशक-स्टेट ओपन स्कूल श्रीमती मंजू एवं सचिव बालिका शिक्षा फाउण्डेशन श्री महेश कुमार। कार्यक्रम के दौरान माननीय शिक्षा मंत्री महोदय शिविरा पत्रिका फरवरी-2021 के अंक का अवलोकन करते हुए साथ में उपस्थित उप सचिव बालिका शिक्षा फाउण्डेशन श्री तेजपाल मूंड।

राजकीय गुरु नानक भवन संस्थान आदर्श नगर जयपुर में राजस्थान विधानसभा कैंप के दौरान वृक्षारोपण करते हुए अधिकारीगण।

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय परिसर बीकानेर में बसन्त पंचमी के अवसर पर पूजन करते समस्त अधिकारी एवं कार्मिक।